दुनिया के मज़दूरों, एक हो!

आने वाले इंक़लाबी तूफ़ानों के लिये तैयारी करें!

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के पांचवें महाअधिवेशन

में पेश की गयी रिपोर्ट

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी
नई दिल्ली www.cgpi.org

प्रथम प्रकाशन अक्तूबर, 2017

इस दस्तावेज़ के किसी भी अंश को प्रकाशक की अनुमति से और स्रोतों को उचित मान्यता देते हुए, अनुवाद किया जा सकता है या पुनः प्रकाशित किया जा सकता है।

मूल्य : 100 रुपये

प्रकाशक :
हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी
ई–392, संजय कालोनी, ओखला फेस–2
नई दिल्ली–110020
ईमेल : info@cgpi.org
वेब : www.cgpi.org

वितरक :
लोक आवाज़ पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
ई–392, संजय कालोनी, ओखला फेस–2
नई दिल्ली–110020
ईमेल : lokawaz@gmail.com
फोन : +91 9868811998, 9810167911

प्रकाशक की सूचना

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के महासचिव कामरेड लाल सिंह द्वारा, पार्टी की केन्द्रीय समिति की ओर से, हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के पांचवें महाअधिवेशन को यह रिपोर्ट पेश की गई। महाअधिवेशन में इस पर चर्चा की गयी और इसे अपनाया गया। पांचवें महाअधिवेशन के फैसले के अनुसार, इस रिपोर्ट को सम्पादकीय शोधन के साथ, प्रकाशित किया जा रहा है।

इस प्रकाशन में महाअधिवेशन की कार्यवाहियों का संक्षिप्त विवरण और महासचिव की प्रारंभिक टिप्पणियों के कुछ अंश भी शामिल हैं, जिन्हें केन्द्रीय समिति ने प्रकाशन के लिए अनुमोदित किया है।

विषय सूची

संक्षिप्त रूप ix

कार्यवाहियों का संक्षिप्त विवरण 1

प्रारंभिक टिप्पणियां 7

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के पांचवें महाअधिवेशन को पेश की गई रिपोर्ट 9

विश्व आर्थिक संकट और पूंजीवादी राज्यों की प्रतिक्रिया 9

शोषकों और शोषितों के बीच अंतर्विरोध 33

साम्राज्यवाद और राष्ट्रों के बीच अंतर्विरोध 46

अंतर–इज़ारेदार और अंतर–साम्राज्यवादी अंतर्विरोध 56

अमरीकी साम्राज्यवाद की रणनीति 75

हिन्दोस्तानी शासक वर्ग की रणनीति 90

विश्व क्रांति की लहर 135

हिन्दोस्तान की क्रांति 144

हमारी पार्टी का काम 158

कार्य योजना 171

संक्षिप्त रूप

lf{kIr : i	l|i.k : i
ए.सी.आई.एल.एस.	अमेरिकन सेंटर फॉर इंटनेशनल लेबर सालिडेरिटी
ए.ई.आई.	एल्बर्ट आइंस्टाइन इंस्टिट्यूट
ए.एफ.एल.–सी.आई.ओ.	अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर एंड कांग्रेस ऑफ इंडस्ट्रियल ऑरगेनाइजेशंस
एफ्रीकॉम	अफ्रीका कमांड (अमरीका द्वारा गठित)
ए.एल.बी.ए. (एल्बा)	बोलिवारियन एलायंस फॉर दी पीपल्स ऑफ आवर अमेरिका
ए.पी.एम.सी.	एग्रीकल्चरल प्रोड्यूस मार्केटिंग कमेटी
आसियान	एसोसियेशन ऑफ साउथ ईस्ट एशियन नेशंस
एसोचैम	एसोसियेटेड चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स
बी.पी.ओ.	बिज़नेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग
ब्रेक्सिट	ब्रिटेन एग्ज़िट (यूरोप से)
बी.आर.आई.सी.एस.	ब्राज़ील, रूस, हिन्दोस्तान, चीन और दक्षिण अफ्रीका का समूह
सी.ई.टी.ए.	कांप्रिहेंसिव इकोनोमिक ट्रेड एग्रीमेंट (कनाडा और यूरोपीय संघ का आपसी व्यापार समझौता)
सी.आई.ए.	सेंट्रल इंटेलिजेंस एजेंसी (अमरीका)
सी.आई.पी.ई.	सेंटर फॉर इंटरनेशनल प्राइवेट एंटरप्राइज़
डी.एम.एल.	डाइरेक्ट मार्केटिंग लाइसेंस
ई–नैम	इलेक्ट्रानिक नेशनल एग्रीकल्चरल मार्केट
ई.सी.बी.	यूरोपीयन कॉमन (सामान्य) बैंक
ई.यू.	यूरोपीय संघ

एफ.डी.आई.	फॉरेन डाइरेक्ट इनवेस्टमेंट (प्रत्यक्ष विदेशी पूंजी निवेश)
एफ.टी.यू.आई.	फ्री ट्रेड यूनियन इंस्टिट्यूट
जी.एस.टी.	गुड्स एंड सर्विसेज़ टैक्स (वस्तु और सेवा कर)
आई.सी.सी.	इंटरनेशनल क्रिमिनेल कोर्ट (अंतर्राष्ट्रीय अपराधी अदालत)
आई.सी.एन.सी.	इंटरनेशनल सेंटर फॉर नॉन वायलेंट कांफ्लिक्ट
आई.एम.एफ.	इंटरनेशनल मॉनिटेरी फंड (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष)
आई.आर.आई.	इंटरनेशनल रिपब्लिकन इंस्टिट्यूट
आई.एस.आई.एस.	इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सिरिया
जे.एन.यू.	जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
लेमोआ (एल.ई.एम.ओ.ए.)	(हिन्द–अमरीका) लोजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट
मरकोसुर	मरकैडो कोमम डो सुल (दक्षिण अमरीकी सामान्य बाज़ार)
नाफ्टा	नार्थ अमरीकन फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (उत्तरी अमरीकी मुक्त व्यापार समझौता)
एन.डी.आई.	नेशनल डेमोक्रेटिक इंस्टिट्यूट
एन.ई.डी.	नेशनल एंडावमेंट फॉर डेमोक्रेसी
नरेगा	राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम
ओ.एन.जी.सी.	ऑयल एंड नेचुरल गैस कार्पोरेशन लिमिटेड
आर.सी.ई.पी.	रिजनल कांप्रिहेंसिव इकोनोमिक पार्टनरशिप
एस.सी.ओ.	शांघाई कोऑपरेशन ऑर्गेनाइजेशन
सिप्री	स्टाकहोम पीस रिसर्च इंस्टिट्यूट
टी.पी.पी.	ट्रांस–पैसिफिक पार्टनरशिप
टी.टी.आई.पी.	ट्रांस एटलांटिक ट्रेड एंड इनवेस्टमेंट पार्टनरशिप
यू.एस.ए.आई.डी.	यू.एस. एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवेलपमेंट
वैट	वैल्यू ऐडेड टैक्स

कार्यवाहियों का संक्षिप्त विवरण

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी का पांचवां महाअधिवेशन नवम्बर 2016 के प्रथम भाग में हुआ। देश के अलग–अलग भागों और विदेश से आये प्रतिनिधियों ने इसमें हिस्सा लिया। अधिकतम प्रतिनिधि 35 वर्ष से कम उम्र के थे और लगभग 40 प्रतिशत महिलायें व युवतियां थीं।

अध्यक्ष मंडल का चयन

अपनी प्रारंभिक टिप्पणियों के बाद, कामरेड लाल सिंह ने अक्तूबर 2010 में हुए पार्टी के चौथे महाअधिवेशन द्वारा चुनी गयी केन्द्रीय समिति को समाप्त करने की घोषणा की। उन्होंने महाअधिवेशन की कार्यवाहियों का संचालन करने के लिए पांच सदस्यीय अध्यक्ष मंडल का प्रस्ताव किया, जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया। अध्यक्ष मंडल ने कामरेड लाल सिंह को अध्यक्ष चुना और उन्होंने महाअधिवेशन का एजेंडा प्रस्तुत किया।

एजेंडा

अध्यक्ष मंडल द्वारा प्रस्तावित एजेंडा इस प्रकार था : (1) दिवंगत क्रांतिकारियों को लाल सलाम; (2) रिपोर्ट के मसौदे की प्रस्तुति; (3) रिपोर्ट पर चर्चा और रिपोर्ट को अपनाना;

(4) केन्द्रीय समिति का चुनाव; और (5) नव–निर्वाचित महासचिव की अध्यक्षता में समापन सत्र। इस एजेंडा का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया।

सभी क्रांतिकारी योद्धाओं को लाल सलाम

अपनी पार्टी और दूसरी क्रांतिकारी पार्टियों के जो कामरेड हाल के वर्षों में हम से बिछुड़ गए, उनकी याद में सभी प्रतिनिधि खड़े होकर दो मिनट मौन रहे। प्रतिनिधियों ने घिनावने उपनिवेशवादी शासन के खिलाफ़ संघर्ष में, हिंदुस्तान ग़दर पार्टी और उनके वारिस संगठनों के शहीदों के बहादुर आत्म–बलिदान को याद किया। उन्होंने पेरिस कम्यून के वीरों की दिलेर कुर्बानियों को याद किया, बोल्शेविक पार्टी के सदस्यों और रूस के मज़दूरों और किसानों के बलिदानों को याद किया, जिन्होंने 100 वर्ष पहले अपना राज स्थापित किया था और सभी प्रकार के शोषण व दमन से मुक्त नए समाजवादी समाज का निर्माण करने का रास्ता दिखाया था।

रिपोर्ट के मसौदे की प्रस्तुति

रिपोर्ट के मसौदे को प्रस्तुत करते हुए, कामरेड लाल सिंह ने समझाया कि यह बीते 6 वर्षों में पूरी पार्टी और उसके सभी संगठनों के सामूहिक सैद्धांतिक और व्यवहारिक काम का संकलन है। इसका गंभीरता से अध्ययन करना और इस पर चर्चा में पूरे जोश के साथ भाग लेना सभी कामरेडों का कर्तव्य है। जब महाअधिवेशन में इस रिपोर्ट को अपनाया जाएगा, तब पार्टी के हर सदस्य का कर्तव्य होगा रिपोर्ट के

निष्कर्षों की हिफ़ाज़त करना और रिपोर्ट में पेश की गयी कार्य योजना को लागू करने के लिए संघर्ष करना।

रिपोर्ट के मसौदे पर चर्चा और उसे अपनाया जाना

रिपोर्ट के मसौदे की प्रस्तुति के बाद, अलग–अलग और छोटे–छोटे समूहों में, उसका अध्ययन किया गया और उस पर चर्चा की गयी। उसके बाद एक परिपूर्ण सभा हुयी, जिसमें अध्यक्ष मंडल ने सभी प्रतिनिधियों को रिपोर्ट पर अपने विचार रखने को आमंत्रित किया। सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने इस सत्र में अपनी बातें रखीं। प्रतिनिधियों ने वर्तमान परिस्थिति के वैज्ञानिक मार्क्सवादी–लेनिनवादी विश्लेषण और हिन्दोस्तान के नव–निर्माण के क्रांतिकारी कार्यक्रम की स्पष्ट और बहादुर प्रस्तुति की सराहना की। समाजवाद और कम्युनिज़्म का रास्ता खोलने के लिए इसे एक आवश्यक कदम माना गया। कई प्रतिनिधियों की बातों से रिपोर्ट के मसौदे में दिए गए विश्लेषण और काम की समीक्षा में और वृद्धि हुयी। कई सवाल उठाये गए, जिनका अध्यक्षमंडल ने जवाब दिया।

इस बहुत ही सक्रिय भागीदारी वाली परिपूर्ण सभा के अंत में, महाअधिवेशन में रिपोर्ट के मसौदे और उसके अन्दर कार्य योजना को एकमत से स्वीकार किया गया। यह फैसला लिया गया कि नव–निर्वाचित केन्द्रीय समिति रिपोर्ट के मसौदे में और उन्नति लाने के लिए, महाअधिवेशन के दौरान रिपोर्ट पर हुयी चर्चा में उठने वाले सवालों और समझाई

गयी बातों को शामिल करते हुए, उसमें सम्पादकीय सुधार करेगी।

केन्द्रीय समिति का चुनाव

अध्यक्ष मंडल के अध्यक्ष ने केन्द्रीय समिति की भूमिका के बारे में समझाया। जब महाअधिवेशन का सत्र नहीं हो रहा है, तब केन्द्रीय समिति ही पार्टी का उच्चतम निकाय है। केन्द्रीय समिति की जिम्मेदारी है यह सुनिश्चित करना कि महाअधिवेशन के फैसलों को लागू किया जा रहा है। केन्द्रीय समिति महाअधिवेशन के किसी फैसले को नहीं बदल सकती है; किसी फैसले को बदलने के लिए एक और महाअधिवेशन बुलाना पड़ता है।

चुनाव के बाद, केन्द्रीय समिति ने अपनी प्रथम परिपूर्ण सभा की, जिसमें कामरेड लाल सिंह को महासचिव चुना गया। पार्टी के चार प्रवक्ता भी चुने गए।

समापन सत्र

अपनी समापन टिप्पणियों में कामरेड लाल सिंह ने यह भरोसा प्रकट किया कि नव–निर्वाचित केन्द्रीय समिति एकजुट होकर काम करेगी और अपनी भूमिका निभाएगी। महासचिव की समापन टिप्पणियों के बाद, प्रतिनिधियों ने हिन्दोस्तान की अलग–अलग भाषाओं में क्रांतिकारी गीत गाये।

महाअधिवेशन के समापन में, अंतर्राष्ट्रीय श्रमजीवी वर्ग और समाजवाद व कम्युनिज़्म के आन्दोलन के गीत, *इंटरनेशनेल* को पूरे जोश के साथ गाया गया।

प्रारंभिक टिप्पणियां

पार्टी के महासचिव, कामरेड लाल सिंह ने महाअधिवेशन की शुरुआत की। सभी उपस्थित लोगों ने खड़े होकर, तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। कामरेड लाल सिंह ने दूर–दूर से आये हुए सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया। उनकी प्रारंभिक टिप्पणियों से कुछ अंश यहां प्रकाशित किये जा रहे हैं :

हमारी पार्टी का पांचवां महाअधिवेशन ऐसे समय पर हो रहा है जब हिन्दोस्तान और सारी दुनिया में हालतें यह संकेत दे रही हैं कि बहुत बड़े–बड़े संघर्ष होने वाले हैं। सभी देशों के मज़दूर वर्ग और लोग अब अपनी भूमि और श्रम के लगातार बढ़ते शोषण और लूट को बर्दाश्त करने को तैयार नहीं हैं। शासक वर्ग आपस में स्पर्धा करने वाले तमाम गुटों में बंटा हुआ है और पुराने तरीके से शासन करने में नाकामयाब हो गया है।

यह बहुत खतरनाक परिस्थिति है। इसके साथ–साथ, साम्राज्यवादी व्यवस्था के सभी मुख्य अंतर्विरोध तीखे होते जा रहे हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि विश्व क्रांति की लहर भाटे से ज्वार में बदलने वाली है।

निरंतर तीखे होते जा रहे अंतर्विरोधों की इस विश्व स्थिति में, हिन्दोस्तान के अन्दर, लोगों के सामने बाहरी और अंदरूनी ताक़तों से बढ़ता खतरा है। हमारे देश के बड़े सरमायदार एक हमलावर रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने मोदी की अगुवाई में, भाजपा की बहुमत वाली सरकार को सत्ता पर बिठाया है, ताकि बड़े पैशाचिक तरीके से अपने मजदूर–विरोधी, किसान–विरोधी, समाज–विरोधी और राष्ट्र–विरोधी कार्यक्रम को और तेज़ी से लागू कर सकें। अमरीकी साम्राज्यवाद पूरे एशिया पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के अपने लक्ष्य को हमलावर तरीके से बढ़ावा दे रहा है और इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए हिन्दोस्तान के शासक वर्ग से दोस्ती बढ़ा रहा है।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति के सौवें वर्ष में हमने प्रवेश किया है। वर्तमान स्थिति और सौ वर्ष पहले की स्थिति के बीच बहुत सी समानताएं हैं। उस समय भी पूंजीवादी–साम्राज्यवादी व्यवस्था के सभी अंतर्विरोध बहुत तीखे हो गए थे और उनका समाधान होना ज़रूरी था। वर्तमान स्थिति हम कम्युनिस्टों से यह आह्वान कर रही है कि क्रांति की आत्मगत हालतें जल्दी से जल्दी तैयार करें।

एकजुट कम्युनिस्ट नेतृत्व के साथ, मज़दूर वर्ग क्रांतिकारी लहर पर सवार होकर यह सुनिश्चित कर सकेगा कि इससे स्थाई सामाजिक परिवर्तन हो सके, पूंजीवाद से समाजवाद और आगे, वर्गहीन कम्युनिस्ट समाज की ओर हम बढ़ सकें।

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के पांचवें महाअधिवेशन में पेश की गयी रिपोर्ट

साथियों,

हम अपनी पार्टी के इस पांचवें महाअधिवेशन में ऐसे समय पर एकत्रित हो रहे हैं जब पूंजीवादी–साम्राज्यवादी व्यवस्था मरणासन्न हालत में है और सारी दुनिया में आतंक व अराजकता फैला रही है। जैसे–जैसे विश्व की अर्थव्यवस्था का संकट बद से बदतर होता जा रहा है, वैसे–वैसे दुनिया के पूंजीपतियों की हताशा बढ़ती जा रही है।

वैश्विक आर्थिक संकट और पूंजीवादी राज्यों की प्रतिक्रिया

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था 2008 में शुरू हुए घोर संकट से अभी भी नहीं निकल पायी है। दुनिया के अधिकतम देशों में उत्पादन की वृद्धि रुक गयी है या उसकी गति बहुत ध ीमी हो गयी है। दुनिया में वस्तुओं के व्यापार का मूल्य, जो 2009 में 20 प्रतिशत से घट गया था और उसके बाद के वर्षों में थोड़ा सा ही बढ़ा था, वह 2015 में फिर घट गया

है[1]। उत्तरी अमरीका और पश्चिम यूरोप के देशों में वैश्विक बेरोज़गारी अप्रत्याशित ऊंचाई तक पहुंच गयी है और यूनान में 25 प्रतिशत तक पहुंच गयी है[2]।

वह संकट 2008 में अमरीका में गिरवी रखकर लिये गये उधार और रियल एस्टेट के गुब्बारे के फटने के साथ शुरू हुआ था। उसके बाद वह बैंकिंग व्यवस्था में फैल गया, यूरोप में उत्पादन के कामकाज को नीचे खींचा और अब तक सभी महाद्वीपों में फैल गया है। उस संकट की वजह से जापान की समस्याएं और बढ़ गयी हैं। जापान जिसकी अर्थव्यवस्था को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था माना जाता है, वह बीते 20 वर्षों में 20 प्रतिशत से भी ज्यादा घट गयी है[3]। संकट की वजह से चीन की निर्यात–उन्मुख अर्थव्यवस्था में बहुत मंदी आ गयी है, जिसका दुनिया के अनेक देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर बहुत ही नकारात्मक प्रभाव हुआ है[4]।

चीनी अर्थव्यवस्था की मंदी का ब्राज़ील, वेनेजुएला, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका समेत कच्चे माल का उत्पादन करने वाले अनेक देशों पर बहुत बुरा असर पड़ा है। 2014 से प्राथमिक (उत्पादन के लिये ज़रूरी) सामग्रियों की कीमतें 50 प्रतिशत से अधिक घट गयी हैं[5]। रूस, वेनेजुएला, ईरान, साऊदी अरब और अन्य खाड़ी के देशों समेत, तेल का निर्यात करने वाले देशों पर बहुत बुरा असर हुआ है, क्योंकि कच्चे तेल की कीमतें 2016 में बहुत गिर गयी हैं और 2015 की उच्चतम कीमत का 1/5वां हो गयी हैं[6]। हिन्दोस्तान से लौह अयस्क जैसे कच्चे माल के निर्यात की

कीमत और मात्रा भी बहुत तेज़ी से गिरी है, जिसका प्रभाव लाखों–लाखों मज़दूरों पर पड़ा है।

2008 में वैश्विक संकट के शुरू होने के बाद, हिन्दोस्तान से होने वाले निर्यातों की मात्रा घट गयी[7]। इसकी वजह से नौकरियों में कटौती हुई और पूंजी संचय तथा आर्थिक संवर्धन की गति में बहुत तेज़ गिरावट हुई। वेतनभोगी मज़दूरों को कई वर्षों से लगातार खाद्य पदार्थों की कीमतों में दो–अंकों की मुद्रास्फीति का सामना करना पड़ा है, और वेतन के साथ जो महंगाई भत्ते दिये गये हैं, वे बढ़ती महंगाई से हमेशा ही पीछे रहे हैं। किसानों और छोटी संपत्ति के अन्य मालिकों की तबाही, कर्ज़ में डूब जाना और आत्महत्याएं ग्रामीण जीवन की स्थायी हालत बन गयी है। बढ़ती बेरोज़गारी पर नौजवानों का गुस्सा तरह–तरह के विरोध संघर्षों के रूप में प्रकट हो रहा है।

सरकार का वर्तमान दावा कि हिन्दोस्तान की अर्थव्यवस्था दुनिया की किसी और बड़ी अर्थव्यवस्था से ज्यादा तेज़ी से बढ़ रही है, इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। सरमायदारों के अर्थशास्त्रियों ने भी इस पर गंभीर शक प्रकट किये हैं क्योंकि अधिकतम सूचकांकों से तेज़ गति से आर्थिक संवर्धन के दावे के कोई सबूत नहीं मिलते। सकल अचल पूंजी में वृद्धि, जो अर्थव्यवस्था की उत्पादक संपत्तियों की वृद्धि का मापदंड है, वह 2014–15 में 4.9 प्रतिशत थी। 2015–16 में वह घट कर 3.9 प्रतिशत हो गयी और 2016 की प्रथम तिमाही में इसकी वृद्धि होने के बजाय यह 3.1 प्रतिशत से घट गयी[8]। बीते पूरे दशक में, 2015–16

में, बैंकों द्वारा दिये गये कर्ज़ों में वृद्धि की गति सबसे कम थी[9]। जुलाई 2016 के आंकड़ों के अनुसार, बीते 20 महीनों तक लगातार निर्यात घटते ही रहे। अप्रैल–अगस्त 2016 में औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक 2015 की इसी अवधि से 0.3 प्रतिशत कम था, जिससे अर्थव्यवस्था के लगभग स्थगित होने का संकेत मिलता है, न कि तेज़ गति से संवर्धन का[10]।

जो संकट वित्तीय संकट के रूप में शुरू हुआ था, वह अब एक गहरी और लंबे समय से चल रही विश्वस्तरीय आर्थिक मंदी बतौर सामने आया है और अनेक देशों में यह मंदी फैल गयी है। पूंजीवादी कंपनियां अपने उत्पादन में कटौती कर रही हैं क्योंकि वे उत्पादित वस्तुओं को बेचने में असमर्थ हैं। बाज़ार में उनकी पर्याप्त मांग नहीं है।

जब भी कोई संकट फूट पड़ता है, तब सरमायदारों के वक्ता किसी खास सरकार की नीति को समस्या का कारण बताते हैं और उसे हल करने के लिये इस या उस "नीति सुधार" की वकालत करते हैं। वे इस बात को छिपाने की भरसक कोशिश कर रहे हैं कि समय–समय पर संकट होना पूंजीवादी उत्पादन की व्यवस्था की एक निहित विशेषता है।

उत्पादन और उपभोग के आपसी सामंजस्य में समय–समय पर हुई विसंगतियां पूंजीवादी व्यवस्था के मूल अंतर्विरोध का अनिवार्य परिणाम है। यह मूल अंतर्विरोध इस बात में है कि उत्पादन सामाजिक तौर पर किया जाता है पर उत्पादन के साधनों की मालिकी निजी है। इसकी वजह से सामाजिक

श्रम के फल को कुछ निजी पूंजीपति हड़प लेते हैं। अपने निजी मुनाफ़ों को अधिकतम बनाने का प्रयास करते हुए, स्पर्धा करने में लगा हुआ हर पूंजीपति वेतनों पर खर्च को कम से कम करता है। पूरे पूंजीपति वर्ग के इन प्रयासों का सम्मिलित परिणाम यह होता है कि वेतनभोगी वर्ग की क्रयशक्ति गिरती रहती है और उत्पादित वस्तुओं को खरीदने के लिये अपर्याप्त बन जाती है। इसका अनिवार्य परिणाम पूंजीवादी अत्यधिक उत्पादन का संकट है। इस संकट से निपटने के लिये उत्पादक क्षमता को खाली रखा जाता है या नष्ट किया जाता है, जब तक उत्पादन और उपभोग के बीच एक नया संतुलन नहीं स्थापित होता। इसके बाद फिर से तेज़ गति से संवर्धन का एक नया दौर शुरू होता है। इससे अनिवार्यतः अत्यधिक उत्पादन का एक और संकट शुरू होता है।

उधार पर उपभोग की वस्तुओं की खरीदी के विस्तार का इस्तेमाल करके हाल के दशकों में अमरीका और अनेक अन्य पूंजीवादी देशों में वस्तुओं की मांग को प्रोत्साहित किया गया है। 2001 से अमरीका द्वारा छेड़े गये एक के बाद दूसरे जंग और विशाल पैमाने पर सैन्यीकरण का भी औद्योगिक संवर्धन को बनाये रखने में योगदान रहा है। परन्तु इन सभी कदमों से पैदा की गयी मांग के बावजूद, मंदी को कुछ समय के लिये ही टाला जा सका, उसे अंत में फूट पड़ने से नहीं रोका जा सका।

वर्तमान वैश्विक पूंजीवादी संकट बीते 100 वर्षों में होने वाले संकटों में सबसे लंबे समय तक चलने वाला संकट है। इस

संकट की यह वजह है कि कई वर्षों से मज़दूरों के असली वेतन गिरते रहे हैं और इज़ारेदार बैंक तथा परजीवी वित्त पूंजी के अन्य संस्थान मेहनतकशों और उनकी बचत के ध ान को बढ़–चढ़कर लूटते रहे हैं। जब संकट टूट पड़ा तब उसका बहुत ही तीक्ष्ण रूप था क्योंकि कई वर्षों तक, लगातार एक दशक से अधिक समय तक, पूंजीवादी देशों में मेहनतकश आबादी को बार–बार निचोड़ने और कर्ज़े में डालने का सम्मिलित असर सामने आया। अमरीका और यूरोप समेत 25 संकटग्रस्त अर्थव्यवस्थाओं के हाल के एक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 2005 और 2014 के बीच, दो–तिहाई से अधिक परिवारों की असली आमदनी वहीं के वहीं रही है या घटी है[11]।

इज़ारेदारी की मात्रा में वृद्धि और वित्त पूंजी का लगातार बढ़ता वर्चस्व मज़दूर वर्ग को कंगाली की ओर तथा छोटे कारोबारों, कारीगरों व किसानों को तबाही की ओर और तेज़ गति से धकेलते हैं। ये वर्तमान संकट को और तीक्ष्ण करने के मुख्य कारक हैं।

कुछ गिनी–चुनी विशाल कंपनियों का बाज़ार पर वर्चस्व अभूतपूर्व स्तर तक पहुंच गया है। आज दुनिया की सबसे बड़ी 500 कंपनियों का कुल राजस्व दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद का 40 प्रतिशत तक पहुंच गया है[12]। कुछ गिनी–चुनी विशाल कंपनियां मिलकर बाज़ार में बिकने वाली लगभग हर वस्तु की आपूर्ति की मात्रा तथा उसकी कीमत को निर्धारित करती हैं और इसमें उन्हीं का वर्चस्व बना हुआ है। दुनिया के लगभग सभी उद्योग और व्यवसाय उन्हीं के

हाथों में बहुत ही ज्यादा संकेंद्रित हो गये हैं। सभी विकसित और उभरती हुई पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं के बारे में ऐसा ही कहा जा सकता है।

2007 में, अमरीका में 40 प्रतिशत **औद्योगिक** उत्पादों में, कुल बिक्री का 50 प्रतिशत या उससे अधिक हिस्सा सिर्फ चार कंपनियों के हाथों में था[13]। खुदरा व्यापार अर्थव्यवस्था का वह क्षेत्र है जिसमें कुछ दशकों पहले तक बहुत सारे छोटे व्यापारी आपस में स्पर्धा करते थे। उस क्षेत्र में आज सबसे ज्यादा इज़ारेदारी है। वॉलमार्ट और दूसरी विशाल चेन–कंपनियां सारी दुनिया में अपने आपूर्तिकारकों को निचोड़ रही हैं और अपने **मज़दूरों** का बेहद शोषण कर रही हैं।

आई.टी. उद्योग अर्थव्यवस्था के दूसरे क्षेत्रों की अपेक्षा में नया है, जिसमें लगभग दो दशक पहले ही अनगिनत "स्टार्ट अप" कंपनियां बनी थीं। उस पर आज एप्पल, माइक्रोसॉफ्ट, इन्टेल, गूगल और एमेज़ॉन की अगुवाई में विशाल **इज़ारेदार** कंपनियों का वर्चस्व बना हुआ है। इन विशाल आई.टी. कंपनियों में से अनेक कंपनियों पर यह आरोप लगाया गया है कि ये अपनी **इज़ारेदारी** की ताक़त का इस्तेमाल करके, सारी दुनिया में अपने प्रतिस्पर्धियों को कुचल देती हैं। **हिन्दोस्तान** में भी छवि कुछ ऐसी ही है जहां आई.टी. क्षेत्र पर 5 बड़ी कंपनियों – टी.सी.एस., इनफोसिस, विप्रो, एच.सी.एल. और टेक महिंद्रा – का वर्चस्व है।

इज़ारेदारी की वृद्धि की वजह से अधिक से अधिक छोटे और मध्यम दर्ज़े के कारोबारों को धंधे से बाहर निकलना पड़ रहा है। विशाल इज़ारेदार कंपनियों के विस्तार से जो नयी नौकरियां पैदा हो रही हैं, उनकी संख्या बंद होने वाली या अपने कारोबार को घटाने को मज़बूर होने वाली कंपनियों में नष्ट की गयी पुरानी नौकरियों की संख्या से कहीं कम है। इसकी वजह से दुनिया के अगुवा पूंजीवादी देशों में रोज़गार विहीन संवर्धन की गतिविधि देखने में आ रही है।

अत्यधिक उत्पादन के हर संकट का यह परिणाम होता है कि पूंजी और कम हाथों में संकेंद्रित हो जाती है, क्योंकि बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को निगल लेती हैं। विलयन और अधिग्रहण के ज़रिये दो बड़ी कंपनियां मिलकर एक विशाल इज़ारेदार कंपनी बन जाती हैं। मिसाल के तौर पर, सारी दुनिया में निर्माण कार्य में मंदी की वजह से इस क्षेत्र में इज़ारेदारी बहुत बढ़ गयी है और पूंजी कम से कम हाथों में संकेंद्रित होती जा रही है। निर्माण पदार्थों के क्षेत्र में दुनिया की दो सबसे बड़ी इज़ारेदार कंपनियों – फ्रांस के लाफार्ज और स्विट्जरलैंड के होलसिम – के विलयन से एक विशाल इज़ारेदार कंपनी बनी है[14]। इसके बाद दो और बड़ी इज़ारेदार कंपनियों – जरमनी के हाइडलबर्ग और इटली के इतालसिमेंटी – का विलयन हुआ है[15]।

2016 में दो विशाल अमरीकी रसायन कंपनियों, डू पोंट और डॉव केमिकल्स का विलयन हुआ, जिससे दुनिया की सबसे बड़ी रसायन कंपनियों में से एक पैदा हुई[16]। फाइज़र, जो दुनिया की सबसे बड़ी दवा कंपनियों में से एक है, वह हाल

के वर्षों में बहुत सारी दवा कंपनियों का अधिग्रहण करके, और भी बड़ी हो गयी है।

बैंकिंग क्षेत्र में इज़ारेदारी के स्तर में खास तौर पर वृद्धि हुई है। 1995 में अमरीका के 6 सबसे बड़े बैंकों – जे.पी. मॉर्गन चेज़, बैंक ऑफ अमेरिका, सिटीग्रुप, वेल्ज़ फारगो, गोल्डमैन सैक्स और मॉर्गन स्टैनली – की संपत्ति वार्षिक राष्ट्रीय आमदनी का 17 प्रतिशत था। 2006 के अंत तक, यह बढ़कर 55 प्रतिशत हो गया और 2010 तक 64 प्रतिशत। 2015 में, दस सबसे बड़े बैंकों की सम्पत्ति 10 खरब अमरीकी डॉलर (650 लाख करोड़ रुपये) हो गयी, जो कि अमरीका के 6500 बैंकों की कुल सम्पत्ति का दो–तिहाई भाग था[13,17]।

सामाजिक उत्पादन के सभी क्षेत्रों पर वित्त पूंजी का वर्चस्व बढ़ रहा है, जिसकी वजह से पूंजीवादी व्यवस्था की परजीविता बढ़ रही है। वित्त पूंजी मानव श्रम से उत्पन्न किये गये सामाजिक बेशी मूल्य के अधिक से अधिक हिस्से को कर्ज़ा भुगतान के रूप में ऐंठ लेती है। 2007 में अमरीका में पूंजीवादी कंपनियों के मुनाफ़ों का 40 प्रतिशत विशाल बैंकों, बीमा कंपनियों और अन्य वित्तीय संस्थानों की तिजोरियों में गया[18]। मज़दूर वर्ग के परिवारों को उधार पर खरीदते रहने और गिरते असली वेतनों से अधिक खर्च करते रहने को प्रोत्साहित किया गया। समय के साथ–साथ ई.एम.आई. बढ़ते गये। जब 2008 में संकट फूट पड़ा तब मज़दूर वर्ग के परिवारों की बहुत बड़ी संख्या कर्ज़े, खास तौर पर गृह कर्ज़ा नहीं चुका पायी, क्योंकि बकाया कर्ज़े का

बोझ घर की कीमत से ज्यादा था। इसकी वजह से हजारों लोग बेघर हो गये।

दुनिया के अधिकतम राष्ट्रों और लोगों पर आर्थिक बोझ को बढ़ाने वाला एक और कारक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्तीय लेन–देन में अमरीकी डॉलर का वर्चस्व है। डॉलर का वर्चस्व अमरीका को एक बेमिसाल विशेष अधिकार वाला रुतबा देता है। इसका इस्तेमाल करके अमरीका अपनी खुदगर्ज़ और अपराधी कार्यवाहियों के लिये बाकी दुनिया से बलपूर्वक वसूली करता है। अमरीकी साम्राज्यवादी अधिक मात्रा में डॉलर छाप कर, अलग–अलग देशों में अपने जंग और गुप्त हस्तक्षेप के लिये धन देते हैं। ये डॉलर दुनिया के बाज़ारों में फैल जाते हैं और सारी दुनिया में मुद्रास्फीति पैदा करते हैं। अमरीकी साम्राज्यवादी दुनिया की अधिकतम सरकारों और उनके अपने–अपने केन्द्रीय बैंकों को अमरीकी राजकोषीय बिल के रूप में सस्ते उधार देते रहते हैं।

बीते 25 वर्षों के दौरान हुए विकास की विशेषताएं हैं (1) पूंजीवादी मुनाफ़े की गति के घटने का दबाव; और (2) श्रमजीवी वर्ग के वेतनों और काम की हालतों पर हमले करके, प्राकृतिक संसाधनों की लूट और साहूकार संस्थानों द्वारा पूरी आबादी से वसूली को बढ़ाकर, उस दबाव का सामना करने और उस पर काबू पाने के लिये, पूंजीपति वर्ग का अप्रत्याशित हमला।

कार्ल मार्क्स के बेशी मूल्य के सिद्धांत से निकलने वाली एक वैज्ञानिक खोज मुनाफ़े की औसतन दर के गिरने की प्रवृत्ति

का नियम है। यह प्रवृत्ति प्रौद्योगिक परिवर्तनों से श्रमशक्ति की बढ़ती उत्पादकता के कारण पूंजी के जैविक गठन में परिवर्तन का परिणाम है।

मार्क्स ने इस गतिविधि को प्रवृत्ति बताया था; और उन्होंने कई तरीकों का विवरण किया था जिनके द्वारा पूंजीपति इस प्रवृत्ति का मुकाबला करते हैं। इन तरीकों में बेशी मूल्य की वसूली के दर या श्रम के शोषण के स्तर को बढ़ाने के तरीके शामिल हैं।

हाल के दशकों में, आई.टी. के प्रयोग के ज़रिये मानव श्रम की उत्पादकता में बहुत बड़ी छलांग देखने में आयी है। मज़दूरों के वेतन पर पूंजीपतियों द्वारा खर्च किये गये प्रति रुपये या डॉलर के लिये, कच्चे माल, ऊर्जा, मशीनरी व उत्पादन के यंत्रों पर किया गया खर्च, 25 वर्ष पहले की तुलना में आज बहुत ज्यादा है। अगर श्रम के शोषण के स्तर समेत और सभी हालतें वैसी की वैसी रहतीं, तो सिर्फ इसी वजह से पूरी दुनिया में पूंजीवादी मुनाफ़ों की औसतन दर में भारी गिरावट आती। परन्तु पूंजीपति वर्ग ने बाकी हालतों को भी अपरिवर्तित नहीं छोड़ा।

हाल के दशकों में सभी देशों के पूंजीपतियों ने मुनाफ़ा दर के गिरने की प्रवृत्ति का मुकाबला करने के लिये अनेक तरीके अपनाये हैं, जैसे कि वेतनों को कम करना, काम के घंटों को बढ़ाना, अस्थायी ठेकों पर काम करवाना और "सुविधाओं" को वापस लेने के नाम पर मज़दूर वर्ग के मूल अधिकारों पर हमले करना। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने प्राकृतिक संसाध

ानों की लूट को बढ़ा दिया है। इज़ारेदार बैंकों और वित्तीय बिचौलिये संस्थानों ने निजी और सार्वजनिक कर्ज़ वसूली के ज़रिये पूरी आबादी की लूट को बढ़ा दिया है। औसतन मुनाफ़ा दर के गिरने की वस्तुगत प्रवृत्ति का मुकाबला करने के लिये इस प्रकार के हमले किये जा रहे हैं। इज़ारेदार पूंजीपतियों ने, अर्थव्यवस्था और राज्य पर अपने वर्चस्व का इस्तेमाल करके, इन हमलों को अगुवाई दी है।

"मुक्त व्यापार" के नाम पर, अनेक देशों को दूसरे देशों के साथ व्यापार पर लगाये गये प्रतिबंधों को घटाना पड़ा है ताकि इज़ारेदार पूंजीवादी कंपनियों और उनके गठबंधानों का बाज़ारों पर वर्चस्व और कच्चे माल के स्रोतों पर नियंत्रण बना रहे। नये बाज़ार खोले जा रहे हैं जो अब तक पूंजीपतियों के लिये बंद थे। पूंजी के मुक्त प्रवेश और निकास की वजह से उत्पादक पूंजी का उन स्थानों पर पलायन हुआ है, जहां श्रमशक्ति और कच्चे माल सबसे सस्ते हैं। जिस देश से पूंजी आई है तथा जिस देश को गयी है, दोनों में मज़दूरों के वेतनों और अधिकारों में भारी कटौती हुई है। इन सभी कदमों का इस्तेमाल करके पूंजीपति 90 के दशक में तथा 2007 तक सारी दुनिया में पूंजीवादी मुनाफ़ा दर को बनाये रखने व और बढ़ाने में कामयाब रहे, हालांकि वस्तुगत प्रवृत्ति की दिशा इससे उल्टी थी।

अंतर्राष्ट्रीय सरमायदारों व प्रमुख पूंजीवादी देशों की सरकारों ने औसतन मुनाफ़ा दर के गिरने की प्रवृत्ति का मुकाबला करने के लिये जो भी कदम उठाये थे, उन सबकी वजह से अलग–अलग देशों में विकास की असमानता और बढ़

गयी है। बीते 25 वर्षों में, वस्तुओं और पूंजी के प्रवेश और निकास पर राष्ट्रों द्वारा लगाई गयी रुकावटों के घटाये जाने से, सारी दुनिया में पूंजीवादी संवर्धन जिस प्रकार से हुआ है, उसकी वजह से पूरी दुनिया में उत्पादन के भूगोलिक वितरण में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है।

जबकि 1993 में चीन विनिर्माण उद्योग की क्षमता में चौथे स्थान पर था, तो 2010 में वह अमरीका को पीछे छोड़कर प्रथम स्थान पर आ गया। 2013 में वैश्विक विनिर्माण उत्पाद का 23 प्रतिशत चीन से था जबकि सिर्फ 17 प्रतिशत अमरीका से था। इसी दौरान, दक्षिण कोरिया 10वें स्थान से 5वें स्थान पर पहुंच गया। वैश्विक विनिर्माण में, 2003 और 2013 के बीच, हिन्दोस्तान 14वें स्थान से 11वें पर पहुंचा जबकि रूस 18वें से 8वें स्थान पर पहुंचा, इंडोनेशिया 19वें स्थान से 13वें पर पहुंचा[19]।

1990 में दुनिया के इस्पात के कुल उत्पादन में यूरोपीय संघ, अमरीका और जापान का सम्मिलित हिस्सा 50 प्रतिशत था, जो 2014 में गिरकर 22 प्रतिशत हो गया; जबकि चीन और हिन्दोस्तान का सम्मिलित हिस्सा 10 प्रतिशत से बढ़कर 55 प्रतिशत हो गया। आर्थिक तौर पर, पश्चिम यानी उत्तरी अमरीका और यूरोप की तुलना में, पूर्व यानी एशिया का पलड़ा भारी हो रहा है[20]। अमरीका और पुरानी उपनिवेशवादी ताक़तों के अलावा चीन और हिन्दोस्तान के भी अफ्रीका में प्रवेश करने से, अफ्रीकी देशों की लूट–खसोट अप्रत्याशित मात्रा तक पहुंच गयी है।

पूंजीवादी शोषकों और अपनी श्रमशक्ति को बेचकर जीने वालों की दौलत और आमदनी में असमानता आज जिस स्तर तक पहुंच चुकी है वह बीते 100 वर्षों में नहीं देखने में आया है।

मुनाफ़ा दर के गिरने की प्रवृत्ति का मुकाबला करने की इस प्रक्रिया की वजह से श्रमिकों की आमदनी इतने निम्न स्तर तक घट गयी है कि इसका अनिवार्य परिणाम वर्तमान का गहरा व दीर्घकालीन संकट है। हालांकि उपभोक्ताओं की मांग को कृत्रिम रूप से ऊंचा रखने के लिये उधार पर खरीदी और अन्य तरीकों का इस्तेमाल किया गया था, परन्तु अत्यधिक उत्पादन के संकट को सिर्फ कुछ समय तक टाला जा सका, रोका न जा सका। जब आखिर में विश्व की अर्थव्यवस्था पर यह संकट फूट पड़ा तो अनेक वर्षों के सम्मिलित असर की पूरी शक्ति के साथ उसने वार किया।

सारांश में, वर्तमान वैश्विक आर्थिक संकट में अत्यधिक उत्पादन के पूंजीवादी संकट की सारी विशेषताएं हैं। यह संकट उत्पादन के अधिक से अधिक सामाजिक चरित्र और संकीर्ण निजी मुनाफ़े के लक्ष्य के बीच मूल अंतर्विरोध का परिणाम है। यह संकट बहुत ही भयानक और दीर्घकालीन है क्योंकि हाल के दशकों में दुनिया के सरमायदारों ने भारी जन–विरोधी और समाज–विरोधी हमले छेड़ दिये हैं। इन हमलों की वजह से, श्रम के शोषण को, कम से कम हाथों में अधिक से अधिक पूंजी के संकेंद्रण को, बाज़ारों पर इज़ारेदार कंपनियों के वर्चस्व और उनके द्वारा प्राकृतिक संसाधनों की लूट को और वित्त पूंजी द्वारा परजीवी तरीके

से मजदूरों से की गई वसूली को अप्रत्याशित हद तक बढ़ा दिया गया है। डॉलर के वर्चस्व से सुनिश्चित होने वाले बेहद विशेष अधिकार का फायदा उठाकर, अमरीका के सैन्यीकरण व जंग के वित्तीय बोझ को सभी दूसरे देशों के लोगों पर लाद दिया गया है।

साथियों,

दुनिया के प्रमुख पूंजीवादी राज्यों द्वारा, संकट को हल करने के बहाने, लिये गये सभी कदमों का मकसद सिर्फ वित्त पूंजी और इज़ारेदार कंपनियों के संकीर्ण हितों की रक्षा करना और उन्हें बढ़ावा देना ही है। समाज को संकट से बाहर निकालना तो दूर, इन कदमों ने संकट को और गहराने में योगदान दिया है।

अगुवा पूंजीवादी राज्य बड़े सुनियोजित तरीके से अपनी अर्थव्यवस्थाओं का सैन्यीकरण करते आ रहे हैं। सबसे बड़ी इज़ारेदार पूंजीवादी कंपनियां सैन्यीकरण और जंग को अधिकतम मुनाफ़ों का स्रोत मानती हैं, और कुछ समय के लिए संकट से बाहर निकलने का तरीका मानती हैं। परन्तु सैन्यीकरण और जंग उत्पादनकारी अर्थव्यवस्था को खोखला कर देते हैं। अलग–अलग साम्राज्यवादी ताक़तें अपनी अर्थव्यवस्थाओं का सैन्यीकरण करने के साथ–साथ, "कमखर्ची" के नाम पर, अपने–अपने देशों के मज़दूर वर्ग और लोगों के जीवन स्तर पर भारी हमले कर रही हैं। इसकी वजह से, उन देशों में संकट और तीक्ष्ण होता जा रहा है।

2008–09 के संकट का सामना करते हुए, अमरीकी सरकार और प्रमुख यूरोपीय देशों की सरकारों ने फौरन, इज़ारेदार बैंकों को डूबने से बचाने के लिये बहुत बड़ी मात्रा में धन दिया। उसे उचित ठहराने के लिये यह बहाना दिया गया कि "ये बैंक इतने बड़े हैं कि इन्हें फेल नहीं होने दिया जा सकता"। सरकारी कोष से अतिरिक्त कर्ज़े के ज़रिये इन बैंकों को बचाने के लिये धन दिया गया, जिसकी वजह से मेहनतकशों पर असहनीय बोझ लादा गया। दुनिया की सभी सरकारों का कुल कर्ज़ा 2007 और 2014 के बीच लगभग 60 प्रतिशत बढ़ गया है और अब 58 खरब अमरीकी डॉलर के अप्रत्याशित स्तर तक पहुंच गया है, जो कि वार्षिक वैश्विक उत्पादन का लगभग 80 प्रतिशत है[21,22]। अमरीका में बड़े बैंकों और इज़ारेदार कंपनियों को संकट से बचाने के लिये सरकार द्वारा लिये गये उधार की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कीमत 29 खरब डॉलर से ऊपर है जो कि वार्षिक आर्थिक उत्पाद के 1.5 गुना से ज्यादा है[22]।

कई यूरोपीय सरकारें, जैसे कि आइसलैंड, यूनान, पुर्तगाल, इटली और स्पेन की सरकारें अंतर्राष्ट्रीय बैंकों के भारी कर्ज़ बोझ का शिकार बन गयीं। बैंकों ने उन्हें अपनी अर्थव्यवस्थाओं को तथाकथित प्रोत्साहन देने के लिये भारी कर्ज़ा लेने को प्रेरित किया था परन्तु उनका असली मकसद था बैंकों के मुनाफ़ों को बढ़ाना। जब इन सरकारों के लिये इन कर्ज़ों को चुकाना कठिन हो गया, तब यूरोपीय केन्द्रीय बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने मिलकर कर्ज़दार राज्यों पर "कमखर्ची" के कदम लागू करने का दबाव डाला। इसका मतलब था साहूकार संस्थानों को किये गये वादों को

पूरा करने के लिये, सामाजिक खर्च में भारी कटौती और मज़दूरों के वेतनों में और भी कटौती। इसके कारण वस्तुओं और सेवाओं की मांग और घट गयी, जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था और सिकुड़ गयी। इन देशों के अधिकतम लोगों को, पूंजीवादी बैंकों के मुनाफ़ों को बचाये रखने के लिये, बड़ी आर्थिक कठिनाइयां झेलनी पड़ी हैं।

यूनान की अर्थव्यवस्था वित्तीय संकट से और यूरोपीय केन्द्रीय बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के समर्थन के साथ, बहुराष्ट्रीय बैंकों द्वारा थोपे गये भयानक कमखर्ची के कदमों से अभी भी तड़प रही है। उसकी अर्थव्यवस्था 2009 की तुलना में 25 प्रतिशत से सिकुड़ गयी है। यूनानी मज़दूरों की औसतन आमदनी और भी तेज़ी से गिरी है। 2010, 2012 और 2015 में क्रमशः तीन बार बैंकों को बचाने के लिये दिये गये उधारों की वजह से, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, यूरोपीय केन्द्रीय बैंक और यूरोपीय आयोग ने यूनान की सरकार पर सामाजिक खर्च में भारी कटौती करने की शर्त थोप दी। इसकी वजह से यूनानी सरकार को वेतनों और पेंशनों में और कटौती करनी पड़ी है। जबकि यह प्रचार किया गया कि बैंकों को धन देना यूनान को संकट से बचाने का कदम है, परन्तु वास्तव में उन बहुराष्ट्रीय बैंकों के मुनाफ़ों को सुरक्षित रखने के लिये ही ऐसा किया गया, जिन्होंने यूनान को बेतहाशा उधार दिया था[23]।

दुनिया के मुख्य पूंजीवादी राज्यों ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं को संकट से निकालने की कोशिश करते हुए, बहुत सारे नोट छापे हैं और उन्हें शून्य या लगभग शून्य ब्याज दर

पर बैंकों को उपलब्ध कराये हैं। यह कहा गया था कि इस सस्ते धन से पूंजीपतियों को उधार दिया जायेगा, ताकि वे उत्पादन के साधन और रोज़गार पैदा करेंगे और इस तरह वस्तुओं व सेवाओं की मांग को प्रोत्साहित करेंगे। अमरीकी राज्य ने 2008 और 2015 के बीच में, घरेलू अर्थव्यवस्था में 3.7 खरब डॉलर डाला; जबकि ब्रिटेन द्वारा दिये गये 650 अरब डॉलर के अलावा, यूरोपीय संघ ने ब्रिटेन में लगभग एक खरब डॉलर डाला[24]। परन्तु इससे उत्पादन के लिये पूंजी निवेश और रोज़गार में संवर्धन नहीं हुआ, बल्कि वित्त संस्थानों और इज़ारेदार कंपनियों ने सस्ते धन की इस बेशुमार राशि के अधिकतम भाग को बाज़ार में सट्टेबाजी करने तथा जल्दी से मुनाफ़ा कमाने के लिये इस्तेमाल किया। इसकी वजह से शेयर बाज़ार और भूमि–भवन की कीमतों में नये–नये कृत्रिम गुब्बारे बने हैं। जब ये गुब्बारे फूटेंगे तो संकट और गहरा होगा।

पूंजीवादी राज्यों ने "श्रम सुधारों" के नाम पर सारी दुनिया में मज़दूर वर्ग पर एक बड़ा हमला शुरू किया है। वे "नौकरियां पैदा करने" और "आर्थिक संवर्धन सुनिश्चित करने" के नाम पर, श्रम कानूनों में ऐसे परिवर्तनों को जायज़ ठहरा रहे हैं, जो पूंजीपतियों के पक्ष में हैं। इन परिवर्तनों का मकसद है मज़दूरों को अपने अधिकारों से वंचित करना तथा पूंजीवादी मालिकों को श्रम के शोषण को अप्रत्याशित हद तक तेज़ करने की छूट देना।

जापानी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपनी श्रमशक्ति के बहुत बड़े हिस्से से स्थायी मज़दूरों को हटाकर, अस्थायी मज़दूर

रखे हैं, जिन्हें कोई रोज़गार की सुरक्षा और अधिकारों के लिये कानूनी सुरक्षा नहीं मिलती हैं। 2009 में जापान की श्रमशक्ति का एक–तिहाई से अधिक हिस्सा इस प्रकार के गैर–परम्परागत मज़दूर थे। 1997 में जापान के मज़दूरों के वेतन शिखर पर थे, जिसकी तुलना में आज असली वेतन 13 प्रतिशत से अधिक गिरे हैं – जो कि दुनियाभर में वेतनों की सबसे अधिक गिरावटों में एक है। आज जापान में सरकारी कर्ज़ा दुनिया में सबसे अधिक है – सकल घरेलू उत्पाद का 240 प्रतिशत[25]। ब्याज दर इस समय नकारात्मक है, जिसका यह मतलब है कि लोगों को बैंकों में अपनी बचत के धन को रखने के लिये कीमत देनी पड़ती है और बैंकों को उध ाार लेने वालों को कीमत देनी पड़ती है। इसका उद्देश्य है लोगों को उधार पर खरीददारी करने को प्रोत्साहित करना, न कि भविष्य के लिये बचत करना।

वैश्विक मंदी की हालतों का सामना करने के लिये चीनी राज्य ने घरेलू बैंकों से उधार लेकर ढांचागत क्षेत्र में सरकारी निवेश को खूब बढ़ा दिया। इस निवेश का उद्देश्य था इस्पात, सीमेंट, ऊर्जा और अन्य सामग्रियों की मांग बढ़ना और वैश्विक मंदी के फलस्वरूप निर्यातों के घटने से हुए नुकसान की भरपाई करना। परन्तु अब इस नीति में कोई जान नहीं बची है। आज चीन पर अत्यधिक विनिर्मित वस्तुओं, ढांचागत निर्माणों और आवासों का भारी बोझ है। सरकारी कर्ज़े और कंपनियों के कर्ज़े के अप्रत्याशित स्तरों की वजह से वहां वित्तीय संकट का खतरा मंडरा रहा है।

दुनियाभर की बड़ी इज़ारेदार कंपनियों ने बीते तीन दशकों में अपने–अपने देशों में विनिर्माण का काम बंद कर दिया, जिसकी वजह से लाखों–लाखों मज़दूर बेरोज़गार हो गये। उन्होंने चीन की विशाल सस्ती नौजवान श्रमशक्ति और सस्ते कच्चे माल का शोषण करने के लिये, अपने उत्पादन को चीन में लाकर स्थापित किया। चीन सारी दुनिया में सप्लाई करने वाला, सभी प्रकार की वस्तुओं के विनिर्माण का सबसे बड़ा केन्द्र बन गया। चीन को 'दुनिया की फैक्टरी' कहा जाने लगा। जबकि दुनिया की अर्थव्यवस्था में चीन का हिस्सा मात्र 15 प्रतिशत है, तो सीमेंट और इस्पात उत्पादन में चीन की क्षमता सारी दुनिया की क्षमता का आधा हिस्सा बन गयी है। जब निर्यात शिखर पर था तब चीन के सकल घरेलू उत्पाद का 40 प्रतिशत निर्यातों से आता था। इसकी वजह से चीन दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था बन गया और उसका सकल घरेलू उत्पाद जापान से भी आगे बढ़कर दुनिया के दूसरे स्थान पर आ गया[26]।

निर्यातों और विदेशी पूंजी निवेशों से प्रेरित, तेज़ गति से हुई पूंजीवादी वृद्धि की वजह से चीन की अर्थव्यवस्था बहुत ही असंतुलित हो गयी है। वह चीनी मज़दूर वर्ग के अधिकतम शोषण के आधार पर, चीनी और विदेशी इज़ारेदार पूंजीपतियों के लिये अधिकतम मुनाफ़े पैदा करती है, जिसकी वजह से घरेलू उपभोग बहुत घट गया है। उत्तरी अमरीका और यूरोप में मंदी का चीन की निर्यात–उन्मुख अर्थव्यवस्था पर भारी असर पड़ा। इसका मुकाबला करने के लिये चीन की सरकार ने जो कदम लिये, जैसे कि लोगों को

सस्ती ब्याज दर पर उधार उपलब्ध कराना, शेयर बाज़ार में बार–बार हस्तक्षेप करना तथा प्रांतों में ढांचागत क्षेत्रों में बढ़–चढ़कर सरकारी निवेश करना, इनसे वैश्विक संकट के नकारात्मक प्रभाव को कुछ समय तक टाला जा सका। परन्तु अर्थव्यवस्था में गिरावट को रोका न जा सका। अब चीन की अर्थव्यवस्था बहुत भारी संकट की चपेट में है। उत्पादन की क्षमताएं बड़े पैमाने पर बेशी हो गयी हैं तथा लाखों–लाखों मज़दूर बेरोज़गार हो गये हैं।

चीनी नेता अब यह घोषणा कर रहे हैं कि उनका उद्देश्य अर्थव्यवस्था में फिर से संतुलन लाना है। वे कह रहे हैं कि इसके लिये निर्यात पर निर्भरता घटायी जायेगी तथा चीन में किये गये उत्पादों की कुल मांग में घरेलू उपभोग का हिस्सा बढ़ाया जायेगा। परन्तु ऐसा कहना आसान है और करना मुश्किल। इसके लिये पूंजीवादी मुनाफ़ों में कटौती करके मज़दूरों के वेतनों में वृद्धि करनी होगी, जिसे चीनी और विदेशी इज़ारेदार पूंजीवादी कंपनियां कभी नहीं मानेंगी।

संकट का सामना करने के लिये हिन्दोस्तानी राज्य ने कुछ हद तक सरकारी निवेश को बढ़ा दिया, परन्तु उतना नहीं जितना कि चीन में किया गया था। राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (नरेगा) पर खर्च को बढ़ाया गया ताकि ग्रामीण आबादी की उपभोग की चीजों के लिये मांग बढ़ जाये। 2008–09 और 2009–10 में लागू किये गये वेतन आयोग से भी गाड़ियों, अन्य टिकाऊ वस्तुओं, आदि की अतिरिक्त मांग पैदा हुई। परन्तु ये कदम सामयिक पीड़ाहार

ही थे। वे अनिवार्य आर्थिक गिरावट को मात्र कुछ समय के लिये टाल सके, पर रोक न सके।

2015 में देश में बीते 50 वर्षों में सबसे भयानक सूखा पड़ा, जिसका देश के एक चौथाई क्षेत्रफल पर असर पड़ा। इससे पहले 2014 में भी सूखा पड़ा था। किसान भारी कर्ज़े में फंस गये और तबाह हो गये। करोड़ों लोग पीने के पानी के बिना तड़प रहे थे। कृषि अर्थव्यवस्था में काफी गिरावट आयी और उपभोग की वस्तुओं के लिये ग्रामीण लोगों की मांग बहुत कम हो गयी। इस समय हमारे देश में किसानों के सामने एक अप्रत्याशित संकट है। यह परिस्थिति साल दर साल बद से बदतर होती जा रही है। राज्य क्रमशः बीज, बिजली, सिंचाई का जल और उर्वरक की सस्ते दामों पर आपूर्ति सुनिश्चित करने तथा किसानों को अपने उत्पादों की लाभदायक दामों पर खरीदी सुनिश्चित करने की अपनी जिम्मेदारी से पीछे हट रहा है। खाद्य पदार्थों के व्यापार को हिन्दोस्तानी और विदेशी इज़ारेदारों के लिये खोल कर, जो भी सार्वजनिक खरीदारी की व्यवस्था बनाई गयी थी, उसे जानबूझकर बर्बाद किया जा रहा है। कृषि की ज़रूरी चीजों की कीमतें, जो बड़ी इज़ारेदार पूंजीवादी कंपनियों द्व ारा नियंत्रित की जाती हैं, हर साल क्रमशः बढ़ती जा रही हैं। किसानों पर दोनों तरफ से शिकंजा कसा जा रहा है। किसानों पर कर्ज़ों के असहनीय बोझ का अंदाजा 2008 से देश के अलग–अलग इलाकों में किसानों की आत्महत्याओं की बढ़ती संख्या – जो लाखों में बतायी जाती है – से लगाया जा सकता है।

ऐसे समय पर जब दुनियाभर के इज़ारेदार पूंजीपतियों के पास बहुत ज्यादा पूंजी है और वे उसका निवेश करके अधिकतम मुनाफ़े कमाने के मौकों का बेतहाशा तलाश कर रहे हैं, तो हिन्दोस्तान को बहुराष्ट्रीय कंपनियों और इज़ारेदार बैंकों के पूंजी निवेश के लिये सबसे आकर्षक स्थान बतौर प्रस्तुत किया जा रहा है। हिन्दोस्तान में *"ईज़ ऑफ डूईंग बिज़नेस* (कारोबार चलाना सुगम बनाना)" के नाम पर, हिन्दोस्तानी और विदेशी पूंजीपतियों के लिये, हिन्दोस्तान के नौजवान मज़दूर वर्ग का अति शोषण करके और किसानों व आदिवासियों को लूटकर, अधिकतम मुनाफ़े बनाने के रास्ते में सारी रुकावटें हटाई जा रही हैं।

हिन्दोस्तान के बड़े पूंजीपति अपने देश को विश्व बाज़ार के लिये ऊंची कीमत के खाद्य पदार्थों का स्रोत और विनिर्माण केन्द्र बनाना चाहते हैं और इसके साथ–साथ, चिकित्सा पर्यटन तथा लेखा कार्य (अकाउंटिंग) की सहायक सेवाओं का पसंदीदा गंतव्य स्थान भी बनाना चाहते हैं। वे *"मेक इन इंडिया"* के झंडे तले, विदेशी पूंजी की मदद और सहकार्य के साथ, उद्योग और कृषि व्यवसाय में तेज़ गति से वृद्धि हासिल करना चाहते हैं।

इस कार्यक्रम की सफलता के लिये एक अनिवार्य शर्त यह है कि हमारे देश में पूंजीवादी मुनाफ़े की दर को दूसरे देशों से काफी ऊंचा रखा जाये, ताकि दुनिया के बड़े–बड़े बैंकों और पूंजीवादी कंपनियों को यहां पूंजी निवेश करने के लिये आकर्षित किया जा सके। बड़े सरमायदार इस शर्त को पूरा करने के लिये अलग–अलग तरीके अपना रहे हैं। वे श्रमजीवी वर्ग के वेतनों और काम की हालतों को घटाना

चाहते हैं। वे कृषि बाज़ारों में राज्य के दायित्व को पूरी तरह हटाना चाहते हैं, ऊंची उपज वाले बीजों की आपूर्ति में वैश्विक इज़ारेदार कंपनियों के वर्चस्व को बढ़ावा देना चाहते हैं और एक समान देशव्यापी वस्तु और सेवा कर (जी.एस.टी.) लागू करना चाहते हैं, जो यह सुनिश्चित करेगा कि अप्रत्यक्ष करों का पूरा बोझ अंतिम उपभोक्ता पर होगा, न कि पूंजीवादी उत्पादकों पर। बड़े सरमायदार पूंजीवादी निवेशकों के प्रत्याशित मुनाफ़ा दरों को बढ़ाने के उद्देश्य से, उन्हें बड़े–बड़े टैक्स छूट देना चाहते हैं। वे कानूनी और नियामक ढांचे स्थापित करने के प्रयास कर रहे हैं, ताकि पूंजीवादी निवेशकों के लिये, कारोबार शुरू करने के लिये भूमि अधिग्रहण करना व आवश्यक इजाज़त पाना और आसान व जल्द हो सके। वे सरकारी खर्च को विश्व–स्तरीय परिवहन व्यवस्था का ढांचा बनाने तथा सैनिक ताक़त को बढ़ाने पर केन्द्रित करना चाहते हैं।

दूसरे देशों की तुलना में, हमारे देश की सस्ती परन्तु बहुत ही उत्पादक और जवान श्रमशक्ति का अतिशोषण, किसानों की और तेज़ी से व और विस्तृत पैमाने पर लूट, प्राकृतिक संसाधनों की लूट, सैन्यीकरण और राजकोष की लूट – ये सब इस समय अपनाये जा रहे "संवर्धन" के नमूने के अलग–अलग पहलू हैं।

सारांश में, बीते आठ वर्षों का अनुभव यह भी दिखाता है कि पूंजीपति वर्ग की सेवा करने वाले राज्यों के पास आर्थिक संकट का कोई समाधान नहीं है। वे जो कदम उठाते हैं, इज़ारेदार पूंजीपतियों के संकीर्ण हितों की सेवा के लिये

उठाते हैं, जिनकी वजह से संकट और गंभीर होता जाता है। पूंजीवाद बहुत ही परजीवी बन गया है और बार–बार संकट व अस्त–व्यस्तता फैलाये बिना, नौकरियों और रोज़गार के स्रोतों का विनाश किये बिना और साम्राज्यवादी जंग द्वारा पूरे–पूरे राष्ट्रों को नष्ट किये बिना, अपना जीवनकाल नहीं बढ़ा सकता है।

शोषकों और शोषितों के बीच अंतर्विरोध

साथियों,

हाल के वर्षों में मज़दूर वर्ग और लोगों के विरोध संघर्षों की संख्या और तीव्रता बड़े दर्शनीय रूप से बढ़ गयी है। 2006–13 के दौरान, 87 देशों में 843 विरोध संघर्षों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि 37 विरोध संघर्षों में 10 लाख या उससे अधिक लोगों ने भाग लिया था[27]। इनमें हमारे देश के सभी ट्रेड यूनियनों द्वारा आयोजित सर्व हिन्द विरोध कार्यक्रम और एक या दो दिवसीय आम हड़तालें शामिल हैं। हाल के वर्षों में, इनमें भागीदारी बहुत बढ़ गयी है, यहां तक कि इस वर्ष 2 सितम्बर, 2016 को पूरे देश में 16 करोड़ मज़दूरों ने सर्व हिन्द आम हड़ताल में हिस्सा लिया है।

दुनियाभर के मज़दूर वर्ग और लोग आमदनी और दौलत की बढ़ती असमानता पर अपना गुस्सा जाहिर कर रहे हैं। वे बढ़ते संकल्प के साथ इसका विरोध कर रहे हैं और पूंजीवादी हमले के खिलाफ़ अधिक से अधिक शक्तिशाली

व एकजुट संघर्ष कर रहे हैं। उनके संघर्ष राष्ट्रीय सीमाओं को भी पार कर रहे हैं। पूरे महाद्वीप के स्तर पर बहुत सारे जन प्रतिरोध संघर्ष किये गये हैं और अंतर्राष्ट्रीय तौर पर मनाये जा रहे संघर्ष–दिवसों की संख्या बढ़ती जा रही है।

2008 से दुनिया के स्तर पर पूंजीवादी मुनाफ़े की औसतन दर में भारी गिरावट आयी है। विश्व स्तर पर, प्रमुख कंपनियों के लिये इक्विटी पर मुनाफ़ा 2005 में 16 प्रतिशत से घटकर, 2014 में 12 प्रतिशत हो गया है। इसी अवधि में, हिन्दोस्तान में गैर–वित्तीय सार्वजनिक सीमित दायित्व कंपनियों (नॉन फाइनेंशियल पब्लिक लिमिटेड कंपनियों) में लगाई गयी पूंजी की मुनाफ़ा दर 30 प्रतिशत से घटकर 15 प्रतिशत हो गयी[28]। दुनिया के पूंजीपति अभी तक वह मुनाफ़ा दर वापस नहीं ला पाये हैं जो संकट से पहले उन्हें मिल रही थी। इसका मुख्य कारण यह है कि मज़दूर वर्ग और मेहनतकश लोग अपने शोषण के और बढ़ाये जाने का जमकर विरोध कर रहे हैं।

आर्थिक संकट के लिये कौन जिम्मेदार है और किसे इसका बोझ उठाना चाहिये? किसके दावों को प्राथमिकता देनी चाहिये, श्रमजीवी बहुसंख्या के दावों को या परजीवी अति–अमीर अल्पसंख्या के दावों को? देश के भविष्य पर किसे फैसला करना चाहिये, जंग फ़रोश साम्राज्यवादियों को या संपूर्ण जनता को? ये सवाल उत्तरी अमरीका और यूरोप के सबसे विकसित पूंजीवादी देशों में उठ रहे हैं। मज़दूर, महिला और नौजवान यह मानने को तैयार नहीं हैं कि उन्हें पूंजीवादी सट्टेबाजों द्वारा पैदा किये गये संकट का बोझ

झेलना चाहिये। वे पूंजीवादी बैंकों के मुनाफ़ों को बनाये रखने के लिये उन पर थोपी गयी "कमखर्ची" को स्वीकार करने से इनकार कर रहे हैं। वे अपने दावों पर जोर दे रहे हैं और अपने अधिकार बतौर इन दावों की पूर्ति की मांग कर रहे हैं। वे यह सवाल उठा रहे हैं कि पूंजीवादी इज़ारेदारों को सुनिश्चित मुनाफ़ों का "अधिकार" क्यों देना चाहिये।

अमरीका और कनाडा में सार्वजनिक सेवाओं में काम करने वाले मज़दूरों ने कई महत्वपूर्ण संघर्ष किये हैं। उन्होंने समाज–विरोधी पूंजीवादी प्रचार, कि सरकारी सेवाओं के मज़दूर समाज पर एक बोझ हैं, को चुनौती दी है और यह ऐलान किया है कि परजीवी वित्त पूंजी के खून चूसने वाले नवाब ही समाज पर सबसे बड़े बोझ हैं। सभी सार्वजनिक सेवाओं के दसों–हजारों मज़दूरों ने अनेक विरोध प्रदर्शनों में भाग लेकर अपने अधिकारों की मांग उठाई है और सार्वजनिक सेवाओं के निजीकरण का विरोध किया है। वॉलमार्ट के मज़दूर जो निजी क्षेत्र में सबसे अधिक शोषित मज़दूरों में गिने जाते हैं, उन्होंने बेहद कम वेतनों, काम की कठिन हालतों और रोज़गार की पूर्ण असुरक्षा के खिलाफ़ कई लड़ाकू संघर्ष किये हैं।

फ्रांस और बेल्जियम में दसों–लाखों मज़दूरों ने अपनी सरकारों से श्रम कानूनों में मज़दूर–विरोधी परिवर्तनों को वापस लेने की मांग की है और इस मांग को लेकर सड़कों पर प्रदर्शन किये हैं। बेल्जियम और फ्रांस के मज़दूरों के जन संघर्षों को न सिर्फ उनके अपने–अपने देशों के छात्रों व लोगों का, बल्कि जरमनी, नेदरलैंड्स, ब्रिटेन व अन्य देशों

के मज़दूरों और इंसाफ–पसंद लोगों का भी समर्थन मिला है।

पूरे यूरोप में लोग सार्वजनिक सामाजिक सेवाओं की भारी कटौती और विनाश का बढ़–चढ़कर विरोध कर रहे हैं। मज़दूर, महिलाएं और नौजवान इस असूल पर संघर्ष कर रहे हैं कि शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, बेरोज़गारी बीमा, पेंशन, विशेष ज़रूरतमंद तबकों की सेवा और अन्य सामाजिक सेवाएं लोगों के अधिकार हैं जिन्हें एक आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य को सुनिश्चित करना होगा। सरमायदार इन्हें विशेष अधिकार या "सहूलियत" मानते हैं, जिन्हें "कमखर्ची के कदमों" के नाम पर वापस लिया जा सकता है। मेहनतकश लोग इसे मानने से इनकार कर रहे हैं।

फ्रांस, ब्रिटेन और यूरोप के अन्य देशों के विश्वविद्यालयों के छात्रों ने राज्य द्वारा सरकारी शिक्षा की फंडिंग में कटौती और छात्रों से लिये जाने वाले शुल्कों में वृद्धि के खिलाफ़ कई ज़ोरदार संघर्ष किये हैं। ब्रिटेन की नेशनल हेल्थ सर्विस के डॉक्टर और नर्स निजी मुनाफ़ाखोर कंपनियों के हित के लिये देश की सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था के विनाश के खिलाफ़ जुझारू संघर्ष करते आये हैं।

चीन में जनवरी 2016 में मज़दूरों के संघर्षों में बहुत वृद्धि देखी गयी। 500 से अधिक हड़तालों और विरोध प्रदर्शनों की खबरें मिलीं[29]। इस वर्ष कोयला खदानों के दसों–हजारों मज़दूरों ने, कई दिनों तक लगातार प्रदर्शन आयोजित किये हैं, जिनमें उन्होंने एक सरकारी खनन कंपनी द्वारा बीते कई

महीनों से वेतन न दिये जाने का विरोध किया। चीन की अर्थव्यवस्था इस समय भारी मंदी से गुजर रही है, जिसकी वजह से कोयला, इस्पात और अन्य बुनियादी उद्योगों में नौकरियों की कटौती घोषित की गयी है और इसके खिलाफ़ मज़दूरों का विरोध बढ़ रहा है। विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में अनेक कंपनियां बंद की जा रही हैं, उनके मज़दूरों को निकाला जा रहा है तथा कंपनी मालिक उन्हें बकाया वेतन, भत्ते और मुआवज़ा देने से इनकार कर रहे हैं। पर्ल रिवर डेल्टा और पूर्वी तटीय प्रदेशों की फैक्टरियों तथा कई नये सेवा उद्योगों में सैकड़ों मज़दूरों के विरोध संघर्ष हुए हैं। राजकीय और निजी पूंजीवादी क्षेत्रों के मज़दूरों के बढ़ते विरोध का सामना करते हुए, चीन की सरकार को निजीकरण, छंटनी और नौकरियों की कटौती की गति को कुछ कम करना पड़ा है।

हिन्दोस्तान में बीते छः वर्षों में मज़दूर वर्ग के संयुक्त विरोध में काफी वृद्धि देखने में आयी है। पूरे देशभर में करोड़ों–करोड़ों मज़दूर विरोध संघर्षों में भाग ले रहे हैं। मज़दूरों ने खाद्य पदार्थों और अन्य ज़रूरी वस्तुओं की आसमान छूने वाली कीमतों को घटाने की मांग की है। उन्होंने निजीकरण और श्रम कानूनों में पूंजी केन्द्रित सुधारों का एकजुट होकर विरोध किया है। उन्होंने भविष्य निधि तथा कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई.सी.) के तहत स्वास्थ्य सेवाओं के लिये जमा किये गये उनके कठिन मेहनत की बचत के धन को जोखिम भरे पूंजी निवेशों में डालने की केन्द्र सरकार की कोशिशों का एकजुट विरोध किया है। मज़दूर एकजुट होकर यह मांग कर रहे हैं कि ठेका मज़दूरी को खत्म किया

जाये और सभी मज़दूरों को सामाजिक सुरक्षा दी जाये। वे यह मांग कर रहे हैं कि न्यूनतम वेतन उतना दिया जाये जितना इंसान बतौर सम्मानजनक जीवन जीने के लिये ज़रूरी है और उसे महंगाई के साथ बढ़ाया जाये। वे अनेक क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी पूंजी निवेश को बढ़ाने के फैसले का विरोध कर रहे हैं। वे मांग कर रहे हैं कि ट्रेड यूनियन के पंजीकरण की अर्जी देने के 45 दिनों के अंदर ट्रेड यूनियन का पंजीकरण किया जाये।

नियमित तौर पर सर्व हिन्द विरोध प्रदर्शन आयोजित किये जाते हैं, जिनमें हर शहर में दसों–हजारों मज़दूर भाग लेते हैं। हर साल कम से कम एक सर्व हिन्द आम हड़ताल होती है, जिसमें करोड़ों मज़दूर भाग लेते हैं और इनमें भाग लेने वाले मज़दूरों की संख्या साल दर साल बढ़ती जा रही है। बैंकों, बीमा कंपनियों, बिजली कंपनियों, हवाई परिवहन कंपनियों और कई अन्य क्षेत्रों के मज़दूर आउटसोर्सिंग और तरह–तरह से निजीकरण के कदमों समेत मज़दूर–विरोधी नीतियों के खिलाफ़ बार–बार हड़ताल कर रहे हैं।

हाल के वर्षों में जो सर्व हिन्द हड़तालें आयोजित की गयी हैं, उनमें सिर्फ बड़े उद्योगों और सेवाओं की यूनियनों में संगठित मज़दूर ही नहीं भाग लेते हैं। लाखों–लाखों मज़दूर जो यूनियनों में संगठित नहीं हैं, जिनमें तरह–तरह के उद्योगों और सेवाओं के ठेका मज़दूर भी शामिल हैं, अब इन हड़तालों में सक्रियता से भाग ले रहे हैं। सैकड़ों जुझारू यूनियनें जो केन्द्रीय ट्रेड यूनियन संघों से नहीं जुड़ी हुई हैं, वे भी नियमित तौर पर इन जन प्रदर्शनों में भाग ले रही हैं।

देशभर के मज़दूर वर्ग के बढ़ते विरोध संघर्षों का सामना करते हुए, केन्द्र सरकार श्रम कानूनों में बहुत से सुधारों, जिनकी हिन्दोस्तानी और विदेशी इज़ारेदार कंपनियां बार–बार मांग करती आ रही हैं, उन्हें लागू करने में नाकामयाब रही है। चूंकि श्रम को एक समवर्ती विषय माना जाता है, अतः इसका इस्तेमाल करके राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश समेत कई राज्यों ने केन्द्रीय ठेका मजदूरी अधिनियम और फैक्टरी अधिनियम की जगह पर अपने अलग कानून बनाये हैं जो वहां के पूंजीपतियों की ज़रूरतों के अनुसार हैं। 9 अगस्त, 2016 को लगभग 70,000 मज़दूरों ने हरियाण ाा के करनाल शहर की सड़कों पर उतरकर, हरियाणा विध ाान सभा द्वारा पास किये गये मज़दूर–विरोधी कानूनों को रद्द करने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया।

हिन्दोस्तान में यूनियनों में संगठित बैंक कर्मियों की संख्या सबसे अधिक है। सिर्फ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में ही दस लाख से अधिक मज़दूर यूनियनों में संगठित हैं। वे निजी बैंकों के साथ स्पर्धा के नाम पर बढ़ते शोषण के खिलाफ़ डटकर संघर्ष करते आ रहे हैं। बैंकिंग क्षेत्र में अलग–अलग नाम से निजीकरण करने के जो तमाम प्रस्ताव किये जा रहे हैं, उस सभी का बैंक कर्मचारी विरोध करते आये हैं। एक के बाद दूसरी सरकार ने बैंकिंग क्षेत्र पर संकीर्ण निजी पूंजीवादी हितों की सेवा में पूंजी–केन्द्रित दिशा थोपने के प्रयास किये हैं। इन सभी प्रयासों को बैंक कर्मचारियों ने चुनौती दी है। उन्होंने सामाजिक बैंकिंग की मांग उठाई है। उन्होंने मांग की है कि बैंकिंग क्षेत्र के काम को समाज और उसके सामंजस्यपूर्ण पुनरुत्पादन और विकास की ज़रूरतों

को पूरा करने की दिशा में चलाया जाये, न कि मुट्ठीभर पूंजीपतियों के निजी मुनाफ़ों को अधिकतम करने की दिशा में।

देश के अलग–अलग भागों में नयी औद्योगिक बस्तियों के मज़दूरों ने अपने अधिकारों के लिये कई जुझारू संघर्ष किये हैं। इनमें ऑटोमोबील, टेलीकॉम और वस्त्र उद्योग की बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मज़दूर शामिल हैं। वे अपनी पसन्द के ट्रेड यूनियनों में संगठित होने के अधिकार के लिये संघर्ष कर रहे हैं। गुड़गांव–मानेसर औद्योगिक पट्टी, जो दिल्ली की सीमा से शुरू होकर हरियाणा और राजस्थान से गुजरती है, इसमें पुलिस और निजी सुरक्षा बलों द्वारा बलपूर्वक मज़दूरों के अधिकारों को छीनने की कोशिशों के खिलाफ़ मज़दूरों के बड़े–बड़े संयुक्त संघर्ष हुए हैं। चेन्नई के पास श्रीपेरम्बुदुर औद्योगिक पट्टी में और बेंगालूरू, पुणे तथा गुजरात व अन्य राज्यों के औद्योगिक शहरों में तथा आसपास की औद्योगिक बस्तियों में भी ऐसा ही हो रहा है। कई क्षेत्रों की फैक्टरियों में मज़दूर एकता कमेटी समेत नये प्रकार के श्रमजीवी संगठन उभर कर आये हैं।

अपनी रोज़ी–रोटी पर हमलों के खिलाफ़ किसानों के संघर्ष देश के सभी इलाकों में तेज़ हो रहे हैं। लागत के बढ़ते खर्च और अपने उत्पादों के लिए मिलने वाली कीमत के घटने से, किसानों को तबाही का सामना करना पड़ रहा है। कृषि व्यापर की हिन्दोस्तानी और अंतर्राष्ट्रीय विशाल इज़ारेदार कम्पनियां बाज़ार पर अधिक से अधिक हावी हो रही हैं, जिससे किसान जनसमुदाय की असुरक्षा बढ़ती जा

रही है। किसान अधिक से अधिक हद तक, विश्व बाज़ार में कीमतों के उतार–चढ़ाव के शिकार बन रहे हैं। चाहे अत्यधिक फसल हो या फसल खराब हो जाए, दोनों ही हालतों में किसान तबाह हो जाते हैं। बैंकों और साहूकारों के कर्ज़े बढ़ते रहते हैं, और साहूकारों के हाथों अपनी ज़मीन खो देने का डर लगातार किसानों पर मंडराता रहता है। किसान यह मांग कर रहे हैं कि राज्य उन्हें रोजगार की सुरक्षा दिलाने का अपना दायित्व निभाए। इसके लिए, राज्य को किसानों के सारे उत्पादों की लाभदायक दाम पर खरीदी सुनिश्चित करनी होगी।

औद्योगिक और व्यवसायिक प्रयोग के लिये भूमिगत खनिज संपदा का शोषण करने के उद्देश्य से, राज्य के समर्थन के साथ, बड़े पूंजीपतियों के भूमि अधिग्रहण करने के प्रयासों के खिलाफ़ किसान और आदिवासी लगातार संघर्ष कर रहे हैं। राजग सरकार ने जब भूमि अधिग्रहण और मुआवज़ा अधिनियम में पूंजीवादी भूमि लुटेरों के पक्ष में संशोधन लाने की कोशिश की, तो किसानों और मज़दूर वर्ग के सख्त विरोध की वजह से उसे मुंह की खानी पड़ी। जैसा कि श्रम कानूनों के साथ किया जा रहा है, वैसे ही केन्द्र सरकार अब राज्य सरकारों को भूमि अधिग्रहण कानून में उन संशोधनों को लाने को प्रोत्साहित कर रही है। अगस्त 2016 में, गुजरात विधान सभा में इसी मुद्दे पर पास किये गये कानून को राष्ट्रपति ने सहमति दे दी।

करोड़ों नौजवान, महिला और पुरुष श्रमशक्ति में प्रवेश कर रहे हैं, परन्तु उनके लिये नौकरियों का भारी अभाव

है। इसकी वजह से ग्रामीण हिन्दोस्तान के कई भागों में सामूहिक स्तर पर असंतोष और अशांति फैल रही है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, 'कृषि दंगों' की संख्या 2014 में 628 से बढ़कर 2015 में 2,683 हो गयी है। इस प्रकार की ग्रामीण अशांति के सबसे अधिक कांड बिहार (1,156 कांड), उत्तर प्रदेश (752 कांड), झारखंड (303 कांड) और गुजरात (126 कांड) में हुए हैं[30]। राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (नरेगा) के तहत पंजीकृत ग्रामीण मज़दूरों की यूनियनों का तेज़ गति से गठन हो रहा है। इससे रोज़गार के अधिकार की हिफ़ाज़त में तथा कानूनी न्यूनतम वेतन से कम वेतन न स्वीकार करने के पक्ष में अनेक शक्तिशाली संघर्ष हो रहे हैं। ग्रामीण मज़दूरों की यूनियनों ने अपने संघर्ष में यह मांग भी उठाई है कि अगर उन्हें गारंटी दिये गये दिनों के लिये काम नहीं मिलता है तो उन्हें मुआवज़े का अधिकार दिया जाये और रोज़गार की गारंटी वाले दिनों की संख्या भी बढ़ाई जाये।

उच्च शिक्षा के निजीकरण और व्यवसायीकरण के खिलाफ़ छात्रों और विश्वविद्यालयों के शिक्षकों ने अनेक संघर्ष किये हैं। केन्द्रीय और राज्य विश्वविद्यालयों के शिक्षकों और छात्रों का अडिग संघर्ष उच्च शिक्षा को विदेशी पूंजीवादी निवेशकों के लिये खोल देने के कार्यक्रम के रास्ते में एक रुकावट बन कर खड़ा है।

कई शहरी इलाकों में मेहनतकश लोग आवास, बिजली, पानी की सप्लाई, स्वच्छ पेय जल और शौच व्यवस्था, स्कूल, स्वास्थ्य केन्द्र, सड़क, यातायात की जन सुविधा, राशन कार्ड

के ज़रिये पर्याप्त खाद्य सुरक्षा, इत्यादि जैसे मूल अधिकारों के लिये संगठित और एकजुट संघर्ष कर रहे हैं। ग्रामीण इलाकों में कई जन समितियां सक्रिय हैं जो सिंचाई और कृषि की अन्य ज़रूरतों के अलावा, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा के लिये संघर्ष कर रही हैं। पार्टीवादी दुश्मनियों से ऊपर उठकर, इन जन समितियों ने महिलाओं की सुरक्षा तथा साम्प्रदायिक हिंसा और अन्य प्रकार के राजकीय आतंकवाद के पीड़ितों के लिये इंसाफ जैसे सांझे हित के अनेक मुद्दों को उठाया है।

तिरूपुर, बेंगलूरू, विजयवाड़ा, गुड़गांव और कई अन्य केंद्रों में लाखों–लाखों वस्त्र मज़दूरों ने खूंखार शोषण और अमानवीय काम की हालतों के खिलाफ़ अपना संघर्ष तेज़ कर दिया है। अधिकतम वस्त्र (गारमेंट) मज़दूर जवान लड़कियां और महिलायें हैं। उन्होंने मज़दूर वर्ग के एकजुट जुझारू विरोध संघर्षों में सक्रिय भूमिका निभाई है और केन्द्र सरकार को अपनी फरवरी 2016 की घोषणा को वापस लेने को मजबूर किया है, जिसके अनुसार 58 साल की उम्र से पहले भविष्य निधि में से पैसा निकालने के मज़दूरों के अधिकार पर पाबंदियां लगाई जाने वाली थीं।

बीते दशक के दौरान, बांग्लादेश, कंबोडिया और दक्षिण–पूर्वी एशिया के कुछ और देश, चीन, हिन्दोस्तान और श्रीलंका के साथ–साथ, अंतर्राष्ट्रीय वस्त्र उद्योग के पसंदीदा विनिर्माण केन्द्र बन गये। वस्त्र उद्योग में सबसे बड़े यूरोपीय और अमरीकी ब्रांड इन देशों के मज़दूरों के सस्ते और कुशल श्रम का वहशी शोषण करने लगे। अब हाल के वर्षों में,

उनकी भयानक काम की हालतों, कम वेतनों, सामाजिक सुरक्षा और श्रम अधिकारों के अभाव के खिलाफ़, बांग्लादेश और कंबोडिया के मज़दूरों के संघर्ष बहुत बढ़ गये हैं। इन मज़दूरों के संघर्षों को यूरोप और उत्तरी अमरीका के देशों के मज़दूरों का सक्रिय अंतर्राष्ट्रीयवादी समर्थन मिला है।

अंतर्राष्ट्रीय तौर पर, बांग्लादेश, चीन, कंबोडिया और हिन्दोस्तान, इत्यादि में वस्त्र मज़दूरों की बेहद बुरी हालतों का पर्दाफाश करने के लिये, उत्तरी अमरीका और यूरोप के अगुवा पूंजीवादी देशों के मज़दूरों ने बड़े–बड़े अभियान शुरू किये हैं। उन्होंने इन अंतर्राष्ट्रीय ब्रांडों को एशिया के वस्त्र मज़दूरों की भयानक दुर्दशा के लिये जिम्मेदार ठहराया है और इन ब्रांडों का बहिष्कार करने का बुलावा दिया है। इस प्रकार के संघर्षों की वजह से, बांग्लादेश और दूसरे अगुवा वस्त्र निर्यातक देशों की सरकारों को वहां के वस्त्र मज़दूरों की दयनीय हालतों में कुछ उन्नति लाने के कदम उठाने पड़ रहे हैं।

अफ्रीका के बहुत से देशों में मज़दूर वर्ग और उत्पीड़ित लोगों के संघर्ष फूट पड़े हैं। दक्षिण अफ्रीका में इस वर्ष के दौरान, पेट्रोलियम शोधन और टेलीकॉम क्षेत्रों में हजारों–हजारों मज़दूरों ने हड़तालें की हैं। केन्या के स्वास्थ्य कर्मियों ने वेतन न दिये जाने, अस्पतालों में दवाइयों और स्वास्थ्य कर्मियों की कमी, आदि जैसे मुद्दों पर कई हड़तालें की हैं। घाना के सार्वजनिक क्षेत्र के मज़दूरों ने उच्च वेतन की मांग को लेकर हड़ताल की है।

अफ्रीका के बहुत से देशों में बड़े पैमाने पर भूमि अधिग्रहण किया जा रहा है। विश्व बैंक के अनुमानों के मुताबिक, 2008 से 2011 के बीच, अफ्रीका में लगभग 6 करोड़ हेक्टेयर – फ्रांस के क्षेत्रफल के बराबर – भूमि को विदेशी कंपनियों ने खरीदा या लीज़ पर लिया है[31]। विदेशी निवेशकों, जिनमें हिन्दोस्तानी पूंजीपति भी शामिल हैं, ने कृषि भूमि पर कब्ज़ा कर लिया है और वहां के छोटे किसानों को बलपूर्वक विस्थापित किया है। कृषि के आधुनिकीकरण, नयी प्रौद्योगिकी के प्रयोग और रोज़गार पैदा करने के नाम पर इस भूमि अधिग्रहण को जायज़ ठहराया जा रहा है। इन देशों के लोग इस भूमि अधिग्रहण का अधिक से अधिक विरोध कर रहे हैं। अफ्रीकी देशों में बड़ी–बड़ी कंपनियों द्व ारा भूमि अधिग्रहण के खिलाफ़ संघर्ष कर रहे लोगों तथा हिन्दोस्तान में भूमि अधिग्रहण के खिलाफ़ संघर्ष करने वाले लोगों के बीच भाईचारा बढ़ रहा है।

संक्षेप में, मेहनतकश बहुसंख्या की रोज़ी–रोटी और अधि ाकारों को बलि पर चढ़ाकर, मुट्ठीभर शोषकों के निजी मुनाफ़ों को बचाने और अधिकतम करने के लिये इज़ारेदार पूंजीपति और साम्राज्यवादी राज्य मेहनतकशों पर अमानवीय हमले कर रहे हैं। परन्तु सभी पूंजीवादी देशों में मज़दूर वर्ग और शोषित बहुसंख्या इन हमलों को बर्दाश्त करने से इनकार कर रही है। मज़दूर वर्ग और दूसरे मेहनतकशों का बढ़ता विरोध और उनके अधिकारों व दावों के लिये संघर्ष शासक पूंजीपति वर्ग की समस्याओं को और मुश्किल बनाने वाले कारक बन गये हैं।

साम्राज्यवाद और राष्ट्रों के बीच अंतर्विरोध

साथियों,

शोषकों और शोषितों के बीच अंतर्विरोधों के तीखे होने के साथ–साथ, एक तरफ साम्राज्यवादी ताक़तों और बहुराष्ट्रीय पूंजीवादी इज़ारेदार कंपनियों तथा दूसरी तरफ, अपनी संप्रभुता और आज़ादी के लिये संघर्ष कर रहे राष्ट्रों और लोगों के बीच अंतर्विरोध भी बहुत तीखे हो गये हैं।

बढ़ते साम्राज्यवादी शोषण और लूट तथा राष्ट्रों की संप्रभुता के हनन का न सिर्फ एशिया, अफ्रीका और लातिन अमरीका में, बल्कि यूरोप और उत्तरी अमरीका के अनेक विकसित पूंजीवादी देशों में विरोध किया जा रहा है। जून 2016 में यूरोपीय सामाजिक सर्वेक्षण द्वारा जारी किये गये एक अध्ययन के अनुसार, यूनान, स्पेन, ब्रिटेन, साइप्रस, स्वीडन, चेक रिपब्लिक, जरमनी और पुर्तगाल में अधिकतम लोग यूरोपीय संघ के हिस्से बन जाने की वजह से अपनी राष्ट्रीय संप्रभुता की क्षति के बारे में चिंतित हैं।

वित्त पूंजी के नवाबों की मांगों के अनुसार, यूनान पर थोपे गये कमखर्ची के कदमों का विरोध करते हुए अधिकतम लोग सड़कों पर उतरे। स्पेन, पुर्तगाल और इटली में भी इस प्रकार के संघर्ष चल रहे हैं। उन सभी देशों में शासन करने वाले इज़ारेदार पूंजीपतियों ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता के झंडे को गिरा दिया है। अब राष्ट्रीय स्वतंत्रता के झंडे को बुलंद करने की चुनौती मज़दूर वर्ग के सामने है।

ब्रिटेन के अंदर पुरानी व्यवस्थाएं नाकामयाब हो रही हैं। स्कॉटलैंड की आज़ादी का सवाल सामने आया है। ब्रेक्सिट (ब्रिटेन के यूरोपीय संघ से अलग होने) पर जनमत संग्रह ने साफ–साफ दिखाया कि मज़दूर वर्ग और लोग यूरोपीय संघ द्वारा समर्थित और ब्रिटेन की सरकार द्वारा लागू किये गये कमखर्ची के कार्यक्रम का डटकर विरोध कर रहे हैं। जनमत संग्रह ने शासक इज़ारेदार पूंजीपतियों के आपस बीच गहरे मतभेदों को भी दर्शाया। एक तरफ वे पूंजीपति हैं जो जरमनी के वर्चस्व में यूरोप के साथ और नज़दीकी से जुड़ने के पक्ष में हैं। दूसरी तरफ वे पूंजीपति हैं जो यह मानते हैं कि यूरोपीय संघ से अलग होकर तथा अमरीका और दूसरी ताक़तों के साथ मजबूत संबंध बनाकर उन्हें फायदा होगा।

यूरोप और उत्तरी अमरीका के मज़दूर वर्ग और लोग उन व्यापार और निवेश संधियों का विरोध कर रहे हैं, जिनका एकमात्र उद्देश्य है इज़ारेदार पूंजीवादी कंपनियों की अमीरी को बढ़ाना। ट्रांसएटलांटिक ट्रेड एंड इनवेस्टमेंट पार्टनरशिप (टी.टी.आई.पी.) के खिलाफ़ जरमनी, फ्रांस, बेल्जियम, हौलेंड, स्पेन और अन्य देशों में दसों–लाखों मज़दूरों के बड़े–बड़े विरोध प्रदर्शन हुए हैं। इन संधियों के ज़रिये बड़े खुलेआम तरीके से, मज़दूरों और राष्ट्रों के हितों को नज़र अंदाज़ करके, बड़ी–बड़ी इज़ारेदार कंपनियों के हितों को प्राथमिकता दी जा रही है। अगर कोई सरकार अपने राष्ट्रीय हितों की हिफाज़त के लिये किसी वैश्विक पूंजीवादी कंपनी के खिलाफ़ कदम उठाने का फैसला करती है, तो इन संधियों के ज़रिये वैश्विक पूंजीवादी कंपनी उस सरकार के

खिलाफ़ अदालती कार्यवाही कर सकती है। खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण की रक्षा, इत्यादि को नज़र अंदाज़ करते हुए, राष्ट्र राज्यों की संप्रभुता का हनन करने तथा अपनी हुक्मशाही थोपने की बहुराष्ट्रीय इज़ारेदार कंपनियों की कोशिशों के खिलाफ़ जन प्रतिरोध बढ़ता जा रहा है।

जरमनी में मई 2016 में किये गये एक सर्वेक्षण से यह पता चला कि 70 प्रतिशत लोग प्रस्तावित टी.टी.आई.पी. के खिलाफ़ हैं[32]। जरमनी के लोगों का अपना कड़वा अनुभव है कि जब जरमनी की सरकार ने, जापान की फुकूशिमा दुर्घटना के बाद परमाणु संयंत्रों को बंद करने का फैसला किया था, तब अंतर्राष्ट्रीय परमाणु कंपनियों ने किस तरह सरकार पर मुकदमा चलाया था। 23 अप्रैल, 2016 को जब अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने जरमनी में हेनोवर की यात्रा की, तो उससे एक दिन पहले लगभग 90,000 लोगों ने सड़कों पर उतर कर प्रस्तावित टी.टी.आई.पी. संधि का विरोध किया। प्रदर्शनकारियों के हाथों में प्लैकार्ड और बैनर थे, जिनपर लिखा था "टी.टी.आई.पी. और सी.ई.टी.ए. को रोको!" सी.ई.टी.ए. यूरोपीय संघ और कनाडा के बीच एक प्रस्तावित व्यापार संधि है जिसे 2017 में लागू करने की योजना है।

टी.टी.आई.पी. का विरोध इतना बढ़ गया है कि मई 2016 में फ्रांस के राष्ट्रपति ओलांद को यह कहना पड़ा कि यह संधि फ्रांस के "मूल असूलों" के खिलाफ़ है और उनकी सरकार संधि के इस वर्तमान रूप पर हस्ताक्षर नहीं करेगी। अमरीकी राष्ट्रपति ओबामा और जरमनी के चांसलर मरकेल

टी.टी.आई.पी. के मुख्य हिमायती रहे हैं। अमरीका के अंदर टी.टी.आई.पी. और ट्रांस–पेसेफिक पार्टनरशिप (टी.पी.पी.) के खिलाफ़ विरोध इतना विस्तृत है कि दोनों रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टियों के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों को इन संधियों के खिलाफ़ बात करनी पड़ी है। अमरीका, कनाडा और मेक्सिको के मज़दूर वर्ग और लोगों को नॉर्थ अमेरिकन फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (नाफ्टा), जो 1994 में लागू हुआ था, के साथ अपने कड़वे अनुभव से पता है कि इज़ारेदार पूंजीवादी लालच ही इन प्रस्तावित नई संधियों का प्रेरक है। नाफ्टा के कई अन्य परिणामों के साथ–साथ अमरीका और कनाडा में भारी संख्या में नौकरियों की कटौती हुई, खाद्य पदार्थों की कीमतें बहुत बढ़ गईं, मेक्सिको में कृषि का विनाश हुआ और अमरीका, कनाडा व मेक्सिको, तीनों देशों में मज़दूरों का जीवन स्तर गिर गया।

जंग फरोश नाटो गठबंधन और पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका में उसके द्वारा चलाये जा रहे जंगों का यूरोप और उत्तरी अमरीका के लोग जमकर विरोध कर रहे हैं। सिरिया, इराक और लिबिया में, अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में नाटो गठबंधन ने जो तबाही मचाई है और साम्राज्यवादी लुटेरों ने अफ्रीका के जनसमुदाय को जिस भयानक कंगाली में ढकेल दिया है, उसकी वजह से यूरोप में अप्रत्याशित संख्या में आप्रवासी लोग आ रहे हैं। "कोई नई जंग नहीं, नाटो नहीं!" यह नारा पूरे यूरोप में गूंज रहा है।

जापान के लोगों ने बीते दिनों में जापानी सैन्यवाद के कारण बहुत कष्ट झेले हैं। वे वर्तमान जापानी सरकार के अनवरत

सैन्यीकरण और अमरीकी साम्राज्यवादियों की सांठ–गांठ में जंग की तैयारी का जोरदार विरोध कर रहे हैं। वे न सिर्फ जापानी संविधान में लाये गये उन परिवर्तनों का विरोध कर रहे हैं, जिनके अनुसार अब जापान की सरकार को विदेशों में जंग में भाग लेने के लिये जापानी सेनाओं को भेजने की छूट मिलेगी, बल्कि जापान में अभी भी कायम अमरीकी सैनिक अड्डों का भी विरोध कर रहे हैं।

मुसलमान लोगों पर उनके धर्म के आधार पर वहशी हमलों और उनकी बेइज्जति, तथा सभी मुसलमानों को आतंकवादी घोषित किये जाने का दुनियाभर के मुसलमान लोग बड़े गुस्से से विरोध कर रहे हैं। उत्तरी अफ्रीका, पश्चिम एशिया, दक्षिण एशिया, मलेशिया और इंडोनेशिया के देशों में यह विरोध बहुत स्पष्ट दिख रहा है।

फिलिस्तीनी लोगों ने इस्राइली जाउनवादी कब्ज़ाकारी ताक़तों और अमरीकी साम्राज्यवादियों के खिलाफ़, राष्ट्रीय मुक्ति के लिये अपने बहादुर संघर्ष को जारी रखा है। इस्राइली जाउनवादियों ने, आधुनिकतम हथियारों से लैस होकर, गाज़ा और वेस्ट बैंक में फिलिस्तीनी लोगों के प्रतिरोध को कुचलने की हर कोशिश की है, परन्तु वे असफल रहे हैं।

ईरान कई दशकों से अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा थोपी गयी बेरहम आर्थिक घेराबंदी का अडिगता से मुकाबला करता रहा है। अपनी संप्रभुता की हिफाज़त में ईरान के लोगों के जायज़ संघर्ष, उनके द्वारा फिलिस्तीनी लोगों के अधिकारों की अडिग हिफाज़त, विभिन्न देशों पर अमरीकी साम्राज्यवादी

हमले और ब्लैकमेल के खिलाफ़ संयुक्त राष्ट्र संघ और दूसरे अंतर्राष्ट्रीय मंचों में ईरान ने जो अंतर्राष्ट्रीयतावादी रवैया अपनाया है, उन सबकी वजह से ईरान को दुनियाभर के लोगों का आदर प्राप्त हुआ है। आर्थिक घेराबंदी और उसके साथ–साथ सैनिक हमले की धमकी की अमरीकी नीति ईरान को घुटने टेकने को मजबूर नहीं कर सकी। अंत में, अमरीका को अब ईरान पर अपनी नीति बदलनी पड़ी है और उस देश के खिलाफ़ प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया शुरू करनी पड़ी है।

अमरीकी साम्राज्यवाद ने कोरिया प्रायद्वीप को दुनिया का सबसे सैन्यीकृत इलाका बना दिया है। एक भी ऐसा दिन नहीं गुजरता है जब अमरीकी साम्राज्यवाद कोरिया जनवादी लोक गणराज्य (उत्तरी कोरिया) की सरकार के खिलाफ़ एक या दूसरी उकसाने वाली हरकत नहीं करता है। अमरीकी साम्राज्यवाद उत्तरी कोरिया को यह धमकी देता रहा है कि अगर वह अमरीका का आदेश नहीं मानता है तो उसे परमाणु बम से खत्म कर दिया जायेगा। इस सबके बावजूद, कोरिया जनवादी लोक गणराज्य की सरकार और लोगों ने अपने देश पर इस बेरहम आर्थिक और सैनिक घेराबंदी का बहादुरी से मुकाबला किया है। उन्होंने कोरिया मातृभूमि के एकीकरण के लिये अडिगता से काम किया है। उनके संघर्ष को दक्षिण कोरिया के मज़दूर वर्ग और लोगों का अधिक से अधिक समर्थन प्राप्त है। दक्षिण कोरिया के लोगों का भी सैन्यीकरण के खिलाफ़ विरोध बढ़ रहा है।

अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके मित्रों द्वारा इराक, अफग़ानिस्तान और लिबिया पर बेरहम और बर्बर हमले व कब्ज़े के फलस्वरूप, इन देशों के लोग अमरीकी साम्राज्यवादियों का जमकर विरोध कर रहे हैं। यह विरोध इतना तीव्र है कि अफग़ानिस्तान और इराक की वर्तमान सरकारों को अमरीकी साम्राज्यवाद की आलोचना करने को मजबूर होना पड़ा है।

अफ्रीका के प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण करने और उन्हें लूटने के अपने इरादों को हासिल करने के लिये, अमरीका और यूरोपीय ताक़तों ने बड़े सुनियोजित तरीके से नस्लवादी झगड़े भड़का कर, इनमें से कई देशों में गृहयुद्ध उकसाये हैं। उन्होंने इस काम के लिये तरह–तरह की सेनाओं को हथियार और धन दिये हैं। लाखों–लाखों लोगों का कत्ल किया गया है और कई लाखों लोगों को शरणार्थी बना दिया गया है। अमरीका ने आतंकवाद का मुकाबला करने के नाम पर, इन सैनिक अभियानों का समायोजन करने के इरादे से, सोमालिया में अफ्रीका कमांड (एफ्रीकॉम) के मुख्यालय को स्थापित किया है।

जो अफ्रीकी सरकारें और नेता अपने देशों के विनाश का विरोध करते हैं, साम्राज्यवादी उन्हें "युद्ध अपराधी" घोषित कर देते हैं और उन पर जनसंहार का आरोप लगाते हैं। जनसंहार के असली आयोजक, अमरीकी और यूरोपीय साम्राज्यवादी, खुद को सभ्य ताक़तों के रूप में पेश करते हैं, जो "श्वेत पुरुष के बोझ" को निभा रहे हैं और अफ्रीकी लोगों को तथाकथित जीने का तरीका सिखा रहे हैं।

अफ्रीकी संघ – एक अंतर–सरकारी संगठन – की स्थापना 2002 में, अफ्रीकी राज्यों के आपस बीच एकता और भाईचारा बनाने के कथित उद्देश्य के साथ की गयी थी। लिबिया के भूतपूर्व नेता, मुअम्मर अल गद्दाफी ने इसकी शुरुआत की थी और इसका मुख्यालय इथियोपिया की राजधानी, अद्दीस अबाबा में है। अफ्रीकी संघ की परिकल्पना यूरोपीय संघ के जैसी की गयी थी, जिसमें सभी सदस्य देशों का एक सांझा केन्द्रीय बैंक और न्यायालय होगा तथा सर्व–अफ्रीकी संसद होगी। साम्राज्यवादियों द्वारा अलग–अलग राष्ट्रों को अस्थायी करने व नष्ट करने के इस भयानक अभियान के चलते, अफ्रीकी संघ ने उन विभिन्न राजनीतिक नेताओं की हिफ़ाज़त की है, जिन पर साम्राज्यवादियों ने सिर्फ इसलिये निशाना साधा है, कि उन्होंने इन विनाशकारी कार्यवाहियों से अपने देशों को बचाने की कोशिश की।

जब नेदरलैंड्स के दी हेग में स्थित अंतर्राष्ट्रीय दण्ड न्यायालय (इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट) ने सूडान के राष्ट्रपति पर जनसंहार के आरोप पर मुकदमा चलाने का फैसला किया, तो अफ्रीकी संघ ने उसकी निंदा की और उन पर मुकदमा चलाने के अंतर्राष्ट्रीय दण्ड न्यायालय के अधिकार को मान्यता देने से इनकार किया। जब अंतर्राष्ट्रीय दण्ड न्यायालय ने केन्या के राष्ट्रपति पर मुकदमा चलाने की कोशिश की, तब भी ऐसा ही हुआ। 21 अक्तूबर, 2016 को दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय दण्ड न्यायालय से हटने का अपना फैसला घोषित किया। वह ऐसा करने वाला दूसरा अफ्रीकी देश था। उससे तीन दिन पहले, बुरुंडी के संसद में अंतर्राष्ट्रीय दण्ड न्यायालय से हटने के पक्ष में

मतदान किया गया था। अफ्रीका के कई और देश भी ऐसा करने की तैयारी कर रहे हैं।

पूरे लातिनी अमरीका, मध्य अमरीका और केरिबियन इलाके में, अपने प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण करने और अपनी राष्ट्रीय संप्रभुता की हिफ़ाज़त करने के लिये राष्ट्रों और लोगों के संघर्ष फैल गये हैं। वेनेजुएला, बोलिविया, निकरागुवा और दक्षिण अमरीका व मध्य अमरीका के बहुत से देश अपनी संप्रभुता के हनन के खिलाफ़ और साम्राज्यवादी हस्तक्षेप से मुक्त होकर अपने आर्थिक व राजनीतिक रास्ते पर चलने के अधिकार की हिफ़ाज़त में ज़ोरदार विरोध संघर्ष कर रहे हैं। इन देशों की सरकारों ने अपनी तेल कंपनियों और दूसरी खनिज कंपनियों का राष्ट्रीयकरण किया है और वे इन संसाधनों को अपने लोगों के जीवन स्तर में उन्नति लाने के लिये इस्तेमाल करने की कोशिश कर रही हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद ने इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं को नष्ट करने और इन देशों में अपनी एजेंसियों के ज़रिये प्रतिक्रांति उकसाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इस इलाके के 11 देशों ने मिलकर एल्बा (बोलिवारियन एलायंस फॉर द पीपल्स ऑफ आवर अमेरिका) नामक गठबंधन की स्थापना की है और अमरीकी डॉलर के बजाय सूक्र नामक एक सांझी मुद्रा तय करके उसमें व्यापार करने का फैसला किया है। यह अमरीका के महाद्वीपों के देशों और लोगों के साम्राज्यवाद–विरोधी आंदोलन में एक बहुत बड़ा अग्रिम कदम है।

क्यूबा की सरकार और लोगों ने अमरीकी महाद्वीप तथा सारी दुनिया के लोगों को यह दिखा दिया है कि अमरीकी साम्राज्यवाद का मुक़ाबला करना मुमकिन है। उन्होंने कई दशकों तक लगातार अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा थोपी गयी अमानवीय आर्थिक घेराबंदी के खिलाफ़ अडिग और बहादुर संघर्ष किया है। हर साल संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा में क्यूबा पर लगाई गयी बेहद अनुचित अमानवीय घेराबंदी को हटाने के पक्ष में मत प्रकट किया जाता रहा है। इस विषय पर अमरीकी साम्राज्यवाद बिल्कुल ही अकेला पड़ गया और अंत में उसे क्यूबा पर प्रतिबंधों को हटाने तथा उसके साथ फिर से राजनयिक संबंध स्थापित करने को मजबूर होना पड़ा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ और सभी अंतर्राष्ट्रीय व क्षेत्रीय मंचों पर क्यूबा ने हमेशा ही अडिग अंतर्राष्ट्रीयतावादी रवैया अपनाया है। उसने अमरीकी साम्राज्यवादी रणनीति का लगातार पर्दाफाश किया है और साम्राज्यवादी हस्तक्षेप से मुक्त होकर अपना भविष्य तय करने के सभी, बड़े और छोटे, देशों के अधिकारों की हिफ़ाज़त की है। इसके फलस्वरूप, क्यूबा और उसकी सरकार व लोगों को सारी दुनिया के साम्राज्यवाद–विरोधी, शांति व आज़ादी पसंद लोगों का आदर और सराहना मिली है। अपनी संप्रभुता की हिफ़ाज़त में संघर्ष करने वाले सभी देशों और लोगों को यह मालूम है कि क्यूबा उनका पक्का और विश्वसनीय मित्र है।

सारांश में, दुनिया के अधिकतम राष्ट्र और लोग बहुराष्ट्रीय कंपनियों और साम्राज्यवादी जंग फरोश ताक़तों के उन तर्कों

को मानने को तैयार नहीं हैं, जिनके ज़रिये उनकी राष्ट्रीय संप्रभुता के हनन को जायज़ ठहराया जा रहा है। किसी भी देश को दुष्ट राज्य करार देने और उसके मामलों में हस्तक्षेप करने के साम्राज्यवादी "अधिकार" का बढ़ता विरोध देखने में आ रहा है। तथाकथित व्यापार और निवेश संधियों, जिनके ज़रिये संप्रभु राज्यों की सरकारों को पूंजीवादी कंपनियों की हुक्मशाही का शिकार बना दिया जाता है, उनका भी विस्तृत पैमाने पर विरोध किया जा रहा है। ये सब दिखाते हैं कि साम्राज्यवाद और उत्पीड़ित राष्ट्रों व लोगों के बीच अंतर्विरोध और तेज़ हो रहा है।

इज़ारेदार पूंजीपतियों के आपसी अंतर्विरोध और साम्राज्यवादियों के बीच अंतर्विरोध

साथियों,

गहराते आर्थिक संकट की हालतों में, इज़ारेदार पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों के आपसी झगड़े तेज़ हो गये हैं, जिसकी वजह से पूरे पूंजीपति वर्ग की स्थिति कमजोर हो गयी है। स्थगित या सिकुड़ते बाज़ार के अधिक से अधिक हिस्से को हड़पने के लिये या कच्चे माल के अहम स्रोतों पर नियंत्रण हासिल करने के लिये, प्रतिस्पर्धी इज़ारेदार पूंजीपतियों के समूहों और गठबंधनों के आपसी झगड़े बहुत तेज़ हो गये हैं। पूंजीवादी देशों के अंदर, राज्य तथा उसकी नीतियों पर नियंत्रण करने के लिये, इज़ारेदार पूंजीपतियों के प्रतिस्पर्धी समूहों के आपसी झगड़े भी तेज़ हो गये हैं।

अपने प्रतिस्पर्धियों के खिलाफ़ लड़ाई में बहुराष्ट्रीय कंपनियां जिस देश में काम कर रही हैं, उस देश के राज्य पर अपने प्रबल प्रभाव का इस्तेमाल करती हैं। मिसाल के तौर पर, बीते कुछ वर्षों से अमरीका, यूरोपीय देशों तथा हिन्दोस्तान की इस्पात उत्पादक कंपनियां चीन की इस्पात कंपनियों के बाज़ार के हिस्से को बढ़ने से रोकने के लिये, तीखी लड़ाई लड़ रही हैं। इन देशों की सरकारों ने इस्पात उद्योग में अपने–अपने देशों के पूंजीपतियों के हित में, चीन से आयातित इस्पात पर 'प्रतिपाटन विरोधी (एंटी डपिंग)' शुल्क थोप दिये हैं।

रक्षा सामग्रियों की सप्लाई के लिये इज़ारेदार कंपनियों की आपसी स्पर्धा, नियुक्त अफ़सरों और कंपनी एजेंटों के सहारे, अलग–अलग देशों की सरकारों की पूरी भागीदारी के साथ की जाती है। हिन्दोस्तान हथियारों का सबसे बड़ा आयातक है। अतः अमरीका, रूस, इस्राइल, फ्रांस, ब्रिटेन और दूसरे प्रमुख हथियार बेचने वाले देशों की सरकारों के आपस बीच, हिन्दोस्तान पर तीक्ष्ण स्पर्धा चलती रहती है।

नई प्रौद्योगिकी की वजह से कई अहम कच्चे पदार्थों की मांग बढ़ रही है, जैसे कि इलेक्ट्रिक गाड़ियों की बैटरियों के लिये लिथियम और कोबाल्ट; समुद्र जल से नमक हटाने के लिये टाइटेनियम, क्रोम और पैलेडियम; फोटोवोल्टाइक सेल के लिये रुथेनियम और सेलेनियम; मोबाइल फोन और लैपटॉप कम्प्यूटरों के लिये रेयर अर्त खनिज, इत्यादि। इन कच्चे पदार्थों के स्रोतों पर कब्ज़ा और नियंत्रण करने के

लिये प्रतिस्पर्धी प्रौद्योगिक इज़ारेदार कंपनियों के बीच तीखा संघर्ष चल रहा है।

सोवियत संघ के विघटन के बाद की अवधि में कई विशाल व्यापारी समूह विकसित हुए हैं। इज़ारेदार कंपनियां इस तरह से मिलकर, दुनिया में अपने प्रभाव और वर्चस्व के क्षेत्रों को निर्धारित करती हैं तथा अपने प्रतिस्पर्धियों को बाहर रखने की कोशिश करती हैं। अमरीका ने नाफ्टा की रचना की, जिसमें अमरीका, कनाडा और मेक्सिको शामिल हैं तथा जिस पर अमरीकी इज़ारेदार कंपनियों का वर्चस्व है। जरमनी और फ्रांस ने यूरोपीय संघ के गठन में अगुवाई दी थी, जिसमें शुरू में 6 सदस्य थे पर बाद में उसका विस्तार हुआ और उसमें 28 देश सदस्य बने। इस समय यूरोपीय संघ सबसे बड़ा व्यापार समूह है, जो विश्व व्यापार पर अमरीकी इज़ारेदार कंपनियों के वर्चस्व को चुनौती दे रहा है। एशिया में आसियान (एसोसियेशन ऑफ साउथ ईस्ट एशियन नेशंस) के ज़रिये तथा लातिन अमरीका में एम.ई.आर.सी.ओ.एस.यू.आर. के ज़रिये, इस प्रकार के व्यापार समूह बनाये गये हैं।

विश्व के बैंकिंग क्षेत्र में अलग–अलग देशों के बैंकों की ताक़तों में बड़े परिवर्तन देखने में आये हैं। दुनिया के सबसे बड़े 5 बैंकों में 4 इस समय चीनी बैंक हैं[33]। अमरीका और जापान तथा कनाडा और आस्ट्रेलिया की इज़ारेदार कंपनियां ट्रांस–पेसिफिक पार्टनरशिप (टी.पी.पी.) के ज़रिये, प्रशांत महासागर के दोनों तरफ के 12 देशों के एक समूह की रचना करके, चीन के प्रभाव क्षेत्र के विस्तार को रोकने की

कोशिश कर रही हैं। प्रस्तावित ट्रांस–एटलांटिक ट्रेड एंड इनवेस्टमेंट पार्टनरशिप (टी.टी.आई.पी.) के ज़रिये अमरीका और यूरोप की इज़ारेदार कंपनियां ऐसा ही कुछ करना चाहती हैं।

चीन के दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बतौर उभरने तथा दुनिया की "फैक्टरी" के नाम से पहचाने जाने के साथ–साथ, चीनी कंपनियों ने सारी दुनिया में कच्चे माल और दूसरे प्राकृतिक संसाधनों के स्रोतों को हासिल करने का बहुत बड़ा अभियान चलाया है। 2015 तक, चीन अफ्रीका के साथ व्यापार में सबसे बड़ा सांझेदार बन चुका था। चीनी राज्य की कंपनियों ने अफ्रीका महाद्वीप में तेल, प्राकृतिक गैस, खनिजों व अयस्कों समेत अनेक प्राकृतिक संसाधनों के निष्कासन में भारी निवेश किया है। अफ्रीका में बांध, हवाई अड्डे, हाईवे, रेल मार्ग, आदि जैसी विशाल ढांचागत परियोजनाओं का निर्माण करने वाली श्रमशक्ति का हिस्सा बतौर, लगभग दस लाख चीनी लोग वहां जाकर काम कर रहे हैं। कपड़े और सस्ती इलैक्ट्रॉनिक वस्तुओं समेत, चीनी सामग्रियों के लिये अफ्रीका एक बहुत बड़ा बाज़ार भी है।

2014 में चीन लातिन अमरीका के साथ व्यापार करने वाला, अमरीका के बाद दूसरा बड़ा सांझेदार था। 2010 में चीन–आसियान मुक्त व्यापार समझौते के लागू होने के बाद से चीन आसियान के साथ व्यापार करने वाला सबसे बड़ा सांझेदार है। चीनी पूंजी और उसके प्रभाव क्षेत्र का सारी दुनिया में आर्थिक विस्तार दुनिया की अर्थव्यवस्था पर अमरीका के वर्चस्व के लिये एक चुनौती है। यह यूरोपीय

संघ, जापान और हिन्दोस्तान समेत कई दूसरी साम्राज्यवादी ताक़तों के लिये भी एक चुनौती है।

आज हिन्दोस्तान एक ऐसी साम्राज्यवादी ताक़त बतौर उभर कर आया है, जिसकी आकांक्षाएं दक्षिण एशिया क्षेत्र की सीमाओं को पार कर चुकी हैं। हिन्दोस्तान की इज़ारेदार कंपनियां – पेट्रोलियम क्षेत्र में ओ.एन.जी.सी. जैसी राजकीय इज़ारेदार कंपनियां तथा निजी इज़ारेदार कंपनियां – दोनों अफ्रीका, लातिन अमरीका, आसियान के देशों तथा दुनिया के अन्य इलाकों में पूंजी निवेश कर रही हैं। हिन्दोस्तान की इज़ारेदार कंपनियां, दूसरे देशों की इज़ारेदार कंपनियों के साथ, कभी मिलकर तो कभी स्पर्धा करके, अपने प्रभाव के क्षेत्रों को विस्तृत कर रही हैं।

चीनी राज्य भी रीजनल कॉम्प्रीहेंसिव इकोनोमिक पार्टनरशिप (आर.सी.ई.पी.) के ज़रिये एक व्यापार समूह गठित करने का प्रयास कर रहा है। उस समूह में आसियान के देशों के अलावा ऑस्ट्रेलिया, चीन, हिन्दोस्तान, जापान, दक्षिण कोरिया और न्यूज़ीलैंड शामिल होंगे। उसमें दुनिया की 45 प्रतिशत आबादी और सकल घरेलू उत्पाद का एक–तिहाई भाग तथा दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से दो शामिल होंगी। जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे कई देश दुनिया में विभिन्न ताक़तों के संतुलन का मूल्यांकन करके, एक से अधिक समूहों का सदस्य बनने की कोशिश कर रहे हैं।

सभी बड़े–बड़े पूंजीवादी–साम्राज्यवादी राज्य अपने प्रतिस्पधि र्ायों को पीछे धकेल कर, अपने हितों को बढ़ावा देने के लिये, इस बदलती हालत में दांवपेच कर रहे हैं। अलग–अलग पूंजीवादी–साम्राज्यवादी राज्यों के बीच बनाये गये गठबंध ान अस्थाई होते हैं। कच्चे पदार्थों के स्रोतों तथा बाज़ार के सबसे बड़े हिस्से पर कब्ज़ा करने की उनकी कोशिश स्थाई होती है। आज जो कुछ हो रहा है वह अलग–अलग पूंजीवादी–साम्राज्यवादी ताक़तों के बीच, दुनिया का पुनः बंटवारा हो रहा है। एक–ध्रुवीय दुनिया स्थापित करने के अमरीकी साम्राज्यवाद के जारी कदम बहु–ध्रुवीय साम्राज्यवादी दुनिया बनाने के जरमनी, रूस, चीन, जापान, हिन्दोस्तान, ब्राज़ील व अन्य राज्यों के प्रयासों से टकरा रहे हैं।

21वीं सदी में दुनिया की एकमात्र निर्विरोधित महाशक्ति बने रहने के लिये अमरीका की रणनीति का मुख्य आधार है दुनिया के ऊर्जा स्रोतों, खास तौर पर तेल और प्राकृतिक गैस के स्रोतों, पर नियंत्रण स्थापित करना। इसकी यह वजह है कि जरमनी, फ्रांस, इटली और यूरोज़ोन के अन्य देश, चीन, जापान और हिन्दोस्तान – जो अमरीका की प्रध ाानता को चुनौती देने के क़ाबिल हैं – वे सभी अपनी–अपनी अर्थव्यवस्थाओं के संचालन के लिये तेल व गैस के आयात पर भारी तौर पर निर्भर हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद ने अपनी इस रणनीति को लागू करने के लिये, पश्चिम एशिया, उत्तरी अफ्रीका, पश्चिम अफ्रीका, मध्य एशिया तथा दक्षिण अमरीका – यानी सभी तेल व गैस का निर्यात करने वाले देशों – में खुलेआम जंग किया है, विविध रंगों की तथाकथित क्रांतियों को अंजाम दिया है और आतंकवादी गिरोहों को क्रियाशील

किया है। अमरीका इसके साथ–साथ, रूस, जो तेल और गैस का निर्यात करने वाली एक प्रमुख ताक़त है, को घेरने की रणनीति भी चला रहा है और रूस के प्रचूर प्राकृतिक संसाधनों को अपने कब्जे में करने के लिये, उस देश को नष्ट करने की अविराम कोशिश कर रहा है।

2000 में जारी पेंटागन के एक अंदरूनी ज्ञापन में यह विवरण दिया गया है कि कैसे अमरीका अगले पांच वर्षों में सबसे पहले इराक, फिर सिरिया, लेबनान, लिबिया, सोमालिया, सूडान और अंत में ईरान, इन सात देशों पर हमला करने की योजना बना रहा था। इस योजना को लागू करने की शुरुआत के लिये, 11 सितम्बर, 2001 के आतंकवादी हमले को बहाना बनाया गया। अमरीका ने सोमालिया का लगभग पूरा–पूरा विनाश करने के बाद, वहां अपने अफ्रीका कमान के सैनिक मुख्यालय को स्थापित किया है। इराक और लिबिया को तबाह कर दिया गया है। अमरीका और उसके मित्रों ने सिरिया में गृहयुद्ध भड़काया है। सूडान को दो टुकड़ों में बांट दिया गया है।

चीन के तेल आयातों का लगभग 80 प्रतिशत मलक्का जलडमरूमध्य के ज़रिये आता है। अमरीकी युद्ध पोत समूह, छठा फ्लीट इस रास्ते को रोककर चीन को इस अत्यावश्यक ऊर्जा के स्रोत से वंचित कर सकता है। इस खतरे को कम करने के लिये चीन जल्दी से तेल के आयात के लिये वैकल्पिक ज़मीनी राहों को विकसित करने में लगा हुआ है। चीन के पास पहले से ही रूस और मध्य एशियाई गणराज्यों से पाइपलाइनों के ज़रिये, तेल और गैस की

आपूर्ति सुनिश्चित है। चीन ने म्यानमार से गुजरते हुए बंगाल की खाड़ी तक, तेल और गैस का एक पाइपलाइन बना रखा है। वह अरब सागर पर स्थित, पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह तक एक और पाइपलाइन का निर्माण कर रहा है।

यूरोपीय संघ तेल और गैस के सबसे बड़े आयातकों में एक है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद से अमरीका ने नाटो के ज़रिये पश्चिमी यूरोप पर अपना शिकंजा कस रखा है। जरमनी के पुनरेकीकरण और शीत युद्ध के अंत से जरमनी को यूरोप का नेता बनने का मौका मिला था। इसके लिये उसने फ्रांस के साथ मिलकर यूरोपीय संघ का निर्माण किया। जरमनी ने सोवियत संघ के विनाश का इस्तेमाल करके यूरोपीय संघ को पूर्व की दिशा में विस्तृत किया तथा उसमें पूर्वी यूरोप के सभी भूतपूर्व समाजवादी देशों और भूतपूर्व सोवियत संघ के कुछ यूरोपीय गणराज्यों को भी शामिल कर लिया। दूसरी ओर, अमरीका ने इस परिस्थिति का इस्तेमाल करके, नाटो का पूर्व की दिशा में विस्तार किया है, रूस को घेर रखा है तथा कई पूर्वी यूरोपीय देशों में नाटो की सेनाओं को तैनात कर रखा है।

जरमनी और फ्रांस के अंदर कई इज़ारेदार पूंजीपति अमरीका की जकड़ से निकल कर रूस, चीन और अन्य देशों के साथ अपने–अपने सौदे करना चाहते हैं। कुछ और इज़ारेदार पूंजीपति अमरीका के साथ गठबंधन में ही अपने लिये अच्छा भविष्य देखते हैं। जरमन और फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों की रणनीति में तेल और गैस के भरोसेमंद स्रोतों पर कब्ज़ा

करना मुख्य उद्देश्य है। 2014 में यूरोप की गैस की सप्लाई का 30 प्रतिशत रूस से आया था। अमरीका, जरमनी और रूस को एक–दूसरे के खिलाफ़ भिड़ाने की पूरी कोशिश कर रहा है, ताकि उन दोनों को कमजोर किया जाये और यूरोप में अमरीका के हितों को बढ़ावा दिया जा सके। इस इरादे को हासिल करने के लिये अमरीका ने पोलैंड, यूक्रेन तथा अन्य पूर्व के देशों की ओर जरमनी की महत्वाकांक्षाओं को सुनियोजित तरीके से उकसाया है। अमरीका ने जरमनी की सांठ–गांठ में, यूक्रेन में प्रतिक्रांति भी आयोजित की और उस देश में एक नव–नाज़ी सरकार को सत्ता पर बिठाया। अमरीका ने यह सुनिश्चित किया कि यूरोपीय संघ रूस पर प्रतिबंध लगाये। इसके जवाब में, रूस ने यूरोप को गैस की सप्लाई रोक देने की धमकी दी।

रूसी इज़ारेदार पूंजीपतियों के साथ सौदा करने की विभिन्न यूरोपीय इज़ारेदार पूंजीपतियों की कोशिशें तथा अमरीका और रूस के एक–दूसरे को आगे बढ़ने से रोकने के कदमों के उदाहरण उन दोनों पाइपलाइनों पर हो रहे जंग में देखे जा सकते हैं, जिनका प्रस्ताव किया गया पर निर्माण अभी तक नहीं हुआ। अमरीका ने तुर्कमेनिस्तान से शुरू होकर, तुर्की के अंदर से गुजरते हुए, यूरोप को गैस सप्लाई करने के लिये एक पाइपलाइन के निर्माण को समर्थन दिया। जब तुर्कमेनिस्तान ने रूस को नाराज़ करने से इनकार किया, तब उस पाइपलाइन को अज़रबैजान से शुरू करने का फैसला किया गया। 2007 में रूस ने अमरीका के साथ स्पर्धा करते हुए, एक अन्य पाइपलाइन की घोषणा कर दी। दोनों पाइपलाइनों से उन्हीं यूरोपीय देशों को सप्लाई करना

था, अतः यह साफ था कि दोनों में से एक ही पाइपलाइन आर्थिक तौर से उचित मानी जा सकती थी। दिसम्बर 2012 तक ऐसा लग रहा था कि रूसी प्रस्ताव जीतेगा, क्योंकि यूरोप की बड़ी–बड़ी इज़ारेदार कंपनियां उसका समर्थन कर रही थीं। जून 2013 में अमरीका द्वारा समर्थित पाइपलाइन पर काम बंद कर दिया गया क्योंकि उसके लिये गैस का भरोसेमंद स्रोत नहीं मिल सका। अमरीका ने यूक्रेन के मुद्दे पर रूस के साथ बढ़ते झगड़े का इस्तेमाल करके, यूरोपीय संघ के देशों और इज़ारेदार कंपनियों पर यह दबाव डाला कि रूसी पाइपलाइन के प्रस्ताव को समर्थन न दें। अंत में, दिसम्बर 2014 में उस पाइपलाइन की योजना को त्याग दिया गया।

पूर्वी यूरोप के उन देशों को, जो भूतपूर्व सोवियत संघ की अगुवाई में वारसॉ संधि के हिस्सा हुआ करते थे और अब नाटो के हिस्सा हैं, उन्हें अमरीकी साम्राज्यवादी "नया यूरोप" कहते हैं। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने उन देशों पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके, जरमनी और "पुराने यूरोप" की अन्य ताक़तों पर दबाव डाल रखा है, ताकि वे अमरीका की लाइन के अनुसार चलें। अमरीका रूस को घेरने के इरादे से, यूक्रेन और सोवियत संघ के अन्य भूतपूर्व गणराज्यों को नाटो में शामिल करने की भी कोशिश कर रहा है।

इनमें से कई देशों में, अमरीकी साम्राज्यवाद ने उसकी लाइन को मानने वाली सरकारों को सत्ता में लाने के लिये गृहयुद्ध उकसाये हैं। यूक्रेन जो उन्नत उद्योग, कृषि और खनिज संसाधनों से समृद्ध देश है, उसमें अमरीका और उसके मित्रों

ने अकस्मात सत्ता परिवर्तन आयोजित किया और वहां की निर्वाचित सरकार को गिरा कर एक नव–नाज़ी गिरोह को सत्ता पर बिठाया। इसकी वजह से यूक्रेन के अंदर घमासान गृहयुद्ध चल रहा है। अमरीका और उसके मित्रों ने खुद की हरकतों से पैदा की गयी समस्याओं के लिये रूस को दोषी ठहराकर, रूस पर आर्थिक प्रतिबंध थोप दिये। परन्तु क्रिमिया क्षेत्र ने यूक्रेन से अलग होकर रूस के साथ जुड़ जाने का फैसला किया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि रूस काला सागर से भूमध्य सागर तक अपने समुद्री रास्ते में संभावित रुकावट को दूर करने में सफल रहा है।

सिरिया में अमरीका–नीत नाटो का सैनिक हस्तक्षेप, अस्साद की सरकार को सत्ता से हटाने के तथाकथित उद्देश्य से सिरिया में तरह–तरह के आतंकवादी गिरोहों को अमरीका द्वारा धन और हथियार दिया जाना, ये हरकतें फारस की खाड़ी से यूरोप तक तेल और गैस की पाइपलाइनों को बिछाने की योजनाओं के साथ जुड़ी हुई हैं। 2009 में, कतर ने सऊदी अरब, जोरडन, सिरिया और तुर्की से गुजरते हुए, यूरोप तक एक पाइपलाइन का प्रस्ताव किया था। इसका उद्देश्य था फारस की खाड़ी के नीचे दुनिया के सबसे बड़े गैस क्षेत्र से यूरोप तक गैस ले जाना। इससे कतर से प्राप्त होने वाली गैस और रूस से प्राप्त होने वाली गैस के बीच में स्पर्धा होती। अमरीका ने इस प्रस्ताव को समर्थन दिया था। परन्तु सिरिया ने इस प्रस्ताव को खारिज कर दिया। इसी वजह से, अमरीका नीत नाटो सेनाओं, सऊदी अरब, कतर और तुर्की की सेनाओं ने मिलकर सिरिया में खूनी गृहयुद्ध शुरू किया। बहरहाल, ईरान ने फारस की

खाड़ी के नीचे के गैस क्षेत्र से, इराक, सिरिया, लेबनान व भूमध्य सागर से गुजरते हुए, यूनान तक एक पाइपलाइन का प्रस्ताव रखा। इस पाइपलाइन का सिरिया और रूस ने समर्थन किया। ईरान की पाइपलाइन के लिये समझौते पर 2011 में हस्ताक्षर किया गया था और उसे 2016 तक पूरा हो जाना था, परन्तु सिरिया में गृहयुद्ध के कारण उस पर काम अनिश्चितकालीन तौर पर स्थगित हो गया है।

ईरान के साथ गठबंधन में, रूस द्वारा सिरिया के गृहयुद्ध में प्रत्यक्ष सैनिक दखलंदाजी से यह स्पष्ट हो गया है कि रूसी साम्राज्यवाद अपने रणनैतिक हितों के लिये संघर्ष करेगा और वह अपने देश को नाटो के हमले से बचाने के लिये तैयार है। इस दखलंदाजी के ज़रिये रूस ने अस्साद की सरकार को मज़बूत किया है, जिसे गिराना अमरीका और उसके मित्रों का सिरिया में दखलंदाजी करने का प्रथम मौलिक उद्देश्य था। इस प्रकार से रूस ने अपने मित्रों तथा उन सभी देशों को, जो इस समय अमरीका के शासन परिवर्तन के कार्यक्रम के निशाने पर हैं, यह संदेश दिया है कि वह उनके साथ खड़ा है और ज़रूरत हो तो उन्हें सैनिक सहयोग भी देगा।

बीते दशक के दौरान जरमनी, फ्रांस, ब्रिटेन तथा दूसरी यूरोपीय ताक़तें अपने–अपने प्रभाव क्षेत्रों को विस्तृत करने के लिये, तेज़ गति से सैन्यीकरण कर रही हैं और बड़ी सक्रियता से गृहयुद्ध व शासन परिवर्तन आयोजित कर रही हैं। अफ्रीका के अनेक देशों में कच्चे माल के प्रचूर स्रोतों पर नियंत्रण के लिये, साम्राज्यवादी ताक़तों के बीच

घमासान स्पर्धा चल रही है। अमरीकी साम्राज्यवादी और ब्रिटेन, फ्रांस, बेलजियम, होलैंड और जरमनी जैसी पुरानी उपनिवेशवादी ताक़तें अलग–अलग आदिवासी समुदायों के बीच सामुदायिक युद्ध भड़का रही हैं तथा गुप्त रूप से तरह–तरह के आतंकवादी गिरोहों को प्रश्रय दे रही हैं। इनमें से हरेक राज्य अपने–अपने इज़ारेदार पूंजीपतियों के लिये सबसे बेहतरीन हालतें सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहा है। अफ्रीका को लूटने की इस दौड़ में चीनी और हिन्दोस्तानी कंपनियां भी जुड़ गयी हैं।

रूस और चीन हाल के वर्षों में अपनी–अपनी साम्राज्यवादी रणनीतियों को आगे बढ़ाने के लिये नज़दीकी से मिलकर काम कर रहे हैं। ये दोनों देश दो मुख्य पहलकदमों – बी.आर.आई.सी.एस. (ब्रिक्स) समूह और शांघाई कोआपरेशन आरगेनाइज़ेशन (एस.सी.ओ.) – की प्रेरक शक्तियां हैं। दोनों देश मिलकर यूरेशिया में अमरीकी साम्राज्यवादी प्रभाव के हमलावर विस्तार को रोकने की कोशिश कर रहे हैं।

शांघाई कोआपरेशन आरगेनाइज़ेशन (एस.सी.ओ.) की स्थापना जून 2001 में हुई थी। उसके 6 संस्थापक सदस्य चीन, रूस, कज़ाखस्तान, उज़बेकिस्तान, किरगिज़स्तान और ताजिकिस्तान थे। जुलाई 2015 में हिन्दोस्तान और पाकिस्तान को इसमें पूर्ण सदस्य बतौर शामिल करने का फैसला लिया गया था और इन दोनों देशों ने जून 2016 में एस.सी.ओ. के दायित्वों के ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं। अफ़गानिस्तान, ईरान, बेलारूस तथा मंगोलिया को एस.सी.ओ. में इस समय पर्यवेक्षक का दर्जा दिया गया है।

श्रीलंका और तुर्की भी इस समूह के वार्ताकारी सांझेदार हैं। एस.सी.ओ. रूस और चीन द्वारा एक ऐसा यूरेशिया व्यापार क्षेत्र स्थापित करने की कोशिश को दर्शाता है, जो प्रशांत महासागर से अरब सागर तक फैला होगा।

ब्राज़ील, रूस, हिन्दोस्तान, चीन और दक्षिण अफ्रीका – ब्रिक्स समूह – के देशों ने, दीर्घकालीन विकास के लिये ऋणों के मुद्दे पर, अमरीका की प्रधानता वाले विश्व बैंक और जापान की प्रधानता वाले एशियन डेवेलपमेंट बैंक के वर्चस्व को चुनौती देने के लिये अपना विकास बैंक स्थापित किया है।

चीन कुछ देशों के साथ अपने व्यापार में, अमरीकी डॉलर के बजाय युआन में भुगतान शुरू करने की कोशिश कर रहा है। अमरीका ब्रिक्स को कमजोर करने तथा युआन के वैश्विक दर्ज़े को मज़बूत करने की चीन की कोशिशों को नाकामयाब करने का प्रयास कर रहा है।

2010 में घोषित अपनी *"एशिया धुर्री"* नीति के तहत अमरीकी साम्राज्यवाद, चीन को घेरने तथा एशिया–प्रशांत महासागर इलाके पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के उद्देश्य से, अपनी सेनाओं का अधिकतम भाग प्रशांत महासागर में ला रहा है। अमरीकी साम्राज्यवादी अपने इस इरादे को हासिल करने के लिये अपने पुराने मित्रों जापान, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया के अलावा, हिन्दोस्तान को भी एक रणनैतिक मित्र बनाकर अपनी योजना में शामिल करने का प्रयास कर रहे हैं। अमरीका, वियतनाम जैसे उन देशों

के साथ भी निकट संबंध बनाने की कोशिश कर रहा है, जिनका चीन के साथ इलाका संबंधी विवाद है। अमरीकी साम्राज्यवाद से प्रेरित होकर जापानी सैन्यवाद आगे बढ़ रहा है और इसकी वजह से चीन तथा इस इलाके के अन्य देशों के साथ जापान का टकराव हो रहा है।

अमरीकी साम्राज्यवादी चीन को आगे बढ़ने से रोकने की अपनी कोशिशों में हिन्दोस्तान को मित्र बनाना चाहते हैं। हिन्दोस्तानी शासक वर्ग की बड़ी–बड़ी साम्राज्यवादी आकांक्षाएं हैं। इस समय अमरीकी साम्राज्यवादी जानबूझकर उसकी इन आकांक्षाओं को खूब हवा दे रहे हैं। हिन्दोस्तान–अमरीका रणनैतिक सांझेदारी को सुनियोजित ढंग से बढ़ाया जा रहा है। 30 अगस्त, 2016 को हिन्दोस्तान और अमरीका के बीच लोजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (सैन्य संचालन आदान–प्रदान पर समझौते का ज्ञापन) पर हस्ताक्षर किया गया, जिसके अनुसार अमरीकी साम्राज्यवादियों को हिन्दोस्तानी सैनिक अड्डों में रुककर ईंधन लेने की इजाजत दी जायेगी। इस समझौते के ज़रिये अमरीका यह चाहता है कि जब वह एशिया में कोई जंग छेड़ेगा तो वह हिन्दोस्तानी सैनिक अड्डों का इस्तेमाल कर सकेगा।

अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाओं को साकार करने के लिये, हिन्दोस्तानी शासक वर्ग तेज़ गति से सैन्यीकरण कर रहा है। सिप्री (स्टॉकहोम पीस रिसर्च इस्टिट्यूट) द्वारा फरवरी 2016 में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, 2011–2015 की पांच सालों की अवधि में हिन्दोस्तान दुनिया का सबसे बड़ा हथियारों का आयातक था। हथियारों के कुल आयातों में

हिन्दोस्तान का हिस्सा 14 प्रतिशत था[34]। हिन्दोस्तान आधुनिक से आधुनिक हथियार तंत्रों को हासिल करने के लिये अलग–अलग देशों के साथ सौदों पर हस्ताक्षर कर रहा है। अमरीका, रूस, इस्राइल और फ्रांस, ये सभी हिन्दोस्तानी सेना के लिये हथियारों के मुख्य आपूर्तिकर्ता हैं। इसके साथ–साथ, हिन्दोस्तान में एक सैन्य–औद्योगिक कॉम्प्लेक्स स्थापित करने का काम शुरू किया जा रहा है। हिन्दोस्तान की सभी बड़ी–बड़ी इज़ारेदार कंपनियों ने हथियारों के उत्पादन के क्षेत्र में बढ़–चढ़कर प्रवेश किया है।

हिन्दोस्तान हमेशा ही कच्चे तेल और गैस के आयात पर भारी तौर से निर्भर रहा है। इसीलिये हिन्दोस्तान विविध स्रोतों से अपनी ऊर्जा की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये सुनियोजित तरीके से एक योजना पर चल रहा है। फारस की खाड़ी के देशों के साथ आपूर्ति के दीर्घकालीन समझौतों के अलावा, ओ.एन.जी.सी. विदेश वियतनाम, रूस, सूडान और दूसरे देशों में तेल निष्कासन के काम में सक्रियता से लगा हुआ है। देश के अंदर हिन्दोस्तानी और विदेशी इज़ारेदार कंपनियों को ज़मीन पर तथा समुद्र में तेल और गैस की खोज करने को प्रोत्साहित किया जा रहा है। परमाणु ऊर्जा का विकास करना हिन्दोस्तान के सरमायदारों की रणनीति का एक अहम भाग है, जिसके लिये वे अमरीकी, फ्रांसीसी, रूसी और अन्य देशों की कंपनियों के साथ सहकार्य करके दर्जनों परमाणु संयंत्रों की स्थापना करना चाहते हैं। इसके साथ–साथ, हिन्दोस्तानी सरमायदार अपने देश में निर्मित परमाणु संयंत्र और उच्च स्तरीय परमाणु उद्योग भी विकसित करना चाहते हैं।

दक्षिण एशिया समेत दुनिया के विभिन्न इलाकों में बाज़ारों और प्रभाव क्षेत्रों के लिये हिन्दोस्तान और चीन के बीच स्पर्धा को अमरीकी साम्राज्यवादी सोच–समझकर उकसा रहे हैं। अमरीकी साम्राज्यवादी यह नहीं चाहते कि हिन्दोस्तान का चीन के साथ शांतिपूर्ण संबंध हो। वे हिन्दोस्तान में एक ऐसी सरकार चाहते हैं जो चीन को रोकने की अमरीकी रणनीति से पूरी तरह मिली हुई हो। वे रूस के साथ हिन्दोस्तान के लंबे समय से चले आ रहे संबंध को भी तोड़ना चाहते हैं। हिन्दोस्तानी शासक वर्ग के अंदर भी इस बात पर अंतर्विरोध है कि अमरीका की रणनीति के साथ किस हद तक सहकार्य करना चाहिये। यह चीन के साथ संबंधों में बार–बार होने वाले उतार–चढ़ाव में दिखता है।

दक्षिण एशिया में अमरीका की रणनीति में पाकिस्तान का महत्वपूर्ण स्थान है। शीत युद्ध के दौरान अमरीकी साम्राज्यवाद ने सोवियत संघ को विस्तार करने से रोकने के लिये पाकिस्तान को सबसे आगे रखकर इस्तेमाल किया था। अमरीकी साम्राज्यवाद ने यह सुनिश्चित किया है कि हिन्दोस्तान और पाकिस्तान हमेशा ही आपस में लड़ते रहेंगे। 11 सितम्बर, 2001 के बाद अमरीकी साम्राज्यवाद ने पाकिस्तान में सैनिक अड्डों का इस्तेमाल करके अफ़ग़ानिस्तान पर हमला किया था। अफ़ग़ानिस्तान के हमले और कब्जे तथा "आतंकवाद पर जंग" के बहाने पाकिस्तान में किये गये कत्लेआम का पाकिस्तान के लोगों ने भारी विरोध किया है।

पाकिस्तान के लोग एक देश बतौर जीने के अपने अधिकार पर खूंखार हमले का सामना कर रहे हैं। अमरीकी

साम्राज्यवाद ने पाकिस्तानी राज्य – उसकी सेना और खुफिया तंत्र में, सत्ता के लिये लड़ने वाली राजनीतिक पार्टियों में – गहराई तक अपना पांव जमा लिया है। वह अफग़ानिस्तान के प्रति पाकिस्तानी शासकों की आकांक्षाओं को उकसाता रहता है। वह हिन्दोस्तान और रूस पर दबाव डालने के लिये पाकिस्तान का इस्तेमाल करते रहना चाहता है। परन्तु अमरीकी वर्चस्व और हस्तक्षेप अब पाकिस्तान के लोगों को मंजूर नहीं है। पाकिस्तान में जो भी सरकार आती है उस पर बहुत दबाव होता है कि वह हिन्दोस्तान के साथ निरंतर झगड़े की इस स्थिति को खत्म करे। पाकिस्तान चीन के साथ अपना रणनैतिक संबंध और मज़बूत कर रहा है तथा रूस के साथ अपने संबंधों को भी विस्तृत कर रहा है।

हाल के वर्षों में हिन्दोस्तान और पाकिस्तान की सरकारों द्व ारा बातचीत के ज़रिये स्वाभाविक संबंध स्थापित करने की बार–बार कोशिश की गयी है। यह दिखाता है कि दोनों देशों के शासक वर्गों के कुछ तबके दोनों पड़ोसी देशों के बीच बेहतर दुतर्फा संबंधों से आर्थिक लाभ पाना चाहते हैं। दूसरी ओर, बर्तानवी–अमरीकी साम्राज्यवाद चाहता है कि दोनों देशों के बीच न–युद्ध न–शांति की स्थिति बनी रहे। जब भी दोनों देशों के नेता आपस में मिलकर बात करने का कदम उठाते हैं, तभी आतंकवादी हमले आयोजित किये जाते हैं। कई ऐसी घटनाएं अमरीका या उसके मित्रों की खुफिया एजेंसियों द्वारा, फरेबी झंडे तले की गयी कार्यवाइयां रही हैं। हिन्दोस्तान का शासक वर्ग इन आतंकवादी हमलों का इस्तेमाल करके पाकिस्तान के खिलाफ़ उग्रराष्ट्रवादी जंग

का उन्माद भड़काता है। इससे साफ दिखता है कि अमरीकी साम्राज्यवादियों ने हिन्दोस्तान के राजनीतिक संस्थानों में भी बहुत गहराई तक अपने पैर जमा रखे हैं।

साम्राज्यवादी राज्यों में कई ऐसी ताक़तें उभर रही हैं जो अपने–अपने प्रभाव क्षेत्रों को विस्तृत करना चाहती हैं। इनमें हिन्दोस्तान, इस्राइल, सऊदी अरब, तुर्की, दक्षिण कोरिया, दक्षिण अफ्रीका, पाकिस्तान तथा कुछ और राज्य शामिल हैं। उनमें से अनेक राज्य पहले से ही, गुप्त रूप से आतंकवाद को प्रश्रय देने और दिखावटी तौर पर आतंकवाद के खिलाफ़ जंग लड़ने के भू–राजनीतिक खेल में काफी गहराई तक शामिल हैं। तुर्की और सऊदी अरब जैसे राज्य जो लंबे समय से अमरीकी साम्राज्यवाद के मित्र रहे हैं और अमरीकी साम्राज्यवाद के आदेशानुसार आतंकवाद को प्रश्रय देने और गृहयुद्ध शुरू करने में सक्रियता से भाग ले रहे हैं, उनकी अपनी–अपनी आकांक्षाएं भी हैं। इसीलिये वे कभी–कभी अमरीकी साम्राज्यवाद से टकराते भी हैं। इस वर्ष कुछ महीने पहले तुर्की में अकस्मात सत्ता परिवर्तन का जो प्रयास किया गया था, उससे यह दिखता है कि अमरीकी साम्राज्यवाद अपनी रणनीति से कदम मिलाकर न चलने वाली सरकारों को गिराने के लिये हर प्रकार के साधनों का इस्तेमाल करता है।

सारांश में, अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति बहुत जटिल और ख़तरनाक है। प्रतिस्पर्धी इज़ारेदार समूहों तथा दुनिया के विभिन्न साम्राज्यवादी राज्यों के हितों के बीच टकराव तेज़ होता जा रहा है। इससे तीसरे विश्व युद्ध का ख़तरा सामने

आता है, जिसका अप्रत्याशित तबाहकारी परिणाम होगा। इस परिस्थिति के अंदर, अमरीकी साम्राज्यवाद दुनिया पर अपना वर्चस्व जमाने के लिये, पहले कदम बतौर यूरोप और एशिया पर अपना वर्चस्व जमाना चाहता है। परन्तु अमरीकी साम्राज्यवाद की इस कोशिश को बढ़ते विरोध का सामना करना पड़ रहा है। यह विरोध साम्राज्यवाद–विरोधी ताक़तों और प्रतिस्पर्धी साम्राज्यवादी ताक़तों की ओर से है। रूस व चीन तथा अन्य पुरानी व उभरती हुई ताक़तें अमरीकी साम्राज्यवाद की इन कोशिशों को चुनौती दे रही हैं और अपने–अपने प्रभाव क्षेत्रों का विस्तार करने का प्रयास कर रही हैं।

अमरीकी साम्राज्यवाद की रणनीति

साथियों,

जटिल और संकटग्रस्त वैश्विक स्थिति में अमरीकी साम्राज्यवाद की रणनीति अभी भी इस प्रकार है। वह एक तरफ जनता के असंतोष के साथ खिलवाड़ करके श्रमजीवी क्रांति को रोकने की कोशिश करता है और दूसरी तरफ अपने प्रतिस्पर्धियों को कमजोर और अलग–थलग करने के कदम उठाता है। ऐसा करके वह सुनिश्चित करने की कोशिश करता है कि अमरीकी साम्राज्यवाद की हुक्मशाही के तहत एक–ध्रुवीय दुनिया स्थापित की जा सके।

अमरीका इस दुनिया का सबसे अधिक सैन्यीकृत देश है। उसका विशाल और लगातार बढ़ता हुआ सैनिक खर्च बाकी

सारी दुनिया के कुल सैनिक खर्च का लगभग 40 प्रतिशत है। इस तरह यह सुनिश्चित किया जाता है कि अमरीका की सैनिक ताक़त को कोई चुनौती नहीं दे सकेगा[35]।

वर्तमान अवधि में, अमरीकी साम्राज्यवाद ने मज़दूर वर्ग और लोगों के संघर्षों को तोड़ने के लिये दो मुख्य विचारध ाारात्मक–राजनीतिक हथकंडों को विकसित किया है और उन्हें इस्तेमाल कर रहा है। उन्होंने एक जटिल तंत्र की रचना कर रखी है, जिसके ज़रिये गुप्त रूप से आतंकवाद को प्रश्रय दिया जाता है पर दिखाया जाता है कि "इस्लामी रूढ़ीवाद" के खिलाफ़ संघर्ष किया जा रहा है। दूसरा हथकंडा यह है कि "जनवादपरस्त" आंदोलनों को आयोजित करने का एक नेटवर्क स्थापित किया गया है। दुनिया पर हावी होने की अमरीका की कोशिश का विरोध करने वाले देशों को अस्त–व्यस्त करने, उनमें शासन परिवर्तन करने या उन्हें टुकड़े–टुकड़े करने के साम्राज्यवादी इरादों को हासिल करने के लिये इन हथकंडों का इस्तेमाल किया जाता है।

तथाकथित दुनिया का "सबसे पुराना लोकतंत्र" वास्तव में एक पुलिस राज्य है जिसमें नागरिक अधिकारों को भी निलंबित किया गया है। पेट्रियट एक्ट जैसे कानूनों और होमलैंड सिक्युरिटी, आदि जैसे तंत्रों का इस्तेमाल करके अमरीकी राज्य "राष्ट्रीय सुरक्षा" के झंडे तले, अपना वर्चस्व जमाने की कोशिश के हर विरोध को कुचल रहा है। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने आतंकवाद और "आतंकवाद पर जंग", इन दोनों मुहिमों को चलाया है। इसमें उनका इरादा रहा है अमरीका के मज़दूर वर्ग और लोगों की एकता को

तोड़ना और समाज–विरोधी हमले के खिलाफ़ उनके संघर्ष को गुमराह करना और तोड़ना।

वर्तमान अवधि में बर्तानवी–अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा बढ़ावा दी गई बेहद ख़तरनाक नस्लवादी अवधारणाओं में एक, तथाकथित lH;rkvk d chp Vdjko की अवधारण ा है, जिसके अनुसार दुनिया में मुख्य संघर्ष शोषक और शोषित वर्गों के बीच नहीं, बल्कि सभ्य ईसाइयों और असभ्य इस्लामी राष्ट्रों व लोगों के बीच है। एक इस्लामी वैश्विक ताक़त का हव्वा खड़ा किया जा रहा है ताकि जनसमुदाय को बुद्धू बनाया और डराया जा सके तथा साम्राज्यवादियों के संकीर्ण इरादों को हासिल करने के लिये नाजायज़ जंगों, राष्ट्रों के विनाश और बढ़ते फासीवादी दमन व झूठे प्रचार को जायज़ ठहराया जा सके। बर्तानवी–अमरीकी प्रचार मशीन पहले लोगों को दुष्टता के प्रतीक बतौर "लाल ख़तरे" से डराता था, और अब उसकी जगह पर "इस्लामी आतंक" के हव्वे से डराता है।

1978 में ईरान की क्रांति, जिसमें अमरीकापरस्त अत्याचारी शाह का तख़्ता पलट किया गया था, उसके बाद से अमरीका ने तथाकथित "इस्लामी रूढ़ीवाद" के खिलाफ़ खूब प्रचार करना शुरू कर दिया। साम्राज्यवाद के खिलाफ़ व अपने राष्ट्रीय अधिकारों की हिफ़ाज़त में मुसलमान लोगों के संघर्षों को "इस्लामी रूढ़ीवाद" बताकर, साम्राज्यवादियों ने इस संघर्ष के असली सार और इसके साम्राज्यवाद–विरोधी व लोकतांत्रिक चरित्र पर पर्दा डालने की कोशिश की है।

अब तक कई ऐसे तथ्य सामने आये हैं जिनसे इस सच्चाई का खुलासा होता है कि "इस्लामी आतंकवाद" का हथकंडा इसलिये रचा गया है ताकि अमरीकी साम्राज्यवाद के इरादों को बढ़ावा दिया जा सके तथा उसके वर्चस्व के प्रति किसी भी विरोध या संभावित चुनौती को खत्म किया जा सके। अमरीका और उसकी खुफिया एजेंसियां तरह–तरह के आतंकवादी गिरोहों के आदि–निर्माता हैं, जिन्हें अफग़ानिस्तान में सोवियत कब्ज़ाकारी सेनाओं के खिलाफ़ लड़ने के लिये उन्होंने धन और हथियार दिये थे। सोवियत कब्ज़ाकारी सेनाओं के खिलाफ़ अफग़ान लोगों के जायज़ संघर्ष को अमरीका ने गुमराह करके, अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिये इस्तेमाल किया। जब सोवियत सेना अफग़ानिस्तान से बाहर निकल गयी तब इन आतंकवादी गिरोहों को विभिन्न राज्यों ने अपने–अपने राजनीतिक इरादों को हासिल करने के लिये इस्तेमाल किया। इनमें से कई हथियारबंद लोगों को अमरीका के प्रायोजन में, अल–कायदा में भर्ती किया गया[36]।

लगभग 1990 से, कई सऊदी और अन्य अरब राष्ट्रों के लोगों, जिन्हें अल–कायदा में भी भर्ती किया गया था, को सी.आई.ए. के विमानों में बिठाकर अज़रबैजान लाया गया। कैस्पियन समुद्र के अनमोल पेट्रोलियम संसाधनों पर ब्रिटिश और अमरीका की तेल कंपनियों की नज़रें थीं। सी.आई.ए. ने यूगोस्लाविया में, बोस्निया–हर्जगोविना से कोसोवो तक, युद्ध की आग को भड़काने के इरादे से, हथियारबंद गिरोहों को वहां घुसाया। रूसी तेल पाइपलाइन की राहों में तोड़फोड़

करने के लिये भी हथियारबंद गिरोहों को चेचेन्या और डागेस्तान में लाया गया[37]।

इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सिरिया (आई.एस.आई.एस.) नामक आतंकवादी गिरोह तब कुख्यात हो गया जब यू–ट्यूब में एक अमरीकी पत्रकार के सर काटे जाने की विडियो क्लिप सारी दुनिया में दिखाई गयी। बाद में, विधि चिकित्साकारी जांच के बाद यह साबित हुआ कि वह विडियो क्लिप फर्ज़ी था और भाड़े के अभिनेताओं का इस्तेमाल करके बनाया गया था। परन्तु जिस समय उसे फैलाया गया था, उस समय इराक और सिरिया में अमरीका नीत नाटो द्वारा सैनिक हमले के एक नये दौर के पक्ष में जनमत पैदा करने में इससे बहुत मदद मिली थी। अमरीका ने पश्चिम एशिया और अरब दुनिया में शिया–सुन्नी के आधार पर साम्प्रदायिक झगड़े आयोजित करने, मौजूदे राज्यों को नष्ट करने और पश्चिम एशिया के नक्शे को फिर से बनाने के उद्देश्य से, सऊदी अरब की सांठ–गांठ में, आई.एस.आई.एस. की रचना की थी। आई.एस.आई.एस. को ईरान से लूटे गये तेल को बेचने की इजाजत दी गयी है, जिसके ज़रिये वह अपनी हरकतों के लिये धन जुटाता है।

दुनिया में बढ़ रही हिंसा और आतंक के वातावरण के लिये, साम्राज्यवादी बड़ी आसानी से तथाकथित गैर–राजकीय नायकों को दोषी ठहराते हैं, जबकि ये नायक वास्तव में उनकी ही पैदाइश हैं। साम्राज्यवादी इन्हें कुछ "हथियारबंद और सिरफिरे इस्लामी" बताते हैं। अमरीका की अगुवाई में साम्राज्यवादी ताक़तें ही दुनिया में आतंक के वर्तमान माहौल

के लिये जिम्मेदार हैं। "आतंकवाद पर जंग" के नाम से वे वास्तव में मुसलमान लोगों और सभी राष्ट्रों व लोगों के अधिकारों पर हमले कर रहे हैं।

प्रतिदिन बार–बार झूठ बोलना ताकि लोग उसे सच मानने लग जायें – इस नाज़ी फासीवादी तरीके को अमरीकी साम्राज्यवादियों ने और कुशल बनाया है तथा संस्थागत कर दिया है। उन्होंने यह मनगढ़ंत झूठी कहानी फैलायी कि 11 सितम्बर, 2001 के आतंकवादी हमले का मुख्य संचालक अफग़ानिस्तान में किसी गुफा में छुपा हुआ था ताकि उस देश पर सैनिक हमले और कब्जे को जायज़ ठहराया जा सके। उन्होंने एक और मनगढ़ंत झूठी कहानी फैलाई कि सद्दाम हुसैन के शासन में इराक के अंदर "जनसंहार के हथियार" थे, जिसके आधार पर उन्होंने विशाल पैमाने पर उस देश पर बम बरसाना, उस पर सैनिक हमला और कब्ज़ा करना और लाखों–लाखों बेकसूरों का कत्ल करना जायज़ ठहराया। उन्होंने लिबिया पर हमले को, सिरिया में सरकार विरोधी गिरोहों को उनके द्वारा दिये गये समर्थन को तथा ईरान और रूस पर प्रतिबंध लगाने को जायज़ ठहराने के लिये, कई और मनगढ़ंत झूठ फैलाये हैं।

आतंकवाद के साथ–साथ, अमरीकी साम्राज्यवादियों ने विभिन्न देशों में "जनवादी आंदोलन" आयोजित करने के हथियार को भी विकसित किया है। उनका उद्देश्य है श्रमजीवी वर्ग और सभी उत्पीड़ित और जागरुक लोगों द्वारा लोकतंत्र के नव–निर्माण के लिये किये जा रहे असली संघर्ष को नष्ट करना। उनका उद्देश्य यह भी है कि अमरीका की

नीति का पालन करने के लिये विभिन्न सरकारों पर दबाव डाला जाये और अमरीकी चौधराहट को जमाने के रास्ते में किसी भी संभावित बाधा को हटा दिया जाये।

8 जून, 1982 को बर्तानवी संसद को संबोधित करते हुए, तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन ने सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ को "दुष्टता का साम्राज्य" करार कर उसकी निंदा की थी और वहां तथा बाकी दुनिया में सोवियत संघ के विरोधियों की मदद करने का प्रस्ताव रखा था। उन्होंने ऐलान किया था कि "हमें लोकतंत्र के लिये आवश्यक ढांचे – प्रेस की आज़ादी, ट्रेड यूनियनों, राजनीतिक पार्टियों और विश्वविद्यालयों – की रचना करने की ज़रूरत है। ऐसा करने से लोगों को अपनी संस्कृति को विकसित करने तथा अपने विवादों को शांतिपूर्वक हल करने के लिये सबसे बेहतरीन रास्ता चुनने की आज़ादी मिलेगी"[38]। उस भाषण के बाद अमरीका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया के शासक वर्गों ने मिलकर नवम्बर 1983 में नेशनल एन्डावमेंट फॉर डेमोक्रेसी (एन.ई.डी.) नामक एक संस्था बनाई जिसका मुख्यालय वाशिंगटन डी.सी. में है।

एन.ई.डी. सारी दुनिया में गैर–सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) और दूसरे तथाकथित सिविल सोसायटी के संगठनों को धन देता रहा है, जिसके लिये चार अलग–अलग रास्ते अपनाये जाते हैं : (1) फ्री ट्रेड यूनियन इंस्टिट्यूट (एफ.टी.यू.आई.) जो अब अमेरिकन सेंटर फॉर इन्टरनेशनल लेबर सोलिडेरिटी (ए.सी.आई.एल.एस.) के नाम से जाना जाता है और जिसका प्रबंधन सबसे मालदार अमरीकी ट्रेड यूनियन

संघ, अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर एंड कांग्रेस ऑफ इंडस्ट्रियल ऑरगेनाइज़ेशंस (ए.एफ.एल.–सी.आई.ओ.) करता है; (2) सेंटर फॉर इन्टरनेशनल प्राइवेट एंटरप्राइज़ (सी.आई.पी.ई.), जिसका प्रबंधन अमरीका चेंबर ऑफ कॉमर्स करता है; (3) इन्टरनेशनल रिपब्लिकन इंस्टिट्यूट (आई.आर.आई.), जिसका संचालन रिपब्लिकन पार्टी करती है; और (4) नेशनल डेमोक्रेटिक इंस्टिट्यूट फॉर इन्टरनेशनल अफेयर्स (एन.डी.आई.), जिसका संचालन डेमोक्रेटिक पार्टी करती है। ए.सी.आई.एल.एस. की स्थापना वास्तव में दूसरे विश्व युद्ध के बाद हुई थी, परन्तु 1978 में जब सी.आई.ए. के साथ उसके संबंधों का खुलासा हो गया, तब उसका नाम बदल दिया गया था। सी.आई.पी.ई., आई.आर.आई. और एन.डी.आई. का गठन भी सी.आई.ए. द्वारा ही किया गया था।

एन.ई.डी. और उसके नेटवर्क के अलावा कई अन्य नेटवर्क भी हैं, जैसे कि नियो–कनसरवेटिव फ्रीडम हाउस, एलबर्ट आइंस्टाइन इंस्टिट्यूट (ए.ई.आई.), इन्टरनेशनल सेंटर फॉर नॉन–वायोलेंट कॉनफ्लिक्ट (आई.सी.एन.सी.) और अरबपति जॉर्ज सोरोज़ द्वारा बढ़ावा दिये गये एन.जी.ओ., जिन सबके ज़रिये सी.आई.ए. और यू.एस.ए.आई.डी. दुनियाभर के देशों में तरह–तरह की बाग़ी विपक्षी ताक़तों को समर्थन देते हैं। सोरोज़ के कई एन.जी.ओ. ने सर्बिया की "बुलडोज़र क्रांति", जिसमें 2000 में स्लोबोदान मिलोसेविच का तख्तापलट किया गया था, को आयोजित करने में अहम भूमिका निभाई थी[39]। उसके बाद से सोशल मीडिया के ज़रिये कई "क्रांतियां" की गयी हैं। इनमें यूक्रेन की *आरेंज* (नारंगी) क्रांति, ट्यूनीसिया की *जैसमिन* (चमेली) क्रांति, मिस्र की *लोटस* (कमल) क्रांति,

जॉर्जिया की *रोज़* (गुलाब) क्रांति और किरगिज़स्तान की *ट्यूलिप* क्रांति शामिल हैं।

अमरीकी रणनैतिक हितों के अनुसार, अलग–अलग देशों में अस्त–व्यस्तता पैदा करने और शासन परिवर्तन करने के लिये इस प्रकार के आंदोलनों को शुरू करने की सब जगह एक जैसी सुनियोजित प्रक्रिया विकसित की गयी है। इसमें छात्रों और नौजवानों के नये–नये चेहरे सामने रखे जाते हैं और दूसरों को इनमें शामिल होने के लिये आकर्षित किया जाता है जैसे कि यही फैशन में है। इनमें हमेशा एक चिन्ह, एक रंग और इसमें लोगों को आकर्षित करने की रणनीति होती है। सर्बिया में काले व सफेद रंग की एक मुट्ठी प्रतिरोध का चिन्ह बन गयी। यूक्रेन में चिन्ह वही रहा परन्तु रंग को नारंगी बना दिया गया। जॉर्जिया में गुलाबी रंग की मुट्ठी का चिन्ह था और वेनेजुएला में खुले हाथ का चिन्ह था[40]।

2002 में सी.आई.ए. ने वेनेजुएला में दिवंगत राष्ट्रपति ह्यूगो शावेज़ की सरकार के खिलाफ़ अकस्मात शासन परिवर्तन का प्रयास किया, जो नाकामयाब रहा। अगले वर्ष, एलबर्ट आइंस्टाइन इंस्टिट्यूट (ए.ई.आई.) ने वेनेजुएला के विपक्ष को उस देश में "लोकतंत्र की पुनः स्थापना" करने के तौर तरीके सिखाने के लिये एक पाठ्यक्रम शुरू किया। ए.ई.आई. की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, उस कार्यशाला में विपक्ष की राजनीतिक पार्टियों, एन.जी.ओ., कार्यकर्ताओं और मज़दूर यूनियनों ने भाग लिया और "डिक्टेटर का तख़्तापलट करने" के तौर–तरीके सीखे। उसके बाद, एक वर्ष तक सड़कों

पर हिंसा होती रही, बार–बार राजनीतिक अस्त–व्यस्तता फैलाने की कोशिशें की गयीं और शावेज़ को राष्ट्रपति पद से वापस बुलाने का जनमत संग्रह भी किया गया। जनमत संग्रह में विपक्ष 40–60 से हारा।

दिसम्बर 2011 में, मिश्र के अधिकारियों ने काहिरा में नेशनल एन्डावमेंट फॉर डेमोक्रेसी (एन.ई.डी.) और इन्टरनेशनल रिपब्लिकन इंस्टिट्यूट (आई.आर.आई.) के कार्यालयों पर छापे मारे और तलाशी ली। इनके कई नेताओं पर खुफिया कर्मों में लिप्त होने का आरोप लगाया गया। इन कार्यालयों से जो दस्तावेज़ मिले, उनसे इस बात का खुलासा हुआ कि मिस्र में जनता के असंतोष के साथ खिलवाड़ करके फरेबी क्रांति आयोजित करने का सरगना नेशनल एन्डावमेंट फॉर डेमोक्रेसी ही था।

नेशनल एन्डावमेंट फॉर डेमोक्रेसी ने 2003 में अपनी 20वीं सालगिरह के अवसर पर यह ऐलान किया कि उसने दुनिया में 6,000 से अधिक राजनीतिक व सामाजिक संगठनों को धन दिया है। उसके बाद से अब तक यह संख्या और भी बढ़ गयी है। एन.ई.डी. ने दावा किया कि उसने अकेले ही पोलैंड में सोलिडेरिटी नामक ट्रेड यूनियन संगठनों को, चेकोस्लोवाकिया में चार्टर 77 और सर्बिया में ऑटपोर को स्थापित किया था। एन.ई.डी. को इस बात पर गर्व था कि उसने भूतपूर्व यूगोस्लाविया में रेडियो बी–92 को शुरू से रचित किया था और "मुक्त किये गये" इराक में कई सारे नये "स्वतंत्र" मीडिया संस्थानों को शुरू किया था[38]।

अमरीकी साम्राज्यवादी बहुत सारी ऐसी मंडलियों और गैर–सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) के प्रायोजनकर्ता हैं, जो "लोकतंत्र और सुशासन" के उनके अजेंडा के किसी न किसी पहलू की हिमायत करने में लगे हुए हैं। जब–जब उन्हें ज़रूरत होती है, तब–तब वे किसी देश में, वहां की सरकार पर दबाव डालने और अगर वह सरकार उनकी बात न माने तो उसे गिराने की धमकी देने के लिये, इनमें से एक या दूसरे संगठन को सक्रिय कर देते हैं। उसके बाद, अगर वह सरकार फिर भी अमरीका की बात नहीं मानती तो उसे गिरा दिया जाता है।

इस प्रकार के आंदोलनों का इस्तेमाल करके सोवियत संघ के भूतपूर्व गणराज्यों में अमरीकापरस्त सरकारों को सत्ता में लाया गया। लातिन अमरीका, उत्तर अफ्रीका और पश्चिम एशिया की साम्राज्यवाद–विरोधी सरकारों के खिलाफ़ भी इनका इस्तेमाल किया गया है। अमरीका का पुराना मित्र, मिस्र के मुबारक ने जब अमरीकी डॉलर और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से हटकर अलग वित्त व्यवस्था शुरू करने के लिये लिबिया के गद्दाफी के साथ मिलकर काम करना शुरू किया और अमरीकी साम्राज्यवादियों के आदेश पर सत्ता से हटने को इनकार किया, तब "कमल क्रांति" के ज़रिये उसे सत्ता से हटाया गया[41]।

हिन्दोस्तान में अमरीकी साम्राज्यवादियों ने "लोकतंत्र और सुशासन" के अजेंडा को बढ़ावा देने के लिये अनेक गैर–सरकारी संगठनों को बढ़ावा दे रखा है। जैसे–जैसे अमरीकी साम्राज्यवादियों की रणनीति में हिन्दोस्तान

का महत्व बढ़ता जा रहा है, वैसे–वैसे हिन्दोस्तानी और अंतर्राष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठनों के ज़रिये यू.एस.ए.आई.डी. और तमाम अमरीकी संस्थानों से यहां पहुचने वाली धनराशी भी बढ़ती जा रही है।

"भ्रष्टाचार विरोध" का झंडा ऐतिहासिक तौर पर बर्तानवी–अमरीकी साम्राज्यवाद का पसंदीदा औजार रहा है, जिसके सहारे वह अपने हित में लोगों के असंतोष के साथ दांवपेंच करता आया है। बीते कुछ महीनों से अमरीकी साम्राज्यवादियों ने ब्राज़ील की बड़ी–बड़ी इज़ारेदार कंपनियों के साथ गठबंधन बनाकर, "भ्रष्टाचार के खिलाफ़ आंदोलन" रचकर, ब्राज़ील की राष्ट्रपति डिल्मा रूसेफ को दोषी ठहराते हुए शासन परिवर्तन आयोजित किया है।

हिन्दोस्तान में 1970 के दशक में जयप्रकाश नारायण की अगुवाई में तथा 1980 के दशक में वी.पी. सिंह की अगुवाई में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलनों का अमरीकी साम्राज्यवादियों ने गुप्त रूप से समर्थन किया था। 2011 में जो भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन शुरू किया गया था, उसे भी अमरीका ने गुप्त समर्थन दिया था। उस आंदोलन के लिये अमरीका का समर्थन इस बात से स्पष्ट था कि इज़ारेदार पूंजीपतियों द्वारा नियंत्रित मीडिया ने उसे खूब बढ़ा–चढ़ाकर दिखाया था तथा अमरीकी प्रशासन के ऊंचे अफ़सरों ने हिन्दोस्तानी सरकार को खुलेआम चेतावनी दी थी कि उस आंदोलन को दबाने के लिये बल प्रयोग न किया जाये। हिन्दोस्तान में तमाम एन.जी.ओ. संगठनों को अमरीका खुलेआम और गुप्त रूप से धन देता है। "सुशासन" लाने के मुख्य झंडे तले, वे

एन.जी.ओ. संगठन साम्राज्यवादियों के कार्यक्रम के इस या उस पहलू को बढ़ावा देते हैं। वे हिन्दोस्तान में अमरीकी हितों को बढ़ावा देते हुये, खास पार्टियों, नेताओं और बड़े औद्योगिक घरानों को बदनाम करने के लिये भ्रष्टाचार के कांडों के पर्दाफाश का इस्तेमाल करते हैं।

बाज़ारों पर वर्चस्व जमाने तथा कच्चे माल के स्रोतों पर नियंत्रण करने के लिये इज़ारेदार पूंजीपति गलाकाट स्पर्धा करते हैं और इस स्पर्धा में वे भी भ्रष्टाचार के कांडों के पर्दाफाश का इस्तेमाल करते हैं। जब इज़ारेदार कंपनियों के आपसी झगड़ों और अंतर–साम्राज्यवादी झगड़ों को भ्रष्टाचार और कालाधन के खिलाफ़ लड़ाई के रूप में पेश किया जाता है, तो यह मज़दूर वर्ग और लोगों के दिमाग में गुमराहकारी सोच पैदा करता है। यह मज़दूर वर्ग और लोगों में इस गुमराहकारी सोच का पोषण करता है कि पूंजीवाद को सुधारकर एक साफ–सुथरे और स्पर्धाकारी व्यवस्था में बदला जा सकता है, जिसमें इज़ारेदारी, सहचर पूंजीवाद (क्रोनी कैपिटलिज़्म) और भ्रष्टाचार नहीं होंगे। परन्तु यह एक भ्रम मात्र ही है।

जब हिन्दोस्तान के सरमायदारों ने मनमोहन सिंह की सरकार को स्थापित किया था, उस समय अमरीकी साम्राज्यवादी मनमोहन सिंह की सरकार की खूब प्रशंसा करते थे। परन्तु बाद में, लागू किये जाने वाले परमाणु दायित्व कानून पर अमरीकी साम्राज्यवादियों के साथ उस सरकार के गंभीर मतभेद सामने आये। अमरीकी नेता गैर–अमरीकी कंपनियों को रक्षा सामग्रियों के ठेके दिये जाने और अमरीका में

गिरफ्तार होने वाली एक हिन्दोस्तानी राजदूत के मामले में हिन्दोस्तान ने जो जवाबी प्रक्रिया की, उससे भी नाराज़ थे। अमरीकी नेता सैनिक सांझेदारी को बढ़ावा देने पर मनमोहन सिंह सरकार द्वारा पैर घसीटने से तथा अमरीका और जापान के साथ सैनिक गठबंधन में शामिल होकर चीन का मुकाबला करने में उस सरकार की अनिच्छा से नाराज़ थे। अचानक अमरीकी पत्रिका टाइम मैगज़ीन के कवर पर मनमोहन सिंह को एक "गैर–क्रियाशील सुधारक" करार दिया गया। लगभग उसी समय नरेंद्र मोदी के प्रति अमरीकी अधिकारियों के बर्ताव में भी अचानक बदलाव आया। पहले वे उन्हें कोई खास महत्व नहीं देते थे परन्तु अब उन्हें दूरदर्शी और स्वाभाविक मित्र बताकर उनकी तारीफ करने लगे।

2014 में लोक सभा चुनावों के ज़रिये जो सरकार परिवर्तन हुआ, उसके पीछे यह स्पष्ट था कि हिन्दोस्तानी इज़ारेदार कंपनियों के एक प्रभावशाली भाग की सांठ–गांठ में वॉशिंगटन सक्रियता से काम कर रहा था। इसके साथ–साथ, अमरीकी भू–राजनीतिक रणनीति के साथ और भी नज़दीकी से जुड़ने की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और विदेश नीति का रुझान भी बदल रहा है। खुफिया कर्म, रक्षा और दूसरे क्षेत्रों में वर्तमान हिन्दोस्तानी सरकार और अमरीका के बीच सहकार्य को खूब बढ़ा दिया गया है। इस समय चीन और पाकिस्तान, दोनों को खलनायक के रूप में पेश करते हुए, जोर–शोर से यह चेतावनी दी जा रही है कि हिन्दोस्तान को दोनों मोर्चों पर जंग के लिये तैयार होने की ज़रूरत है।

सभी ज़मीर वाले हिन्दोस्तानियों को सरकारी तौर पर की गयी हिन्दोस्तान–अमरीका सांझेदारी और एन.जी.ओ. संगठनों के ज़रिये अमरीकी हस्तक्षेप, दोनों के ख़तरों से सतर्क रहना होगा। अमरीकी साम्राज्यवाद हिन्दोस्तानी राज्य पर दबाव डालने तथा अपने एजेंडे को बढ़ावा देने के लिये, सरकारी प्रशासन और तरह–तरह के गैर–सरकारी संगठनों के अंदर अपनी एजेंसियों का इस्तेमाल करता है। जब तक मोदी सरकार अमरीकी साम्राज्यवाद की भू–राजनीतिक कार्यदिशा के अनुसार चलती है और सिर्फ कुछ मान्य हद तक ही उससे भटकती है, तब तक वॉशिंगटन द्वारा समर्थित "लोकतंत्र परस्त" और "भ्रष्टाचार विरोधी" मुजाहिद चुपचाप रहेंगे। परन्तु अगर हिन्दोस्तानी सरकार अमरीकी साम्राज्यवाद की सहनशीलता की सीमाओं को पार करती है, तो अस्त–व्यस्तता फैलाने वाले तंत्र क्रियाशील हो जायेंगे। हमारे देश और दुनिया का बीता इतिहास यही दिखाता है।

सारांश में, अमरीकी साम्राज्यवाद और दुनिया पर वर्चस्व जमाने के उसके हमलावर कदम इस समय लोकतांत्रिक और मानव अधिकारों तथा विश्व शांति के लिये सबसे बड़ा ख़तरा हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद ने अपने विरोधियों को अस्त–व्यस्त करने, अपने देश के अंदर फासीवादी दमन तथा विदेशों में साम्राज्यवादी जंग को जायज़ ठहराने के हथियार बतौर, इस्लामी आतंकवाद के हव्वे को खड़ा किया है। उसने एशिया, यूरोप, अफ्रीका और लातिन अमरीका के अलग–अलग देशों में, हर देश के लिये विशेष विनाशकारी संस्थान स्थापित किये हैं। उसने राष्ट्रों को तबाह करने और जिन–जिन देशों में मौजूदा सरकारें उसके वर्चस्व

जमाने की योजनाओं को नहीं मानती हैं, उन–उन देशों में शासन परिवर्तन करने का रास्ता अपनाया है। इसमें अमरीकी साम्राज्यवाद का इरादा है हर देश के मज़दूर वर्ग और मेहनतकशों को अपने समाज को संकट से बाहर निकालने के कार्यक्रम के इर्द–गिर्द एकजुट होने से रोकना। एशिया के लिये उसकी योजना, खास तौर पर हिन्दोस्तान के मज़दूर वर्ग और लोगों के लिये, गंभीर चिंता का विषय है। अमरीकी साम्राज्यवाद और आतंकवाद से लड़ने व लोकतंत्र को बढ़ावा देने के झंडे तले किये गये उसके खतरनाक और वर्चस्व फैलाने वाले प्रयासों के खिलाफ़ हमें व्यापकतम राजनीतिक एकता बनानी होगी। हमारे देश का शासक वर्ग जंग में, युद्धतंत्र, खुफियातंत्र और तथाकथित आतंकवाद विरोधी कार्यवाइयों में अमरीका को समर्थन देकर, हिन्दोस्तान–अमरीका सैनिक सहकार्य को मजबूत करने के तरह–तरह के कदम उठा रहा है। इन सभी कदमों का हमें एकजुट होकर, जमकर विरोध करना होगा।

हिन्दोस्तानी शासक वर्ग की रणनीति

साथियों,

हमारे देश के शासक वर्ग ने बीते 70 वर्षों में विकसित होकर अपना स्वरूप बदल लिया है। जबकि पहले वह उपनिवेशवादी शासन के दौरान बर्तानवी सरमायदारों का कनिष्ठ सांझेदार हुआ करता था, अब वह एक साम्राज्यवादी सरमायदार बन गया है जिसके अपने वैश्विक प्रसारवादी लक्ष्य हैं। 1947 से पूंजीवादी विकास के जिस रास्ते को

अपनाया गया है और जिसे 1991 के बाद और तेज़ी से आगे बढ़ाया गया है, उस रास्ते पर चलकर हिन्दोस्तान, जिसकी आबादी दुनिया में दूसरे स्थान पर है, आज दुनिया की 7वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। वर्तमान विनिमय दरों के अनुसार अगर हिन्दोस्तान के सकल घरेलू उत्पाद को देखा जाये तो अवश्य ही ऐसा कहा जा सकता है[42]।

हिन्दोस्तान की अर्थव्यवस्था तरह–तरह के उत्पादन संबंधों और उत्पादन की व्यवस्थाओं का मिश्रण है। इसमें सबसे आधुनिक बड़े पैमाने के उद्योग और सेवाएं हैं, तो सबसे पिछड़े और प्राचीन प्रकार के श्रम का प्रयोग भी है। उत्पादन का काम वेतनभोगी मज़दूरी, स्वरोज़गार पारिवारिक मज़दूरी, किरायेदार मज़दूरी, बाल मज़दूरी और बंधुआ मज़दूरी के ज़रिये किया जाता है। वर्ग, जाति और लिंग के आधार पर श्रम का विविध प्रकार से शोषण होता है। वैतनिक श्रम पर आधारित पूंजीवादी उत्पादन ही उत्पादन का प्रमुख संबंध है, जिसका साल दर साल प्रसार होता जा रहा है, जिसकी वजह से देश में वेतनभोगी मज़दूरों की संख्या बढ़ती जा रही है।

दुनिया की दूसरी बड़ी पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में, हिन्दोस्तान की आबादी सबसे कम उम्र की है। हिन्दोस्तान ऐसा देश है जिसमें कामकाजी व्यक्तियों की तुलना में आश्रितों की संख्या सबसे कम है। हमारी नौजवान और अधिक से अधिक शिक्षित श्रमशक्ति देश की सबसे मूल्यवान दीर्घकालीन उत्पादक संपदा है। जब इस अधिक से अधिक शिक्षित और कुशल श्रमशक्ति के साथ–साथ, देश के

अनमोल और विविध प्राकृतिक संसाधनों की गणना की जाती है तो पता चलता है कि हिन्दोस्तानी समाज की उत्पादक क्षमता वास्तव में बहुत विशाल है। परन्तु हिन्दोस्तान आज भी वह देश है जिसमें दुनिया के सबसे अधिक कंगाल और बीमार लोग पाये जाते हैं।

हमारे देश की सबसे मूल्यवान संपदा, हमारी मानवीय उत्पादक शक्ति, को वर्तमान आर्थिक व्यवस्था के द्वारा तबाह किया जा रहा है। श्रमशक्ति के एक भाग का अतिशोषण हो रहा है जबकि दूसरा भाग रोज़गार के अभाव के कारण पूरी तरह या आंशिक रूप से खाली बैठा है। मानव संसाधनों के अत्यधिक प्रयोग और अल्प प्रयोग के इस असंतुलन की वजह यह है कि अर्थव्यवस्था की प्रेरक शक्ति और दिशा है निजी मुनाफ़ों को अधिकतम बनाना।

सामाजिक उत्पादन समाज के सदस्यों, मानवों की ज़रूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से नहीं किया जाता है। सामाजिक उत्पादन मात्र कुछ मुट्ठीभर अति अमीर पूंजीपतियों की लालच को पूरा करने के लिये किया जाता है। ये अति अमीर पूंजीपति सत्ता पर हावी हैं और बलपूर्वक अपनी सत्ता को बरकरार रखते हैं, ताकि वे हिन्दोस्तान की भूमि और श्रम को ठीक उसी तरह लूटते रह सकें, जैसे कि बर्तानवी उपनिवेशवादियों ने बीते दिनों में लूटा था। सभी आर्थिक समस्याओं की यही जड़ है। अधिकतम मेहनतकश लोगों और पूरे समाज के आम हितों को, मुट्ठीभर शोषकों की लालच को पूरा करने के लिये, कुर्बान किया जा रहा है।

150 इज़ारेदार घराने हमारे देश के पूंजीपति वर्ग की अगुवाई करते हैं, जिनमें से हर घराने की दसों–हजारों करोड़ों रुपयों की पूंजी है। उनकी पूंजी परिवहन, व्यापार, वित्त जैसे उत्पादन के विविध क्षेत्रों में तथा दुनिया के कई महाद्व ीपों में फैली हुई है[43]। इज़ारेदार घरानों के हित हमारे देश में सबसे शक्तिशाली आर्थिक हित हैं।

ये इज़ारेदार घराने लगभग सभी वस्तुओं के बाज़ारों पर हावी हैं। ये इज़ारेदार घराने राज्य पर नियंत्रण करते हैं और राज्य उन्हीं के हितों को बढ़ावा देने के लिये काम करता है। राजकीय इज़ारेदार कंपनियां, निजी इज़ारेदार कंपनियों की वृद्धि के लिये बुनियादी पदार्थों और ढांचागत संरचना की आपूर्ति करती हैं। पूंजीवादी शोषण या इज़ारेदार पूंजीपतियों के दबदबे के खिलाफ़ लोगों द्वारा हर प्रकार के विरोध को राज्य कुचल देता है।

समाज के दूसरे ध्रुव पर श्रमजीवी वर्ग है, वेतनभोगी मज़दूरों का वर्ग जो अब देश में सबसे बड़ी संख्या में है। श्रमजीवी वर्ग में सिर्फ फैक्टरी मज़दूर, निर्माण मज़दूर और खेत मज़दूर ही नहीं बल्कि रेलवे मज़दूर और अन्य परिवहन मज़दूर, बैंक और बीमा कर्मचारी, आई.टी. क्षेत्र के कर्मी व मीडियाकर्मी, दुकानों, होटलों व रेस्तराओं में काम करने वाले, शिक्षक, डॉक्टर, नर्स, इत्यादि, सभी शामिल हैं।

उत्पादन के पूंजीवादी संबंध, जो 1947 में सिर्फ कुछ गिने–चुने क्षेत्रों में ही पाये जाते थे, अब पूरी अर्थव्यवस्था में हावी हैं। उत्पादन के पूंजीवादी संबंध अब न केवल खनन

और विनिर्माण उद्योग, परिवहन, संचार और वित्त सेवाओं में प्रमुख हैं बल्कि पहले से कहीं ज्यादा तेज़ी से कृषि में भी प्रवेश कर रहे हैं। हिन्दोस्तानी अर्थव्यवस्था के वार्षिक उत्पाद का दो–तिहाई से अधिक भाग निजी या सरकारी कंपनियों में काम कर रहे वेतनभोगी मज़दूरों के श्रम से पैदा होता है।

सरमायदार वर्ग और श्रमजीवी वर्ग के बीच में कई मध्यवर्ती तबके हैं जो अपने उत्पादन के छोटे–छोटे साधनों के साथ काम करते हैं। इनमें अधिकतम किसान, कारीगर, दुकानदार, निजी प्रेक्टिस चलाने वाले पेशेवर व अन्य "स्वरोज़गार" वाले लोग हैं। उनमें बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्होंने बैंकों से कर्ज़े ले रखे हैं और उनके उत्पादन के साधनों को बैंकों ने अपने शिकंजे में कसकर जकड़ रखा है। बड़े पूंजीपति जब बैंकों से बड़े–बड़े उधार लेते हैं और उन्हें नहीं चुकाते हैं तो उनके लिये अक्सर बड़ी उदारता के साथ "कर्ज़माफ़ी" की जाती है या कर्ज़ चुकाने की शर्तें और आसान कर दी जाती हैं। परन्तु जब स्वरोज़गार वाले उत्पादक अपने कर्ज़े नहीं चुका सकते हैं तो उनकी संपत्तियों को हड़प लिया जाता है। साल दर साल, इन मध्यवर्ती तबकों के बहुत से लोग अपनी छोटी–मोटी संपत्ति को खो बैठते हैं और मज़दूर वर्ग की श्रेणियों में जुड़ जाते हैं। उनमें कुछेक गिने–चुने ही अमीर बन पाते हैं, पर ज्यादा समय के लिए नहीं। उनमें से बहुत थोड़े ही पूंजीपति वर्ग में पहुंच पाते हैं।

बहुत से गरीब किसान परिवार अपनी छोटी–छोटी भूमि की जोतों पर टिके हुए हैं परन्तु इससे उनका गुजारा

पूरा नहीं होता है और वे अधिक से अधिक हद तक, अन्य वेतनभोगी आमदनी के स्रोतों पर निर्भर होते जा रहे हैं। वे अर्ध–श्रमजीवी हैं, जो केवल अपनी श्रमशक्ति बेचकर जीने वालों की कतारों में शामिल होने ही वाले हैं। श्रमजीवी, किसान और अर्ध–श्रमजीवी हर इलाके में व पूरे देश में आबादी का अधिकतम हिस्सा हैं।

बीते कई सालों से, परिचालित भूमि के पट्टों की संख्या बढ़ती जा रही है और उनका औसतन क्षेत्रफल घटता जा रहा है। सरकारी कृषि जनगणना के अनुसार, 2010–11 में 13.8 करोड़ परिचालित भूमि के पट्टे थे। उनमें से दो–तिहाई का क्षेत्रफल एक हेक्टेयर से कम था, जबकि 85 प्रतिशत दो हेक्टेयर (या 5 एकड़) से कम थे। दूसरी ओर, सबसे बड़े 5 प्रतिशत भूमि के पट्टों का क्षेत्रफल खेती की गयी पूरी भूमि का 32 प्रतिशत था[44]। 10–25 एकड़ भूमि पर काम करने वाले किसानों समेत, अधिकतम किसान बुरी तरह कर्ज़ में फंसे हुए हैं, क्योंकि वे अधिक से अधिक हद तक विश्व बाज़ार में कीमतों के उतार–चढ़ाव के शिकार बन रहे हैं।

इज़ारेदार पूंजीपतियों की अगुवाई में बड़े पूंजीपति उसी राज्य और राज्य सत्ता के उसी दमनकारी तंत्र के ज़रिये शासन करते हैं जिन्हें उन्होंने बर्तानवी उपनिवेशवादियों से विरासत में पाया है। बर्तानवी उपनिवेशवादी राज्य ने इस उपमहाद्व ीप के सभी लोगों की भूमि व श्रम के अधिक से अधिक शोषण और लूट को आसान बनाया। वर्तमान हिन्दोस्तानी राज्य उसी शोषण के राज की निरंतरता तथा और कुशल

रूप है। फर्क बस इतना है कि आज हिन्दोस्तानी इज़ारेदार पूंजीवादी घराने, बर्तानवी साम्राज्यवादियों की जगह पर, उसका संचालन कर रहे हैं। यह राज्य ऐसे मूल कानून पर आधारित है, जो पूंजीवादी शोषण, साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी शैली की लूट, राष्ट्रीय दमन और साम्प्रदायिक, जातिवादी और लिंग पर आधारित भेदभाव की निरंतरता को वैधता देता है।

1950 के संविधान का अधिकांश भाग 1935 में बर्तानवी संसद द्वारा पास किये गए भारत सरकार अधिनियम की प्रतिलिपि है। संविधान में लिखा है कि "हम, हिन्दोस्तान के लोगों ने खुद को यह संविधान दिया है", परन्तु वास्तव में यह संविधान संसद में राष्ट्रपति के हाथों में संप्रभुता सौंपता है, और राष्ट्रपति मंत्रीमंडल के प्रस्तावों से सहमति जताने को बाध्य है। लोकसभा में जिस पार्टी के सदस्यों की संख्या सबसे ज्यादा है, वह ही मंत्रीमंडल को गठित करती है। इस प्रकार से, सामंती–सरमायदारी ब्रिटेन की हालतों में, एक खास प्रकार का सरमायदारी लोकतंत्र उभर कर आया, जिसे अपनाकर हिन्दोस्तान की धरती पर थोप दिया गया। बर्तानवी उपनिवेशवादी सरमायदारों ने जिस सेना, अफ़सरशाही और न्यायपालिका, तथा उनके साथ–साथ, न्याय संहिता और "कानून का शासन" स्थापित किया था, उन सभी को बरकरार रखा गया है।

जब से उपनिवेशवादी शासन खत्म हुआ, तब से हिन्दोस्तानी इज़ारेदार पूंजीवादी घरानों ने विरासत में प्राप्त इस राज्य का इस्तेमाल करके, अपनी राजनीतिक प्रधानता को मजबूत

किया है। इस राज्य का इस्तेमाल करके उन्होंने खूब धन संचय किया है। हिन्दोस्तानी संघ के अंदर सभी इलाकों में तथा अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में उन्होंने अपने वर्चस्व का विस्तार किया है। यह प्रक्रिया अलग–अलग पड़ावों से गुजरती रही है परन्तु हर पड़ाव पर, केन्द्रीय राज्य ने इज़ारेदार पूंजीवादी घरानों के हित में ही हस्तक्षेप किया है।

"समाजवादी नमूने के समाज" का निर्माण करने के नाम पर, नेहरू और उनके बाद आये कांग्रेसी नेताओं की अगुवाई में कांग्रेस पार्टी की सरकारों ने इज़ारेदार घरानों की योजना को लागू किया, जिसे "टाटा–बिरला योजना" के नाम से जाना जाता है। इस योजना के तहत, ज़रूरी वस्तुओं का आयात करने के बजाय, देश में एक विविधतापूर्ण उद्योग का निर्माण किया गया। विदेशी पूंजीवादी स्पर्धा को बाहर रखने या कम करने के लिये ऊंचे कस्टम शुल्क लगाये गये और भारी उद्योग व ढांचागत क्षेत्रों में सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा अधिक से अधिक पूंजी निवेश किया गया। निजी इज़ारेदार कंपनियों को कोयला, बिजली और अन्य लागतों की सस्ती व पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए कई राजकीय उद्यम स्थापित किये गए। इस पूंजीनिवेश के लिये अप्रत्यक्ष करों, मुद्रास्फीति व विदेशी सहायता से प्राप्त धन को लगाया गया।

परन्तु औद्योगिक सामग्रियों के लिए घरेलू बाज़ार पर्याप्त नहीं था, और यह पूंजीवादी संचय की इस प्रक्रिया के रास्ते में एक रुकावट बन गई। 60 के दशक में केंद्रीय राज्य ने हरित क्रांति शुरू की, जिसकी वजह से कुछ चुनिन्दा

इलाकों में पूंजीवादी कृषि का संवर्धन हुआ तथा नए–नए इलाकों में व्यापार के लिए की जा रही खेती का विस्तार हुआ। इससे इज़ारेदार पूंजीवादी घरानों के लिए, घरेलू बाज़ार का विस्तार हुआ। राष्ट्रीयकृत बैंकों की ग्रामीण बैंक शाखाओं के विस्तार से ग्रामीण आबादी की बचत के धन को संकेंद्रित किया गया और उसे औद्योगिक घरानों की वित्त पूंजी में बदल दिया गया।

ग्रामीण इलाकों में पूंजीवादी विस्तार से प्रांतीय सरमायदारी हितों का उगम हुआ जो बाज़ार और सार्वजनिक संसाधनों का और अधिक हिस्सा हथियाना चाहते थे। एक तरफ केन्द्रीय नियंत्रण से दूरी चाहने वाली इन ताक़तों, और दूसरी तरफ केन्द्रीय नेतृत्व को मजबूत करने के इज़ारेदार पूंजीवादी घरानों के प्रयासों, इन दोनों के बीच तनाव की वजह से, राजनीतिक अस्थायीपन का एक दौर चला। हिन्दोस्तान पर दोनों महाशक्तियों की स्पर्धा की वजह से, हिन्दोस्तानी सरमायदारों के आपसी अंतर्विरोध और तीखे हो गए।

बर्तानवी–अमरीकी साम्राज्यवादी सोवियत संघ के खिलाफ़ स्पर्धा करते हुए, और हिन्दोस्तानी शासक वर्ग की महत्वाकांक्षाओं को नियंत्रित करने के लिए, पाकिस्तान को अपना सैनिक अड्डा बनाने की नीति अपना रहे थे। उन हालातों में, हिन्दोस्तानी राज्य की अगुवाई करने वाले बड़े सरमायदारों ने दक्षिण एशिया में खुद को सबसे प्रभावशाली ताक़त बतौर स्थापित करने की अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए, सोवियत संघ के साथ सैनिक रणनैतिक गठबंधन बनाने का रास्ता अपनाया। 1971 में भारत–सोवियत

दोस्ती और सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किया गया। उसी समय हिन्दोस्तानी राज्य पूर्वी पाकिस्तान की राजनीतिक ताक़तों को पाकिस्तान से अलग होने का खुलेआम प्रोत्साहन दे रहा था। इसके कुछ ही समय बाद, हिन्दोस्तान और पाकिस्तान के बीच खुलेआम युद्ध हुआ, पाकिस्तान को दो टुकड़ों में बाँट दिया गया और नए राज्य, बांग्लादेश, की स्थापना हुयी। दक्षिण एशिया में बर्तानवी–अमरीकी साम्राज्यवादियों का प्रभाव कुछ समय के लिए कमजोर हो गया। तब बर्तानवी–अमरीकी साम्राज्यवादियों ने इंदिरा गांधी की कांग्रेस पार्टी को सत्ता से हटाने और हिन्दोस्तान पर सोवियत प्रभाव को कमजोर करने के लिए, तरह–तरह की सरमायदारी विपक्ष की पार्टियों को "जनवाद परस्त" और "भ्रष्टाचार विरोधी" आंदोलन चलाने में सक्रिय समर्थन दिया।

भारतीय रेल में सबसे बड़ी हड़ताल 1974 में हुयी। मज़दूर वर्ग और किसानों के बढ़ते संघर्षों और सरमायदारों के आपसी अंतर्विरोधों की वजह से, 1975 में तीक्ष्ण राजनीतिक संकट की स्थिति पैदा हुयी। सबसे प्रभावशाली इज़ारेदार पूंजीपतियों ने राष्ट्रीय आपातकाल के ज़रिये अपनी हुक्मशाही थोप दी। उन्होंने अपना कब्ज़ा जमा लिया और पूरे विपक्ष पर बेरहमी से हमला किया। सभी हड़तालों को गैर–कानूनी घोषित कर दिया गया। अखबारों पर कठोर सेंसरशिप लगा दी गयी ताकि सरकार के विरोध में कोई विचार प्रकाशित न किया जा सके। विपक्ष की पार्टियों के कई नेताओं को जेलों में ठूंस दिया गया।

आपातकालीन शासन लगभग 21 महीनों तक जारी रहा, और उसने हिन्दोस्तानी गणराज्य के "लोकतान्त्रिक" मुखौटे के पीछे, उसकी असली फासीवादी सूरत को स्पष्ट कर दिया। उसने यह स्पष्ट कर दिया कि प्रधानमंत्री की अगुवाई में मंत्रीमंडल के हाथों में राजनीतिक सत्ता किस हद तक संकेंद्रित है। उसने दिखा दिया कि संविधान ने मंत्रिमंडल को राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर, लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमले करने का पूरा अधिकार दे रखा है।

संविधान के पूर्वकथन का आपातकाल के दौरान दो बार संशोधन किया गया और "लोकतांत्रिक गणराज्य" बतौर वर्तमान राज्य के वर्णन में दो नए झूठ जोड़े गए। उसे एक "समाजवादी" और "धर्मनिरपेक्ष" गणराज्य घोषित किया गया।

1970 के दशक का अंत सत्ताधारी पूंजीपति वर्ग के लिए काफी अस्थायीपन का दौर था। उस समय मजदूरों, किसानों और दबी–कुचली राष्ट्रीयताओं के लोगों के संघर्ष तेज़ी से बढ़ रहे थे। पंजाब के लोग अपने राष्ट्रीय अधिकारों की मांग कर रहे थे। वे नदियों के जल तथा केन्द्रीय वित्तीय संसाधनों में से अपना हिस्सा मांग रहे थे। इज़ारेदार पूंजीपतियों ने "स्थायीपन" बहाल करने के नाम से, 1980 में कांग्रेस पार्टी को वापस लाकर सत्ता पर बिठाया। अपनी हुक्मशाही को मजबूत करने के लिए उन्होंने "सिख आतंकवाद" का हव्वा खड़ा कर दिया, ताकि राजकीय आतंकवाद फैलाना और पूरे राजनीतिक माहौल में साम्प्रदायिकता घोल देना जायज़ ठहराया जा सके।

राज्य द्वारा आयोजित सांप्रदायिक हिंसा समेत, राजकीय आतंकवाद का इस्तेमाल करके, इज़ारेदार पूंजीपति अपने शासन में स्थायीपन लाने में कामयाब हुए। वे जन आंदोलनों को बांटने और गुमराह करने तथा संपत्तिवान वर्गों के बीच आपसी मतभेद रखने वाले गुटों को कुचलने में कामयाब हुए। जून 1984 में सेना को सिखों के पवित्रतम तीर्थ स्थल, स्वर्ण मंदिर पर हमला करने का आदेश दिया गया। लोगों को बताया गया कि "आतंकवादियों को बाहर निकालने" के लिए ऐसा किया जा रहा है, परन्तु उसका असली मकसद था सिख धर्म के लोगों को अपमानित करना, पंजाब के लोगों की एकता को तोड़ना और पंजाब व देश के अनेक अन्य भागों में आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों के लिए चल रहे संघर्षों को अपराधी ठहराना। उसका मकसद था राज्य द्वारा अपने ही नागरिकों पर व्यापक और क्रूर बलप्रयोग के पक्ष में जनमत पैदा करना।

1980 के दशक में ही अमरीका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन और बर्तानवी प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर ने "मुक्त बाज़ार (फ्री मार्केट) के सुधारों" का झंडा फहराया था। सोवियत संघ में गोर्बाचोव ने अपने पेरेस्त्रोइका के कार्यक्रम को शुरू किया और उस देश में समाजवाद के सभी अवशेषों के अंतिम विनाश का रास्ता खोल दिया। विश्व बैंक की अगुवाई में, वित्त पूंजी के अंतर्राष्ट्रीय संस्थान हिन्दोस्तान पर दबाव डालने लगे कि घरेलू बाज़ार को विदेशी पूंजी के लिए खोल दिया जाए और विदेशी पूंजी के प्रवेश की रुकावटों को घटा दिया जाए। उस दबाव की प्रतिक्रिया बतौर, हमारे शासक वर्ग ने 1980 के दशक के दौरान, आयात शुल्कों को घटाया

और क्रमशः रुपये का अवमूल्यन किया। इज़ारेदार पूंजीवादी घरानों ने घरेलू बाज़ार से हटकर, विदेशी बाज़ारों पर ध्यान देना शुरू किया और देश के अन्दर व बाहर, विदेशी पूंजीपतियों के साथ स्पर्धा करने की तैयारी करने लगे।

1991 से हिन्दोस्तानी शासक वर्ग ने समाजवादी नमूने के समाज का निर्माण करने का दिखावा करना भी छोड़ दिया। उसने उदारीकरण और निजीकरण के ज़रिये भूमंडलीकरण का नुस्खा अपनाना शुरू किया। अपने निजी साम्राज्यों को बनाने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र का इस्तेमाल करके, इज़ारेदार घराने अब इनमें से कुछ उत्पादक सार्वजनिक संसाधनों को हड़प लेना चाहते थे, ताकि अपने निजी साम्राज्यों का और अधिक विस्तार कर सकें। विदेशी स्पर्धा को सीमित करके अपने औद्योगिक आधार को बनाकर, वे अब विश्व स्तर पर स्पर्धा करने के लिए उन रुकावटों को हटाना चाहते थे। इससे यह स्पष्ट हुआ कि हमारे देश में पूंजीवादी विकास ऐसे पड़ाव पर पहुंच चुका है कि हिन्दोस्तानी इज़ारेदार पूंजीवादी घराने बड़े हमलावर तरीके से दुनिया में अपने पैर पसारने को तैयार हैं। उसके बाद की गतिविधियों से इस बात की पुष्टि हुयी। 2006 और 2010 के बीच, हिन्दोस्तानी पूंजीपतियों ने 75 अरब डॉलर से अधिक पूंजी निवेश करके, विदेशों में 754 कंपनियों पर नियंत्रण हासिल किया है[45], जो कंपनियां मुख्यतः कच्चे माल के स्रोतों को हथियाने व विकसित करने के काम में लगी हैं।

हिन्दोस्तान के इज़ारेदार घराने देश में निवेश की गयी विदेशी पूंजी को एक ऐसा कारक मानते हैं, जिसके सहारे

वे अपने संवर्धन व वैश्विक विस्तार को और तेज़ी से बढ़ा सकते हैं। विदेशी पूंजीपतियों के साथ संयुक्त कारोबारों और मुख्य क्षेत्रों में सहकार्य के ज़रिये उन्होंने हमारी भूमि और श्रम के शोषण और लूट को बहुत विस्तृत और तेज़ कर दिया है। वे हिन्दोस्तानी सरकार से मांग कर रहे हैं कि देश में विदेशी पूंजी के प्रवेश के लिये रुकावटों को और कम किया जाये; और वे विदेशी सरकारों से मांग कर रहे हैं कि उनके देशों में हिन्दोस्तानी पूंजी के प्रवेश के लिये रुकावटों को और कम किया जाये।

घरेलू बाज़ार को सुरक्षित रखने और आयात व प्रत्यक्ष विदेशी पूंजी निवेश को सीमित रखने के पूर्व पड़ाव से हिन्दोस्तानी इज़ारेदार पूंजीपतियों के वैश्विक प्रसारवादी अग्रसर और विदेशी पूंजी के लिए सभी द्वारों को खोल देने के वर्तमान पड़ाव तक परिवर्तन शांतिपूर्ण तरीके से नहीं हुआ। इस परिवर्तन को लाने के लिये, लोगों का ध्यान भटकाने, लोगों को बांटने और उनके संघर्षों को खून में बहाने के बड़े पैशाचिक और भयानक तरीकों का इस्तेमाल किया गया। राज्य द्वारा आयोजित सांप्रदायिक हिंसा, गुप्त रूप से आतंकवादी हरकतों को प्रश्रय देना, व्यक्तिगत आतंकवाद से लड़ने के नाम पर राजकीय आतंकवाद फैलाना – इज़ारेदार पूंजीपतियों की हुक्मशाही को थोपने के लिए इन सभी तौर–तरीकों का इस्तेमाल किया गया।

नवम्बर 1984 का सांप्रदायिक जनसंहार, 1992–93 में बाबरी मस्जिद का विध्वंस और उससे जुड़ी हुयी सांप्रदायिक हिंसा तथा 2002 में गुजरात का जनसंहार, ये इस दौरान राज्य द्व

ारा अपने ही नागरिकों के खिलाफ़ किये गए अपराधों में से तीन सबसे पैशाचिक अपराध थे। भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के बेहद अलोकप्रिय कार्यक्रम को लागू करने के लिए दसों–हजारों लोगों की जानें कुर्बान की गयीं।

1990–2007 के दौरान, हिन्दोस्तानी पूंजीवाद में जो संवर्धन की गति देखी गयी, वह न सिर्फ किसी भी भूतपूर्व अवधि से अधिक थी बल्कि वैश्विक औसतन संवर्धन की गति से भी बहुत अधिक थी, और सिर्फ चीन से ही पीछे थी। इसकी प्रेरक शक्ति थी निर्यात बाज़ार के लिये सेवाओं में बहुत तेज़ गति से वृद्धि; घरेलू बाज़ार के लिये उससे कम गति के साथ उद्योग व सेवाओं की वृद्धि; साथ ही कृषि में धीमी गति से वृद्धि, स्थगन और जारी संकट।

जबकि 'सेवाओं' में स्वास्थ्य व शिक्षा समेत बहुत सारे क्षेत्र शामिल हैं, इस हाल की अवधि में जो क्षेत्र सबसे तेज़ी से बढ़े हैं, वे हैं निर्यात–उन्मुख आई.टी. और आई.टी. समर्थित सेवाएं, बी.पी.ओ. सेवाएं, इत्यादि। हिन्दोस्तान दुनियाभर की पूंजीवादी कंपनियों को इलेक्ट्रॉनिक अप्रत्यक्ष ऑफिस सेवाएं प्रदान करने का एक मुख्य केन्द्र बन गया है। आई.टी. क्षेत्र के मज़दूर हिन्दोस्तानी मज़दूर वर्ग के सबसे बड़े और तेज़ी से बढ़ने वाले भाग बन गये हैं। "मेडिकल टूरिज़्म" में भी तेज़ी से वृद्धि हुई है। हिन्दोस्तानी पूंजीपतियों द्वारा संचालित विशिष्ट सेवाओं वाले अस्पताल पूरे देशभर में स्थापित हो रहे हैं जिन्हें विदेशों से आये मरीजों की ज़रूरतों के अनुसार चलाया जाता है, जिसकी वजह से स्वास्थ्य सेवा की कीमतें

तेज़ी से बढ़ रही हैं और हमारे अपने लोगों की पहुंच से बाहर जा रही हैं।

हाल के दशकों में जिन औद्योगिक क्षेत्रों में तेज़ी से वृद्धि हुई है, उनमें ऑटोमोबिल और ऑटो पुर्जे, पेट्रोलियम परिशोधन और रसायन के क्षेत्र शामिल हैं। हिन्दोस्तान के ऑटो उद्योग को अब दुनिया के सबसे बड़े ऑटो उद्योगों में एक गिना जाता है, जिसमें प्रतिवर्ष कार और दुपहिया समेत 2.4 करोड़ गाड़ियां बनाई जाती हैं[46]। हिन्दोस्तान में, गुजरात के जामनगर में दुनिया का सबसे बड़ा पेट्रोलियम परिशोधन कारखाना है, जिसमें प्रतिदिन 12.4 लाख बैरल कच्चे तेल का परिशोधन होता है[47]। हिन्दोस्तान के रसायन उद्योग का उत्पादन एशिया में तीसरे स्थान पर है। 2015 में हिन्दोस्तान इस्पात के उत्पादन में, चीन और जापान के बाद, तीसरे स्थान पर था और सीमेंट के उत्पादन में, चीन के बाद, दूसरे स्थान पर था। कृषि रसायनों, पॉलीमर, प्लास्टिक, रंगने वाले पदार्थों और विभिन्न जैविक व अजैविक रसायनों के उत्पादन में दुनिया के सबसे बड़े पांच उत्पादकों में हिन्दोस्तान एक है। दुनिया के बाज़ार में सामान्य (जेनरिक) दवाइयों के सबसे बड़े उत्पादकों और सप्लायरों में हिन्दोस्तान एक है।

सामाजिक उत्पाद (सकल घरेलू उत्पाद) में सेवाओं का हिस्सा बढ़कर (2013–14 तक) 57 प्रतिशत हो गया था, जिसमें उद्योग का हिस्सा 26 प्रतिशत था और कृषि व उससे जुड़ी हुई सेवाओं का हिस्सा मात्र 17 प्रतिशत था (जबकि अधिकतम आबादी अभी भी अपनी रोज़ी–रोटी के लिये कृषि पर निर्भर है)[48]। पूंजीवादी संवर्धन का यह नमूना असंतुलित

है क्योंकि इसमें सेवा क्षेत्र प्रधान है। हालांकि इस नमूने से बहुत मुनाफ़ा मिला है, परन्तु हिन्दोस्तानी इज़ारेदार पूंजीपति इस नमूने की सीमाओं को समझते हैं। वे *"मेक इन इंडिया"* के झंडे तले, वैश्विक इज़ारेदार कंपनियों की मदद और सहकार्य के साथ, इसमें उद्योग और कृषि का हिस्सा बढ़ाना चाहते हैं। वे चीन के निर्यात–प्रेरित नमूने का अनुकरण करके मौजूदे विनिर्माण केन्द्रों का अधिक से अधिक विस्तार करना चाहते हैं तथा बहुत से नये केन्द्र खोलना चाहते हैं।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद जापान सबसे पहली ऐसी अर्थव्यवस्था बनी, जो बड़े पैमाने पर विनिर्मित वस्तुओं के निर्यात से प्रेरित थी। उसके बाद चीन में भी वैसी ही अर्थव्यवस्था बनी। आज वे दोनों अर्थव्यवस्थाएं वैश्विक साम्राज्यवादी व्यवस्था के साथ नजदीकी से जुड़ी हुई हैं। आज वे दोनों वैश्विक आर्थिक संकट की चपेट में हैं। उन दोनों देशों के मज़दूर वर्ग और मेहनतकश उनके सरमायदारों द्वारा अपनाये गये निर्यात प्रेरित आर्थिक संवर्धन के नमूने की भारी कीमत चुका रहे हैं। हिन्दोस्तानी शासक वर्ग हमारे देश को उसी तबाहकारी रास्ते पर खींच रहा है। वह दुनियाभर के पूंजीपतियों को हिन्दोस्तान में पूंजी निवेश करने तथा विश्व बाज़ार के लिये *"मेक इन इंडिया"* करने का न्यौता दे रहा है। हिन्दोस्तान की सबसे कीमती संपत्ति, हमारी जवान श्रमशक्ति और अनमोल प्राकृतिक संसाधनों को दुनिया के सबसे ज्यादा लालची इज़ारेदार पूंजीपतियों को सौंपा जा रहा है, ताकि उनका अधिक से अधिक शोषण और लूट की जा सके। हमारे देश में सामाजिक उत्पादन की व्यवस्था को संकटग्रस्त साम्राज्यवादी व्यवस्था के साथ और ज्यादा

नजदीकी से जोड़ा जा रहा है। दूसरे क्षेत्रों में उत्पादन की तुलना में, हथियारों का उत्पादन ज्यादा तेज़ गति से बढ़ रहा है, जिसकी वजह से आर्थिक व्यवस्था की परजीविता बढ़ती जा रही है।

इज़ारेदार पूंजीपतियों के हमले का व्यापक तौर पर विरोध किया जा रहा है और यह विरोध बढ़ता जा रहा है। मज़दूरों के अधिकारों, यूनियन बनाने के अधिकार, किसानों के अधिकार, पक्के रोज़गार दिलाने के राज्य के फ़र्ज, भूमि और अन्य प्राकृतिक संसाधनों की मालिकी और इस्तेमाल के अधिकार, विदेशी पूंजी के लिये सभी द्वार खोलने के ख़तरे, हिन्दोस्तान में राष्ट्रों और राष्ट्रीयताओं के अधिकार, इत्यादि जैसे प्रमुख सवालों पर संघर्ष चल रहे हैं।

शासक वर्ग को भूमि अधिग्रहण पर एक आधुनिक कानून बनाने के मुद्दे को हल करने में मुश्किल हो रही है। हमारे देश के लोग यह मानने को तैयार नहीं हैं कि राज्य किसी भी व्यक्ति की मंजूरी के खिलाफ़, सार्वजनिक हित के नाम पर, उसकी ज़मीन का बलपूर्वक अधिग्रहण कर सकता है और उसे पूंजीवादी मुनाफ़ाखोरों के हाथों में सौंप सकता है। इज़ारेदार पूंजीपतियों को यह मंजूर नहीं हैं कि सफलतापूर्वक भूमि अधिग्रहण करने के लिये उन्हें अधिकतम प्रभावित लोगों की सहमति की शर्त माननी पड़ेगी। इस टक्कर के चलते, इज़ारेदार कंपनियों के अधिकतम मुनाफ़ा कमाने के "अधिकार" और भूमि पर खेती या अन्य उत्पादक काम करने वालों के अधिकार के बीच स्पष्ट विभाजन रेखा बन गयी है।

साथियों,

हिन्दोस्तान के इज़ारेदार पूंजीवादी घराने और सभी विदेशी निवेशक प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की तब तक खूब तारीफ करते रहे जब तक, 2004–08 की वृद्धि की अवधि में, हिन्दोस्तान में उनके मुनाफ़े बड़ी तेज़ गति से बढ़ रहे थे। परन्तु 2008–09 के वैश्विक संकट के बाद परिस्थिति में काफी बदलाव आया। पूंजीवादी मुनाफ़ा दर गिर गई और सरमायदारों के आपस बीच बहुत से अंतर्विरोध व भ्रष्टाचार के कांड सामने आये, जिनमें प्रतिस्पर्धी इज़ारेदार कंपनियां एक दूसरे का पर्दाफाश करने लगीं।

भ्रष्टाचार के कांडों की वजह से सरकारी प्रशासन पंगू हो गया क्योंकि अफ़सर लोग जांच के डर से, कोई फैसले लेने को तैयार नहीं थे। बहुत सारी विशाल पूंजी निवेश वाली परियोजनाएं रुक गयीं क्योंकि प्रभावित लोग प्रस्तावित भूमि अधिग्रहण का विरोध कर रहे थे। खुदरा व्यापार को वॉलमार्ट व अन्य विशाल वैश्विक कंपनियों के लिये खोल देने की योजना रुकी हुई थी क्योंकि अलग–अलग इलाकों में थोक और खुदरा व्यापारी इसका विरोध कर रहे थे और इसलिए इस मुद्दे पर संसद में भी बहुत मतभेद था। वस्तु और सेवा कर (जी.एस.टी.) भी रुका हुआ था क्योंकि संसद में कांग्रेस पार्टी के सदस्यों की संख्या पर्याप्त नहीं थी। 2जी घोटाले की वजह से अगुवा टेलीकॉम इज़ारेदार कंपनियां हमारे देश में पूंजी निवेश करने में झिझक रही थीं।

इज़ारेदार घरानों के एक प्रभावशाली भाग ने, विदेशी पूंजीवादी हितों के साथ मिलकर, मीडिया का इस्तेमाल करके कांग्रेस नीत गठबंधन सरकार को सुनियोजित तरीके से बदनाम करना शुरू किया और एक ज्यादा स्थायी और सक्रिय विकल्प के पक्ष में जनमत पैदा करना शुरू किया। अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री जिन्हें आर्थिक सुधारों के वैश्विक प्रवर्तक बतौर खूब बढ़ावा दिया गया था, उन्हें अब गैर–क्रियाशील बताया जाने लगा।

भ्रष्टाचार के कांडों का पर्दाफाश करने के साथ–साथ, बड़ी पूंजीवादी कंपनियों द्वारा नियंत्रित मीडिया ने तरह–तरह के "भ्रष्टाचार–विरोधी" आंदोलनों को बढ़ावा देना शुरू किया। कार्पोरेट मीडिया यह संदेश देने लगी कि मनमोहन सिंह की अगुवाई में सरकार की मुख्य समस्या यह थी कि उसका नेतृत्व कमजोर था और वह गठबंधन के दबावों का शिकार थी। नरेन्द्र मोदी को एक "शक्तिशाली नेता" और "क्रियाशील पुरुष", जो व्यवस्था को साफ करने और हिन्दोस्तान की खोई हुई अस्मिता वापस लाने को वचनबद्ध है, ऐसा बताकर, खूब बढ़ावा दिया जाने लगा।

मोदी की अगुवाई में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने 2014 में लोक सभा में अधिकतम सीटें जीतीं। भाजपा ने अकेले ही 50 प्रतिशत से ज्यादा सीटों पर कब्ज़ा किया और इसलिये उसकी सरकार का बने रहना गठबंधन के अन्य घटकों पर निर्भर नहीं था। बड़े इज़ारेदार घरानों और विदेशी साम्राज्यवादी हितों के लिये यही पसंदीदा नतीजा था, जिसके लिये वे बहुत कोशिश कर रहे

थे। अगुवा पार्टी को अगर स्थायी बहुमत प्राप्त है तो इसका यह मतलब है कि उस पर प्रांतीय सरमायदारों के हितों और मांगों को पूरा करने का कम दबाव होता है। धनबल के अत्यधिक प्रयोग, अंतर्राष्ट्रीय मीडिया की ताक़त, साम्प्रदायिक चुनाव कार्यनीति – इन सबकी सहायता से बड़े सरमायदार अपना पसंदीदा राजनीतिक प्रबंध स्थापित करने में सफल हुए। उनकी सफलता का एक और कारण यह था कि राजग के अभियान का प्रभावशाली तरीके से मुकाबला करने वाला कोई वैकल्पिक चुनावी गठबंधन नहीं था।

इन सभी गतिविधियों से यह स्पष्ट होता है कि समय–समय पर लोकसभा के चुनावों की प्रक्रिया हमारे देश के सबसे शक्तिशाली इज़ारेदार पूंजीपतियों के हाथों में एक साधन है जिसके ज़रिये वे अपने हितों को और बेहतर तरीके से बढ़ावा देने के लिये, जब–जब ज़रूरत हो, तब–तब केन्द्रीय कार्यकारिणी के प्रबंधक दल में परिवर्तन ला सकते हैं। विदेशी साम्राज्यवादी भी अलग–अलग समय पर अपनी पसंद की पार्टी और नेता को समर्थन देकर अपना प्रभाव डालते हैं। कार्पोरेट मीडिया के ज़रिये अलग–अलग व्यक्तियों को कभी तो हीरो बनाया जाता है, फिर बाद में उसी मीडिया द्वारा उसे बदनाम भी किया जाता है। यह सब बड़े सरमायदारों के हितों के अनुसार किया जाता है।

लोकसभा में संपूर्ण बहुमत पाकर, मोदी की अगुवाई में भाजपा लोगों को उसी पुराने "नीचे टपकने" के सिद्धांत पर भरोसा दिलाने का प्रयास कर रही है, जिसे मनमोहन सिंह ने बढ़ावा दिया था। आज भी वैश्वीकरण, उदारीकरण व

निजीकरण को सभी आर्थिक समस्याओं को हल करने की रामबाण दवा बताया जा रहा है। भाजपा का कहना है कि खुशहाली इसलिये नीचे नहीं टपकी है क्योंकि कांग्रेस पार्टी का शासन बहुत भ्रष्ट था। भाजपा इस हक़ीक़त को छिपा रही है कि समस्या आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में है, समस्या उदारीकरण और निजीकरण के कार्यक्रम में है। इस तरह भाजपा उसी कार्यक्रम को उन्हीं वर्ग हितों की सेवा में, कांग्रेस पार्टी से ज्यादा हमलावर तरीके से बढ़ावा दे रही है परन्तु कांग्रेस पार्टी पर सारा दोष डाल रही है। *"मेक इन इंडिया"* के झंडे तले विदेशी इज़ारेदार पूंजीपतियों द्व ारा अपनी पसंद के किसी भी क्षेत्र में निवेश करने के लिये दरवाज़े खोल देने की नीति को बड़ी चतुराई से, सभी को नौकरी दिलाने और "सबका साथ सबका विकास" हासिल करने तथा "अच्छे दिन" लाने के तरीके के रूप में पेश किया जा रहा है।

अपने शासनकाल के प्रथम 30 महीनों में भाजपा नीत राजग सरकार ने इज़ारेदार पूंजीपतियों के कार्यक्रम में अधि ाक प्राथमिकता रखने वाले कई विषयों पर कदम उठाये हैं। उसने मज़दूरों के अधिकारों पर बहु–तरफा हमला शुरू किया है। भाजपा सरकार ने रणनैतिक बिक्री, आंशिक विनिवेश और तथाकथित सार्वजनिक–निजी सांझेदारी (पी. पी.पी.) समेत निजीकरण कार्यक्रम को और तेज़ी से लागू करने के कदम उठाये हैं। निजीकरण के इन सभी तरीकों का उद्देश्य है उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई.सी.) समेत सभी क्षेत्रों में निजी मुनाफ़ाखोरी की गुंजाइश बढ़ाना। भाजपा सरकार जी.एस.

टी. लागू करने के लिये संसद की सहमति प्राप्त करने में सफल हो गयी है। उसने खाद्य पदार्थों में बहु–ब्रांड खुदरा व्यापार को वैश्विक बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिये खोल दिया है। उसने बीमा और रक्षा उत्पादन समेत बहुत सारे नये क्षेत्रों में 50 प्रतिशत से अधिक विदेशी मालिकी की इजाजत दे दी है। वह परमाणु दायित्व समझौते पर हस्ताक्षर प्राप्त करने में सफल रही है, जिसकी वजह से हिन्दोस्तान के परमाणु ऊर्जा उद्योग में दुनियाभर के पूंजीपतियों के निवेश करने के लिये द्वार खुल गये हैं। सार्वजनिक बैंकों से लिये गये कर्ज़े न चुकाने वाले बड़े पूंजीपतियों के बेशुमार कर्ज़ों को माफ करने के लिये उसने जनता के धन का इस्तेमाल किया है।

प्रधानमंत्री मोदी "श्रमेव जयते" का मंत्र जपते हैं परन्तु मज़दूरों के काम के बोझ को बढ़ाकर तथा उनका अति शोषण करके, ठीक वही कर रहे हैं जो पूंजीपति चाहते हैं। बेरोजगार नौजवानों की बढ़ती सेना को, अधिक से अधिक नौकरी पैदा करने का झांसा देकर, यह कहा जा रहा है कि उन्हें अतिशोषण की बुरी से बुरी हालतों को स्वीकार कर लेना चाहिये क्योंकि इससे अधिक से अधिक नौकरियां बनेंगी और सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होगी।

"कारोबार चलाना सुगम बनाना" (ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस) और "इंस्पेक्टर राज" खत्म करने के नाम से इस सरकार ने श्रम विभाग के अफसरों द्वारा फैक्टरियों में श्रम कानूनों, न्यूनतम सुरक्षा व स्वास्थ्य मानदंडों के

पालन को सुनिश्चित करने के लिये बाध्यकारी निरीक्षण की ज़रूरत को हटा दिया है। फैक्ट्रीज एक्ट में संशोधन लाने वाला एक बिल संसद में पेंडिंग है। उसके पास हो जाने पर, 40 से कम मजदूरों वाली फैक्ट्रियों को फैक्ट्रीज एक्ट के दायरे से बाहर निकाल दिया जाएगा। ठेका मजदूरी (विनियमन और उन्मूलन) अधिनियम में संशोधन लाने के लिए एक और बिल संसद की अनुमति की प्रतीक्षा कर रहा है। संशोधित अधिनियम के पास होने पर, 50 से कम मजदूरों वाले ठेकेदारों को उसके दायरे से बाहर निकाल दिया जायेगा। कोई भी कंपनी अलग–अलग ठेकेदारों का इस्तेमाल करके, सैकड़ों मजदूरों से ठेके पर काम करवा सकता है और उन मजदूरों को उनके अधिकारों से वंचित कर सकता है। ये बिल अब तक केन्द्रीय कानून नहीं बन पाए हैं, क्योंकि सभी ट्रेड यूनियनों (जिनमें सत्तारूढ़ पार्टी से जुड़ा ट्रेड यूनियन भी शामिल है) ने जमकर इनका विरोध किया है और राज्य सभा में सरकार का बहुमत नहीं है। इस रुकावट को पार करने के लिए, राज्य सरकारों को इज़ाज़त दी गयी है कि वे अपने–अपने राज्यों में इन कानूनों में ज़रूरी परिवर्तन कर दें। राजस्थान और हरियाणा ने अपने–अपने श्रम कानूनों में परिवर्तन कर डाले हैं, जबकि महाराष्ट्र में यह प्रक्रिया शुरू हुयी है।

एसोसियेटेड चेम्बर ऑफ कामर्स (एसोचेम) द्वारा किये गये एक अध्ययन के अनुसार, जुलाई–सितम्बर 2015 के दौरान, निर्यात–उन्मुख उद्योगों में 70,000 से भी ज्यादा मज़दूरों ने अपनी नौकरियां खोयीं[49]। ऐसे क्षेत्रों में, पूंजीवादी मुनाफ़ों को बरकरार रखने के लिये, उत्पादन की प्रक्रिया के कुछ हिस्सों

को छोटी–छोटी इकाइयों में ठेके पर करवाया जा रहा है और मजदूरों की संख्या को घटाकर उनका और तीव्र शोषण किया जा रहा है।

"स्टार्ट–अप इंडिया" के नाम से नये निजी पूंजी निवेश को प्रोत्साहित करने का कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसके तहत नयी–नयी पूंजीवादी कंपनियों को 5 वर्ष के लिये 9 श्रम कानूनों से पूरी छूट दी जा रही है। इनमें ट्रेड यूनियन एक्ट, कर्मचारी राज्य बीमा (ई.एस.आई.) एक्ट, प्रोविडेंट फंड और पेंशन एक्ट शामिल हैं।

एप्रेंटिस एक्ट में एक संशोधन करके, दोनों निजी और सरकारी कंपनियों में जवान मज़दूरों को प्रशिक्षु बतौर काम पर लगाने और उसके बाद कई वर्षों तक उन्हें पक्की नौकरी न देकर उनका शोषण करते रहने के अभ्यास को कानूनी दर्ज़ा दे दिया गया है। इस संशोधन की वजह से, दसों–हजारों मज़दूरों जिन्हें सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में प्रशिक्षु बतौर रखा गया है, के सामने यह संभावना है कि प्रशिक्षण की अवधि के अंत में उन्हें वे नौकरियां नहीं मिलेंगी, जिनकी उन्हें आशा थी, और उन्हें अपने हाल पर छोड़ दिया जायेगा।

हिन्दोस्तान ने दुनिया की सभी प्रमुख ऑटो कंपनियों को आकर्षित कर रखा है और मोटर गाड़ियों व अन्य मोटर वाहनों के उत्पादन और निर्यात का एक मुख्य केन्द्र बन गया है। सभी बड़ी ऑटो कंपनियां हिन्दोस्तान में कार्यरत हैं। उन्हें इज़ाज़त दी गयी है कि श्रमशक्ति के सिर्फ

एक–तिहाई भाग को ही पक्की नौकरी दी जाये, एक–तिहाई को अस्थायी ठेकों पर रखा जाये और बाकी एक–तिहाई को प्रशिक्षु बतौर रखा जाये। तेज़ी से बढ़ते ऑटो उद्योग में काम करने वाले नौजवान और काफी हद तक शिक्षित मज़दूर अपने अधिकारों के इस हनन को मानने को तैयार नहीं हैं। इसकी वजह से हिन्दोस्तान के ऑटो उद्योग में पूंजी और श्रम के बीच तीखे संघर्ष हो रहे हैं।

पूंजीपतियों ने कपड़ा और वस्त्र उद्योगों में "निर्धारित अवधि" के ठेकों की प्रणाली शुरू की है ताकि उन क्षेत्रों में मजदूरों को पक्की नौकरी न देनी पड़े। इस तरीके से न केवल मज़दूरों को सेवा निवृत्ति भत्ता और दूसरे अधिकारों से वंचित किया जा रहा है, बल्कि उनका शोषण भी खूब बढ़ाया जा रहा है। इस बात का फायदा उठाकर कि निर्धारित अवधि के मज़दूर अपने ठेकों के खत्म किये जाने के डर से, बद से बदतर हालतों को भी स्वीकार कर लेंगे, उनसे ज्यादा घंटों तक काम करवाया जा रहा है ताकि काम के प्रति दिन से और अधिक बेशी मूल्य निचोड़ा जा सके। इस प्रणाली को बाद में कुछ और क्षेत्रों में भी लागू करने की योजना है।

केन्द्र सरकार ने घोषित किया है कि वह ऐसे कदम लेने वाली है जिनकी वजह से मज़दूरों के लिये अपनी पसंद की यूनियन में संगठित होना बहुत कठिन हो जायेगा। एयर इंडिया के विमान चालक जो उस एकमात्र सरकारी विमान सेवा का निजीकरण करने के कदमों का सफलतापूर्वक विरोध करते आये हैं, उन पर सीधा हमला करते हुए

नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने ऐलान किया है कि विमान चालक मज़दूर नहीं हैं। उन्हें यूनियन में संगठित होने और हड़ताल करने या किसी भी प्रकार का सामूहिक विरोध करने से रोका गया है।

आई.टी. क्षेत्र में भारी संख्या में मज़दूर नौकरियों से निकाले जा रहे हैं। इन हालतों में उस क्षेत्र के मज़दूर यूनियन बनाकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की कोशिश कर रहे हैं। आई.टी. कंपनियां न सिर्फ यूनियन बनाने की कोशिश करने वाले सभी मजदूरों पर हमले कर रही हैं, बल्कि वे केंद्र और राज्य सरकारों तथा अदालतों के सहारे यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रही हैं कि उनके मजदूरों को कानूनी तौर पर यूनियन बनाने के अधिकार से वंचित किया जा सके।

ट्रेड यूनियन एक्ट में संशोधन लाने के लिए एक बिल संसद में पेश किया गया है। ट्रेड यूनियनों के व्यापक विरोध का सामना करते हुए, केंद्र सरकार ने सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा चलाई जा रही राज्य सरकारों को खुद ही इस दिशा में पहल लेने को प्रोत्साहित किया है। ऐसा करने में राजस्थान की सरकार सबसे आगे थी। राजस्थान में लागू किये गए संशोधित कानून के अनुसार, किसी मज़दूर यूनियन को कानूनी मान्यता तभी दी जायेगी अगर फैक्ट्री के कम–से–कम 30 प्रतिशत मज़दूर उसके सदस्य हों। इस संशोधन का मकसद है उस राज्य में हिन्दोस्तानी और विदेशी बड़े पूंजीपतियों की कंपनियों के मजदूरों को यूनियन बनाने से रोकना।

बड़े उद्योग, परिवहन, वित्त और सामाजिक सेवाओं में काम करने वाले मज़दूर सबसे संगठित तबका हैं, जो कई दशकों से यूनियनों में संगठित हैं और जिन्हें अपने अधिकारों की कानूनी मान्यता और सुरक्षा मिली हुई है। उनकी यह उपलब्धि कई दशकों तक श्रमजीवी वर्ग संघर्ष का परिणाम है। जब सरकार उन मज़दूरों को निशाना बनाती है जिन्हें अपने अधिकारों की कुछ हद तक कानूनी सुरक्षा मिली है, तो वह वास्तव में पूरे मज़दूर वर्ग पर हमला कर रही है। जब सबसे अगुवा तबके के मानदंडों को घटाया जाता है तो संपूर्ण मज़दूर वर्ग का मानदंड घट जाता है।

बड़े सरमायदारों के कार्यक्रम के तहत सिर्फ मज़दूर वर्ग की रोज़ी–रोटी और अधिकारों पर ही नहीं बल्कि देश के मेहनतकश किसानों की रोज़ी–रोटी और अधिकारों पर भी हमला किया जा रहा है। उदारीकरण और निजीकरण कार्यक्रम का एक उद्देश्य कृषि उत्पादन और व्यापार को इज़ारेदार पूंजीवादी कंपनियों के नियंत्रण में लाना है। परन्तु इस दिशा में मात्र आंशिक प्रगति हो पायी है। वर्तमान सरकार वैश्विक इज़ारेदार बीज कंपनियों और खाद्य पदार्थों की कार्पोरेट चेनों के अधिक से अधिक प्रवेश को इज़ाज़त देकर, इस प्रक्रिया को तेज़ गति से आगे बढ़ाने के लिये कदम उठा रही है।

किसानों के विरोध के सन्दर्भ में एक और मुद्दा सामने आ रहा है। वह है भूमि अधिग्रहण कानून में संशोधन लाने का मुद्दा। मनमोहन सिंह की सरकार के दौरान, किसानों के बढ़ते संघर्षों की वजह से, सरकार को उपनिवेशवादी भूमि

अधिग्रहण कानून को रद्द करना पड़ा था और एक नया कानून बनाना पड़ा था, जिसके अनुसार भूमि अधिग्रहण से पूर्व, अधिकतम वर्तमान मालिकों की अनुमति लेना ज़रूरी था। बड़े सरमायदार एक ऐसा कानूनी ढांचा चाहते हैं जिससे उन्हें जब–जब अपने पूंजी निवेश की परियोजनाओं के लिये भूमि की ज़रूरत होगी, तब–तब राज्य के उपयुक्त हस्तक्षेप के सहारे, भूमि अधिग्रहण करना उनके लिये आसान हो जायेगा। मोदी की सरकार ने जब अध्यादेश के ज़रिये ऐसे कानून के एक बेहद पूंजीवाद परस्त रूप को लाने की कोशिश की तो उसका उल्टा ही असर हुआ। किसानों, आदिवासियों और पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने व्यापक पैमाने पर उसका विरोध किया, जिसकी वजह से सरकार को उस अध्यादेश को चूक जाने देना पड़ा। यह एक मोर्चा है जिस पर यह सरकार बड़े सरमायदारों की आशाओं को अभी तक पूरा नहीं कर पायी है।

कृषि में पूंजीवादी इज़ारेदार कंपनियों के कार्यक्रम को बढ़ावा देने के दबाव के चलते, राजग सरकार कृषि व्यापार की पुरानी राज्य द्वारा आयोजित व्यवस्था को नष्ट करने की प्रक्रिया को और तेज़ी से आगे बढ़ाने के कदम ले रही है। ऐसा इसलिये किया जा रहा है ताकि कृषि क्षेत्र पर निजी व्यापारी कंपनियां आसानी से हावी हो सकें। प्रधानमंत्री ने इस वर्ष अप्रैल में जिस तथाकथित ई–नैम पहल की घोषणा की थी, जो एक इलेक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि बाज़ार है, जिसके ज़रिये "किसानों की आमदनी दुगुनी" करने का सपना दिखाया गया है, इसके पीछे यही उद्देश्य है।

कृषि उत्पाद विपणन समिति (ए.पी.एम.सी.) द्वारा प्रबंधित कृषि बाज़ारों की वर्तमान व्यवस्था के विनाश को जायज़ ठहराने के लिये यह बहुत बड़ा झूठ फैलाया जा रहा है कि व्यापार के उदारीकरण और फसल की खरीदी के निजीकरण से किसानों की आमदनी दुगुनी हो जायेगी। ए.पी.एम.सी. व्यवस्था में मंडियों का सार्वजनिक प्रबंधन होता है और इसे भूतपूर्व अवधि में कृषि विस्तार तथा अनाजों की खरीदी और वितरण की सार्वजनिक व्यवस्था के साथ–साथ स्थापित किया गया था। कांग्रेस पार्टी और भाजपा की एक के बाद दूसरी केंद्र सरकारों ने, विश्व बैंक की मदद के साथ, कई वर्षों से राज्य सरकारों को मनाने की कोशिश की है या उन पर दबाव डाला है कि वे अपने–अपने ए.पी.एम. सी. अधिनियमों में संशोधन करें ताकि फसल की खरीदी के क्षेत्र में निजी कंपनियों को घुसने और हावी होने दिया जा सके। हालांकि कई राज्य सरकारों ने अपने अधिनियमों को संशोधित कर दिया है परन्तु निजी कंपनियों द्वारा फसलों की खरीदी में अब तक सीमित प्रगति ही हुई है।

मिसाल के तौर पर महाराष्ट्र में दस वर्ष पहले ए.पी.एम.सी. अधिनियम का संशोधन किया गया था। उसके बाद कई निजी कंपनियां, जैसे कि टाटा, आदित्य बिरला, रिलायंस, बिग बाज़ार, आई.टी.सी., ए.डी.एम. एग्रो और महिन्द्रा एंड महिन्द्रा, "प्रत्यक्ष बाज़ार लाइसेंस" (डायरेक्ट मार्केटिंग लाइसेंस) या डी.एम.एल. के धारक बन गयी हैं। परन्तु इन कंपनियों के द्वारा कृषि फसलों की कुल वार्षिक खरीदी का अनुमान मात्र 1000 करोड़ रुपये है जबकि ए.पी.एम.सी. की मंडियों में 60,000 से 75,000 करोड़ रुपयों का व्यापार

होता है और इसके अलावा, अनौपचारिक ग्रामीण बाज़ारों में 25,000 करोड़ रुपयों का व्यापार होता है[50]। कृषि व्यापार में निजी कंपनियों के प्रवेश की प्रगति की धीमी गति की वजह किसानों का विरोध है तथा इस समय इस क्षेत्र में इज़ारेदारी करने वालों का विरोध भी है। ए.पी.एम.सी. के लायसेंस ध ाारक बिचौलिये, भ्रष्ट सरकारी अफ़सर और दूसरे ऐसे लोग, जो सब इस समय फसल की बिक्री से प्राप्त कुल धन का अधिक से अधिक हिस्सा अपनी जेबों में भर लेते हैं और किसान उत्पादकों के लिये बहुत कम हिस्सा छोड़ते हैं, वे भी निजी कंपनियों के प्रवेश का विरोध कर रहे हैं।

वर्तमान भाजपा सरकार लोक सभा में अपने बहुमत का इस्तेमाल करके, ए.पी.एम.सी. द्वारा नियंत्रित व्यापार को खत्म करके पूंजीवादी कंपनियों द्वारा व्यापार का तेज़ी से विस्तार करने के लिये नये–नये कदम उठा रही है। महाराष्ट्र में भाजपा–शिव सेना सरकार ने इस वर्ष फलों और सब्जियों को ए.पी.एम.सी. अधिनियम से बाहर रखने का कदम उठाया है।

शासक वर्ग यह दावा कर रहा है कि कृषि व्यापार में राज्य के हस्तक्षेप को खत्म करने और उसे पूंजीवादी कंपनियों व अन्य निजी मुनाफ़ाखोरों के हाथों में छोड़ देने से किसानों की आमदनी बढ़ेगी। यह अब तक के दुनिया के अनुभव और हिन्दोस्तान के अनुभव से बिल्कुल उल्टा है। पूंजीवादी इज़ारेदार कंपनियों के अधिकतम मुनाफ़ों के ज़रिये कृषि व्यापार पर उनका वर्चस्व बढ़ाने से छोटे किसान उत्पादकों

की और अधिक लूट व तबाही ही अनिवार्य है, न कि उनकी अमीरी।

जब किसान उत्पादक किसी विशाल पूंजीवादी कंपनी के साथ व्यापार करते हैं, जो किसी भी तरीके से अपने मुनाफ़ों को अधिकतम करना चाहती है, तो उन्हें बहुत ही असमान संबंध का सामना करना पड़ता है। राज्य द्वारा आयोजित कृषि व्यापार की पुरानी व्यवस्था से बेशक बहुत ही सीमित समर्थन और स्थायीपन मिलता था और समय के साथ–साथ उसमें भ्रष्टाचार भी बहुत फैल गया था। परन्तु उसकी जगह पर जिस व्यवस्था को स्थापित करने का वादा किया जा रहा है वह उससे भी ज्यादा खतरनाक है। किसान उत्पादकों को विश्व के बाज़ारों के उतार–चढ़ाव का शिकार बनाना एक ऐसा रास्ता है जिससे किसानों की असुरक्षा और ख़तरे का स्तर पहले से बहुत बढ़ गया है। इस रास्ते पर चलकर किसानों का कर्ज़भार बहुत बढ़ गया है और उसके साथ–साथ किसानों की आत्महत्या के कांडों की संख्या भी। आज हमारे देश में कृषि के संकट के समाधान बतौर जो रास्ता पेश किया जा रहा है वह कृषि को निजी इज़ारेदार कंपनियों की ज़रूरतों के अधीन बनाने की दिशा में और हमलावर तरीके से आगे बढ़ाने का रास्ता है। यह ईस्ट इंडिया कंपनी के युग की हालतों की याद दिलाता है।

"मेक इन इंडिया" कार्यक्रम का एक मुख्य हिस्सा है एक घरेलू सैनिक–औद्योगिक काम्प्लैक्स का निर्माण करना। बड़े सरमायदार इस बात को मानते हैं कि अगर हिन्दोस्तान को दुनिया के स्तर पर अपने प्रभाव क्षेत्र पर कब्ज़ा करने और

उसे विस्तृत करने के लिये दूसरी साम्राज्यवादी ताक़तों के साथ प्रभावशाली तरीके से स्पर्धा करनी है, तो युद्ध सामग्रियों का उत्पादन करने के लिये घरेलू क्षमता को बढ़ाना ज़रूरी है। इस समय हिन्दोस्तान युद्ध सामग्रियों के आयात पर बहुत निर्भर है। दुनिया के सभी देशों में हिन्दोस्तान हथियारों का आयात करने में सबसे आगे है। सेना, नौसेना और वायु सेना के लिये तरह–तरह की युद्ध सामग्रियों का उत्पादन करने के संयुक्त कारोबारों में, "मेक इन इंडिया" अभियान के तहत अब तक सबसे अधिक नये पूंजी निवेश किये गये हैं। अगले 10 वर्षों में, आयातित और देश में निर्मित हथियारों समेत लगभग 250 अरब डॉलर (16 लाख करोड़ रुपये) के हथियार खरीदने की योजना बनाई गयी है[51]।

तेज़ गति से किये जा रहे सैन्यीकरण का वित्तीय बोझ सभी हिन्दोस्तानी लोगों पर थोपा जा रहा है। इसके लिये अप्रत्यक्ष कर वसूली को बहुत बढ़ाया जा रहा है, मुद्रा स्फीति जारी है और इसके अलावा, हर वस्तु के प्रयोग के लिये ऊंचे से ऊंचे शुल्क व अन्य कीमतें लागू की जा रही हैं। बीते दो वर्षों में, जबकि दुनिया में कच्चे तेल की कीमत 50 प्रतिशत से अधिक घटी है, तो हिन्दोस्तान की सरकार ने ऐसे समय पर पेट्रोल और डीज़ल की कीमतों को कृत्रिम तरीके से ऊंचा बनाये रखा है[52]। दुनिया में तेल की कीमतों के घटने से सरकार को जो अप्रत्याशित धनलाभ हुआ, उसे सरकार ने ज़रूरी चीजों की कीमतों को घटाकर जनता की मूल ज़रूरतों को पूरा करने पर इस्तेमाल नहीं किया। इसके बजाय, सरकार ने उसे ऊंचे दर्ज़े की युद्ध सामग्रियों की खरीदारी के लिये और "रक्षा" उत्पादन व ढांचागत सुविध

ाओं, जैसे कि एक्सप्रेस–वे, तीव्र गति की रेलगाड़ी, आध ुनिक औद्योगिक और मालवाहक गलियारों, आदि को बनाने के लिये तरह–तरह की सुंयक्त कारोबार परियोजनाओं पर इस्तेमाल किया।

बड़े पूंजीपतियों ने सरकारी बैंकों से बहुत बड़ी मात्रा में कर्ज़े ले रखे हैं, जिन कर्ज़ों को उन्होंने नहीं चुकाया है। अगर सरकार सभी को खुशहाली दिलाने पर वचनबद्ध होती तो वह कर्ज़े न चुकाने वाले पूंजीपतियों के खिलाफ़ कड़े कदम लेती, उनकी सम्पत्तियों को ज़ब्त कर लेती। कर्ज़े न चुकाने वाले एक पूंजीपति, शराब धंधे का नवाब माल्या के खिलाफ़ कुछ ऐसा कदम लिया गया है, जिसका मीडिया में बड़े जोर–शोर से प्रचार हुआ है। परन्तु बीते दो वर्षों में एक लाख करोड़ रुपये से भी अधिक न चुकाये गये कर्ज़े माफ कर दिये गये हैं। इन कर्ज़ों को माफ करने वाले बैंकों के पुनः पूंजीकरण के लिये केन्द्रीय बजट से हजारों करोड़ों रुपये खर्च किये जा रहे हैं। कर्ज़े न चुकाने वाले पूंजीपतियों के मुनाफ़ों को बनाये रखने के लिये जनता का पैसा खर्च किया जा रहा है, जबकि बैंकों से कर्ज़माफी मांगने वाले किसानों को पुलिस की लाठियां खानी पड़ती हैं।

जब जी.एस.टी. लागू होगा, तब सर्व हिन्द तौर पर कार्यवाही करने वाले पूंजीपतियों के हित के लिये, अप्रत्यक्ष करों की एक सांझी व्यवस्था समेत एक सर्व हिन्द बाज़ार पैदा हो जायेगा। मेहनतकश बहुसंख्या पर अप्रत्यक्ष कर का बोझ बढ़ जायेगा और उसके साथ–साथ, राज्य सरकारों की कर वसूली की ताक़तें बहुत घट जायेंगी। मौजूदा अप्रत्यक्ष करों

की जगह पर एक जी.एस.टी. के लागू होने से करों की दरों पर फैसला लेने की ताक़त का और अधिक संकेन्द्रण होगा। जो राज्य वित्तीय तौर पर आश्रित हैं, उन्होंने अपने इलाकों में बेची जाने वाली वस्तुओं पर अपनी वैट दरों को निर्धारित करने के अपने अधिकार को त्यागना मंजूर कर लिया है। इसके बदले में वे राजस्व में फायदे की उम्मीद कर रहे हैं। जब जी.एस.टी. को पास किया गया तब सिर्फ एक राज्य सरकार, तमिलनाडु की सरकार ने जी.एस.टी. का विरोध किया था और संसद में उसके प्रतिनिधियों ने यह कह कर वॉक–आउट किया कि राज्य की ताक़तों में कटौती की जा रही है।

भाजपा अपने बहुमत का इस्तेमाल करके, हिन्दोस्तानी और विदेशी इज़ारेदार पूंजीपतियों के हित के लिये दूरगामी संस्थागत परिवर्तन ला रही है। ये परिवर्तन इसलिये लाये जा रहे हैं ताकि सभी आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में हिन्दोस्तानी और विदेशी इज़ारेदार पूंजीपति और आसानी से प्रवेश कर सकें तथा और विस्तृत तौर पर लूट सकें। ध ान और वित्त व्यवस्था को पश्चिमी साम्राज्यवादी व्यवस्था के साथ और अधिक जोड़ा जा रहा है। यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा प्रशिक्षित विशेषज्ञ ही भारतीय रिज़र्व बैंक के प्रधान नियुक्त किये जायें। योजना आयोग को रद्द कर दिया गया है और उसकी जगह पर एक नए "नीति आयोग" का गठन किया गया है।

नीति आयोग केन्द्रीय और राज्य सरकारों को "विशेषज्ञ सलाह" देने के लिए गठित किया गया है, ताकि उदारीकरण और निजीकरण के ज़रिये भूमंडलीकरण के आर्थिक सुधार कार्यक्रम को ज्यादा से ज्यादा तेज़ गति से लागू किया जा सके। अन्य कार्यों के अलावा, नीति आयोग ने रक्षा क्षेत्र, भारतीय रेल, एयर इंडिया व कई और राजकीय कंपनियों के निजीकरण के तौर–तरीकों पर सुझाव दिए हैं। उसने निजी इज़ारेदार कंपनियों के लिए और अधिक स्थान बनाकर, कृषि व्यापार का और अधिक उदारीकरण करने के तरीकों के सुझाव दिये हैं। उसने मेडिकल शिक्षा समेत, सभी उच्च शिक्षा और प्रौद्योगिक शिक्षा को "मुनाफ़ा कमाने वाले" क्षेत्र में बदल देने का प्रस्ताव किया है। उसका एक प्रमुख काम है "सुशासन" के लिए कदम प्रस्तावित करना, यानी हिन्दोस्तानी और विदेशी इज़ारेदार पूंजीपतियों के अधिकतम मुनाफ़ों के लिए, हमारी भूमि, श्रम और संसाधनों की लूट को और आसान बनाना।

बड़े सरमायदारों द्वारा तेज़ी से किये जा रहे आर्थिक हमले के साथ–साथ राजकीय आतंकवाद को बहुत बढ़ाया जा रहा है और इसे पाकिस्तान–विरोधी तथा मुसलमान–विरोधी उन्माद फैलाकर जायज़ ठहराया जा रहा है। जो भी वर्ग शोषण, राष्ट्रीय या जातिवादी दमन से मुक्ति की मांग उठाता है, उसे "राष्ट्र–विरोधी" करार दिया जाता है। विश्वविद्यालयों के छात्र, जो अत्याचार और अन्याय के खिलाफ़ आवाज उठाते हैं, उन्हें राजद्रोह, यानी सरकार के खिलाफ़ युद्ध करने के इलजाम पर गिरफ्तार किया गया है। इज़ारेदार पूंजीपतियों द्वारा नियंत्रित मीडिया का इस्तेमाल करके उन्माद का

वातावरण बड़े सुनियोजित ढंग से पैदा किया जा रहा है, यह जनमत बनाने के लिये कि जो भी वर्तमान सरकार और देश की दिशा पर सवाल उठाता है, वह हिन्दोस्तान के विघटन के लिये काम कर रहा है। इसका एक हाल का उदाहरण जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) में छात्र संघ के कार्यकर्ताओं पर "राष्ट्र–विरोधी" नारे लगाने का इलजाम है।

एक विडियो, जिसे देखकर ऐसा लगता है कि हिन्दोस्तान को टुकड़े–टुकड़े करने का नारा दिया जा रहा है, उसको एक टी.वी. चैनल ने बार–बार दिखाया। उस "सबूत" के आध ाार पर, छात्र संघ के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया और उन पर राजद्रोह का इलजाम लगाया गया। गृहमंत्री ने फौरन पाकिस्तानी आतंकवादी गिरोहों और जे.एन.यू. छात्र कार्यकर्ताओं के बीच संभावित संबंधों के बारे में एक बयान दिया। उसके बाद यह पर्दाफाश हुआ कि दिखाया गया विडियो क्लिप फर्ज़ी था और आपत्तिजनक नारे की आवाज़ की रिकार्डिंग जे.एन.यू. में आयोजित एक सार्वजनिक विरोध सभा की विडियों रिकार्डिंग के साथ जोड़ी गई थी। उसके बावजूद गृहमंत्री ने अपना बयान वापस नहीं लिया। छात्र नेताओं पर लगाये गये इलजाम वापस नहीं लिये गये। फर्ज़ी विडियो दिखाने वाले टीवी चैनल पर कोई कार्यवाही नहीं की गयी। इन सब तथ्यों से यह बिना शक साबित होता है कि जे.एन.यू. के प्रगतिशील छात्रों को बदनाम करने का अभियान राज्य द्वारा आयोजित राजनीतिक उत्पीड़न की हरकत थी, जिसका उद्देश्य था अपने राजनीतिक विचार प्रकट करने के नौजवानों और छात्रों के अधिकारों को दबाना तथा सभी प्रकार के विरोध को अपराधी ठहराना।

एक कानूनी प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है जिसका उद्देश्य है "मुठभेड़ में मौत" और आतंकवादी करार किये गये बेकसूर लोगों के खिलाफ़ किये गये अपराधों के लिये पुलिस और खुफिया एजेंसियों के अफसरों पर मुकदमा चलाये जाने तथा उन्हें सज़ा दिलाने की प्रक्रिया को रोकना। यह कदम ऐसे समय पर लिया जा रहा है जब गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश व अन्य राज्यों में राजकीय आतंकवाद के पीड़ितों के अधिकारों की हिफ़ाज़त करने वाले कार्यकर्ताओं ने अदालतों में लगातार संघर्ष किया है, जिससे पुलिस और खुफिया एजेंसियों के वरिष्ठ अफ़सरों की भूमिका का पर्दाफाश हुआ है। राज्य के अफ़सरों को कानूनी कार्यवाहियों से दी जा रही छूट को "राष्ट्र हित" में बताकर जायज़ ठहराया जा रहा है।

15 अगस्त, 2014 को लाल किले से देश को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 10 साल तक साम्प्रदायिक हिंसा पर रोक लगाने की मांग की थी। परन्तु उनके शासन के चलते, हमारे लोगों के अलग–अलग तबकों को क्रूर साम्प्रदायिक नफ़रत भरे प्रचार और जातिवादी अत्याचार का निशाना बनाया गया है। "गौ हत्या" रोकने के नाम पर, मुसलमानों और चमड़ा उद्योग में काम करने वाले दलितों पर बेरहमी से हमला किया गया है। इन हमलों को अंजाम देने के लिए कातिलाना गिरोहों का इस्तेमाल किया गया है।

कश्मीर में केन्द्र के सुरक्षा बलों द्वारा चलाया जा रहा वहशी युद्ध वर्तमान शासन के दौरान बद से बदतर हो गया है। 100 से अधिक लोग मारे गये हैं और सेना द्वारा तथाकथित "व्यवस्था बहाल करने" के लिए किये गए अमानवीय हमलों

में हजारों लोग घायल हुए हैं या अंधे हुए हैं। राजकीय आतंकवाद के खिलाफ़ और राष्ट्रीय व मानवीय अधिकारों के लिये कश्मीरी लोगों के संघर्ष को अभी भी "सीमा पार आतंकवाद" के परिणाम के रूप में दर्शाया जा रहा है। इस तरह, हिन्दोस्तानी संघ के एक घटक, कश्मीर के राष्ट्रीय अधिकारों के जायज़ संघर्ष को बाकी देश के लोगों की नज़रों में अवैध और अपराधी बतलाया जा रहा है।

"राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय अखंडता" की हिफ़ाज़त करने का बुलावा मेहनतकश लोगों के गुस्से से अपने स्वर्ग को बचाने के लिए पूंजीपति इज़ारेदार घरानों का बुलावा है। 1975–77 के फासीवादी आपात्कालीन राज के दौरान, इंदिरा गांधी की कांग्रेस सरकार ने पहली बार इसे संविधान के पूर्वकथन में शामिल किया था। इज़ारेदार पूंजीपतियों की हुक्मशाही के खिलाफ़ हर प्रकार के विरोध, शोषित जनसमुदाय के विरोध तथा शोषक वर्गों के बीच में से विरोध, को कुचलने के लिये उन्हें राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय अखंडता के दुश्मन करार दिए जाने की धमकी दी जाती है। इसी नारे का इस्तेमाल करके 80 के दशक में, पंजाब के राजनीतिक वातावरण में जहर घोल दिया गया था और "सिख अलगाववाद" से लड़ने के नाम पर, राजकीय आतंकवाद का एक पूरा ढांचा बनाया गया था। वर्तमान भाजपा सरकार भूतपूर्व कांग्रेस सरकारों के ही पदचिन्हों पर चल रही है। वह इज़ारेदार पूंजीपतियों की अमिट भूख के खिलाफ़ हर प्रकार के प्रतिरोध को बदनाम करने और कुचलने के लिए, राष्ट्रवाद का झंडा फहरा रही है।

भाजपा का "राष्ट्रवाद" उतना ही कपटी है जितना कि कांग्रेस पार्टी का "राष्ट्रवाद"। दोनों के "राष्ट्रवाद" के पीछे बड़े पूंजीपतियों के खुदगर्ज़ हित छिपे हैं। बड़े पूंजीपतियों को किसी भी राष्ट्र के हितों से ज्यादा, अपने मुनाफ़ों की फिक्र है। वे राज्य का इस्तेमाल करके, संदिग्ध आतंकवादी हरकतों और तरह–तरह के अपराधों को आयोजित करते हैं। उसके बाद, लोगों के अलग–अलग तबकों को आतंक फैलाने के लिए दोषी ठहराया जाता है। विशेष धार्मिक समुदायों और राष्ट्रीयताओं के नौजवानों को जेल में बंद कर दिया जाता है या फर्ज़ी मुठभेड़ों में मार डाला जाता है। सरमायदारों के दावों, कि हिन्दोस्तान को सीमा–पार आतंकवाद से, पंजाब, कश्मीर व पूर्वोत्तर राज्यों के अलगाववादी आंदोलनों से, मध्य हिन्दोस्तान में माओवादी आतंक से तथा पूरे देश में इस्लामी आतंक से खतरा है, इन दावों के समर्थन में, लोगों की चेतना पर लगातार फर्ज़ी विडियो क्लिप और मनगढ़ंत "तथ्यों" से वार किया जा रहा है। इन तथाकथित खतरों से हिन्दोस्तान को बचाने के बहाने, सभी से बड़े सरमायदारों की हुकूमत की हिफ़ाज़त करने की मांग की जा रही है।

हिन्दोस्तानी सरमायदार और उनका राज्य राष्ट्रीय एकता का बहुत गुणगान करते हैं, परन्तु वे लोगों के आपस बीच तरह–तरह के झगड़े भड़काते और आयोजित करते हैं, ताकि समस्याओं के असली स्रोत से लोगों का ध्यान हटाया जा सके और लोगों की एकता तोड़ी जा सके। भूतपूर्व उपनिवेशवादी शासकों के कदमों पर चलकर, हिन्दोस्तानी सरमायदार बड़े सुनियोजित तरीके से लोगों को बांटते

हैं। देश के लोगों की भ्रात्रीय एकता को तोड़ने के लिए, हिन्दोस्तानी सरमायदार तरह–तरह की पहचानों को बढ़ावा देते रहते हैं। असम, मणिपुर और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में नस्लवादी झगड़े भड़काए जाते हैं। नौजवानों को जाति पर आधारित आरक्षण के ज़रिये सरकारी नौकरियों और सरकारी उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिले का सपना दिखाकर, कई राज्यों में जातिवादी झगड़े उकसाए जाते हैं। राजनीतिक और आर्थिक मामलों, जैसे कि तमिलनाडु और कर्नाटक, पंजाब और हरियाणा तथा हिन्दोस्तानी संघ के अंदर अन्य पड़ोसी राज्यों के बीच नदियों के जल के आबंटन जैसे मुद्दों को लेकर, समय–समय पर झगड़े उकसाए जाते हैं। लम्बे समय से चले आ रहे विवादों को जान–बूझकर हल नहीं किया जाता है, ताकि शासक वर्ग किसी भी समय, लोगों को गुमराह करने और आपस में लड़वाने के लिए उनका इस्तेमाल कर सकें।

2014 में अपने शपथ ग्रहण समारोह में पड़ोसी देशों के नेताओं को न्योता देकर, प्रधानमंत्री मोदी ने यह उम्मीद जगाई थी कि हिन्दोस्तान अपने पड़ोस के देशों के साथ और ज्यादा नजदीकी से मित्रतापूर्ण संबंध बनाएगा। परन्तु बीते 30 महीनों की वास्तविक राजनीतिक गतिविधियों से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दोस्तानी राज्य अपने पड़ोस में, एक बड़ी साम्राज्यवादी ताक़त की तरह बर्ताव कर रहा है। नेपाल के भूतपूर्व प्रधानमंत्री, के.पी. शर्मा ओली ने हिन्दोस्तान द्वारा, कई महीनों तक आर्थिक नाकेबंदी लागू करके, उस देश में बेरहम दखलंदाजी की खुलेआम निंदा की थी। जनवरी 2015 में श्रीलंका के राष्ट्रपति चुनावों में,

हिन्दोस्तानी राज्य ने बड़ी सक्रियता से दखलंदाजी की थी। मोदी सरकार बहुत उत्तेजित तरीके से पाकिस्तान–विरोधी उन्माद को बढ़ावा दे रही है। वह पाकिस्तान के खिलाफ़ जंग के लिए हिन्दोस्तान के अन्दर जनमत तैयार करने की कोशिश कर रही है और अमरीका के अन्दर एक अभियान चला रही है कि पाकिस्तान को आतंकवाद को प्रश्रय देने वाला दुष्ट राज्य करार दिया जाए।

70वें स्वतंत्रता दिवस पर अपने भाषण में प्रधानमंत्री मोदी ने पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रान्त के लोगों के राष्ट्रीय आत्म–निर्धारण के अधिकार का मुद्दा उठाया था। पाकिस्तान में अस्थिरता की स्थिति पैदा करने के इरादे से हिन्दोस्तानी राज्य अब तक जो गुप्त जासूसी कार्य करता आया था, उस पर से परदे को हटाने का यह सन्देश था। यह सन्देश था कि हिन्दोस्तानी राज्य अब पाकिस्तान को टुकड़े–टुकड़े करने के लिए खुलेआम काम करेगा। यह हमें याद दिलाता है कि हिन्दोस्तानी राज्य ने किस तरह श्रीलंका के अंदरूनी मामलों में दखलंदाजी की थी और उस देश में अपने साम्राज्यवादी हितों को बढ़ावा देने के लिए, श्री लंका के तमिल लोगों के संघर्ष के साथ खिलवाड़ किया था। पड़ोसी देशों में हिन्दोस्तानी राज्य की खुली और गुप्त दखलंदाजी की वजह से हिन्दोस्तान और दक्षिण एशिया के कई देशों के बीच शक और दुश्मनी का वातावरण फैला हुआ है। इससे अमरीकी साम्राज्यवादियों के लिए, दक्षिण एशिया के देशों में अपनी सब–तरफा दखलंदाजी को खूब बढ़ाने की उपयुक्त हालतें पैदा की गयी हैं।

प्रधानमंत्री की अगुवाई में उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल सभी महाद्वीपों में दुतरफा और बहुतरफा सभाओं में भाग लेते रहे हैं। प्रधानमंत्री की उत्तेजित कूटनीति और व्यस्त विदेश यात्रा कार्यक्रम का उद्देश्य है विदेशी इज़ारेदार पूंजीवादी कंपनियों को हिन्दोस्तान में आकर पूंजी निवेश करने के लिए आमंत्रित करना और हिन्दोस्तानी पूंजीपतियों के लिए विदेशों में अपने पूंजी निवेश को बढ़ाने के द्वार खोलना। इसका मकसद है हिन्दोस्तान को एशिया और दुनिया की सभी अलग–अलग ताक़तों और ताक़त समूहों के साथ बांध कर रखना। हिन्दोस्तानी बड़े सरमायदारों के साम्राज्यवादी विस्तार के लिए विदेश में रहने वाले हिन्दोस्तानी लोगों का समर्थन जुटाना भी इसका एक मकसद है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिये हिन्दोस्तान का व्यापक ढांचा और दृष्टिकोण तथा उसकी विदेश नीति मुख्यतः वस्तुगत ज़रूरतों और बड़े सरमायदारों के आर्थिक हितों से निर्धारित है। जब दुनिया दो ध्रुवों में बंटी हुई थी, तो उस अवधि में हिन्दोस्तानी राज्य ने हिन्दोस्तान के इज़ारेदार पूंजीपतियों के हितों की बेहतरीन सेवा करने के लिये, दोनों महाशक्तियों के साथ संबंध बनाये रखने और उनके बीच में दांवपेंच करने की कोशिश की। सोवियत संघ के पतन के पश्चात की वर्तमान अवधि में हिन्दोस्तानी राज्य बहु–ध्रुवीय साम्राज्यवादी दुनिया का लक्ष्य हासिल करने का प्रयास कर रहा है, जिसमें प्रमुख ताक़तों के उच्च मंच पर हिन्दोस्तान का भी स्थान होगा। अमरीका, रूस, चीन, ईरान और जापान समेत तरह–तरह की वैश्विक ताक़तों के साथ हिन्दोस्तान आज बढ़–चढ़कर सहकार्य कर रहा है। विविध तरीकों से सहकार्य करने के

इस व्यापक ढांचे के अंदर, कांग्रेस पार्टी नीत संप्रग सरकार द्वारा शुरू किये गये हिन्दोस्तान–अमरीका रणनैतिक गठबंधन को और मजबूत करने के ठोस कदम लिये जा रहे हैं।

इतिहास में पहली बार, अमरीका के राष्ट्रपति को हिन्दोस्तानी राज्य के 2015 के गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि होने का निमंत्रण दिया गया था। इसके ज़रिये हिन्दोस्तान के सरमायदार यह सन्देश देना चाहते थे कि हिन्दोस्तान ने शीत युद्ध के पुराने ढांचे से बाहर निकलने का फैसला किया है और अब उसे अमरीका को अपना सांझेदार बनाकर उससे गले मिलने में कोई संकोच नहीं है। हिन्दोस्तान–अमरीका सुरक्षा सैन्य समझौता (एल.ई.एम.ओ.ए.) पर हस्ताक्षर करके, अमरीका के वैश्विक युद्ध मशीन के आराम करने और ईंधन लेने की सेवाओं के लिए, हिन्दोस्तानी सैनिक अड्डों को खोल दिया गया है।

जबकि भाजपा खुद को कांग्रेस पार्टी से बहुत भिन्न दिखाने की कोशिश करती है, वास्तव में वह उसी रास्ते पर और हमलावर तरीके से आगे बढ़ रही है। प्रधानमंत्री मोदी दावा करते हैं कि वे हिन्दोस्तान की अस्मिता को वापस लायेंगे, परन्तु वे उपनिवेशवादी विरासत से नाता तोड़ने का कोई नज़रिया या संभावना नहीं पेश करते हैं। वे सिर्फ एक नारा दे रहे हैं परन्तु सभी हिन्दोस्तानियों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये उनके पास कोई ठोस योजना नहीं है।

इस उपमहाद्वीप के लोगों के सदियों के अनुभव से उभरकर आये राजनीतिक सिद्धांत, राजधर्म, का एक बुनियादी असूल

यह है कि समाज के सभी सदस्यों को सुख और रक्षा दिलाना राज्य का कर्तव्य है। भाजपा की सरकार जब "न्यूनतम सरकार" का प्रचार करती है और सामाजिक गतिविधि के हर क्षेत्र में निजीकरण को प्रोत्साहन देती है, शिक्षा और स्वास्थ्य को भी अधिकतम इज़ारेदार मुनाफ़ों के स्रोत में बदल देना चाहती है, तो वह राजधर्म के इस बुनियादी असूल का हनन कर रही है। लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने की राज्य की जिम्मेदारी से हट जाने का मतलब है समाज के सभी सदस्यों के अधिकारों का हनन करना। हर गतिविधि को "बाज़ार की ताक़तों" के हाथों में छोड़ देने के बारे में बर्तानवी–अमरीकी साम्राज्यवाद के मनगढ़ंत घिसे–पिटे सिद्धांतों को दोहराकर, "सुशासन" के नाम से एक ऐसे राज्य के अधर्म को जायज़ ठहराया जा रहा है जो सिर्फ इज़ारेदार पूंजीपतियों के प्रति ही जिम्मेदार है।

सारांश में, इज़ारेदार पूंजीवादी घरानों की अगुवाई में हिन्दोस्तानी शासक वर्ग देश को एक ख़तरनाक साम्राज्यवादी रास्ते पर खींच ले जा रहा है। वह हमारे देश की भूमि और श्रम का अधिक से अधिक शोषण और लूट करके, दुनिया में अपने प्रतिस्पर्धियों के साथ दौड़ में उनसे आगे निकलना चाहता है। वह विदेशी पूंजी के लिए सभी दरवाज़ों को खोल रहा है और अर्थव्यवस्था का सैन्यीकरण कर रहा है। वह पाकिस्तान और चीन के खिलाफ़ लगातार उग्र–राष्ट्रवादी और युद्ध भड़काऊ प्रचार करता रहता है। इसके साथ–साथ, वह सबसे खतरनाक और जंगफरोश ताक़त तथा दुनिया में आतंकवाद के सबसे प्रमुख आयोजक, अमरीकी साम्राज्यवाद

के साथ बहुत ही सुनियोजित तरीके से एक रणनैतिक गठबंधन बना रहा है।

हिन्दोस्तान के इज़ारेदार पूंजीवादी घराने इस समय, उदारीकरण और निजीकरण के अपने मज़दूर–विरोधी, किसान–विरोधी और राष्ट्र–विरोधी कार्यक्रम को कोई नया जामा पहनाकर, उसे लोगों के सामने आकर्षक वेश में पेश करने के लिए, नरेन्द्र मोदी की अगुवाई वाली भाजपा नीत बहुमत सरकार पर भरोसा कर रहे हैं। मोदी सरकार मजदूरों का शोषण तेज़ करने, पूंजीवादी मुनाफ़ों को बढ़ाने और विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने के लिए, मजदूरों के अधिकारों पर बढ़–चढ़ कर हमले कर रही है। वह इज़ारेदार पूंजीपतियों के प्रभुत्व को बढ़ाने के लिए, लाखों–लाखों किसानों और अन्य छोटे उत्पादकों की रोज़ी–रोटी को नष्ट कर रही है। वह अपने अधिकारों की मांग करने वालों पर वहशी दमन कर रही है। वह इज़ारेदार पूंजीपतियों की इच्छाओं के अनुसार सब कुछ कर रही है, पर भ्रष्टाचार और आतंकवाद के खिलाफ़ लड़ाई को अगुवाई देने का झूठा दावा कर रही है। वह "सीमा पार आतंकवाद" से लड़ने के नाम पर सांप्रदायिक झगड़े भड़का रही है और राजकीय आतंकवाद को बढ़ावा दे रही है। जनवादी अधिकारों और मानव अधिकारों पर इस क्रूर हमले का विरोध करने वाले सभी लोगों को अपराधी और "राष्ट्र–विरोधी" करार दिया जा रहा है।

विश्व क्रांति की लहर

साथियों,

कुछ 25 वर्ष पहले, दुनिया के पूंजीपतियों ने बड़ी प्रसन्नता के साथ, यह ऐलान किया था कि "कम्युनिज़्म के भूत" को मिटा दिया गया है। उन्होंने दावा किया था कि वे एक नयी दुनिया बनाने वाले हैं, जो तथाकथित शांतिपूर्ण दुनिया होगी, जिसमें पूंजीवादी विकास से सभी राष्ट्रों को लाभ होगा। उन्होंने यह आरोप लगाया था कि समाजवाद के चलते व्यक्तिगत अधिकारों को दबाया जाता है, और उन्होंने खुद को लोकतंत्र और मानव अधिकारों के संरक्षकों के रूप में पेश किया था।

उत्तरी अमरीका और यूरोप के साम्राज्यवादी राज्यों के प्रतिनिधियों ने मिलकर, सोवियत संघ के विघटन की पूर्व संध्या पर, "नए यूरोप के लिए पेरिस के घोषणापत्र" (पेरिस चार्टर) पर हस्ताक्षर किये थे। पेरिस चार्टर, जिस पर 1990 में हस्ताक्षर किया गया था, में यह घोषणा की गयी थी कि निजी संपत्ति को सम्मान देने पर आधारित बाज़ार उन्मुख अर्थव्यवस्था और बहुपार्टीवादी प्रतिनिधित्ववादी लोकतंत्र – इन्हीं व्यवस्थाओं और मूल्यों को दुनिया के सभी देशों को अपनाना होगा। अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने जनवरी 1993 में अपने पदग्रहण समारोह के दौरान दिए गए भाषण में ऐलान किया था कि अमरीका का नवीकरण शुरू हो गया है और अब वह कम्युनिज़्म मुक्त दुनिया की अगुवाई करेगा।

दुनिया के सरमायदारों के उन बड़े–बड़े दावों के 25 वर्ष बाद, तथ्यों और गतिविधियों से क्या सामने आता है?

सब को लाभ पहुंचाना तो दूर, "मुक्त बाज़ार" के झंडे तले इज़ारेदार पूंजीवाद और स्पर्धाकारी साम्राज्यवादी साम्राज्यों के विस्तार से दुनिया की अर्थव्यवस्था गहरे और लम्बे समय तक जारी संकट में फंस गयी है।

बहुपार्टीवादी प्रतिनिधित्ववादी लोकतंत्र की राजनीतिक प्रक्रिया बहुत बदनाम हो चुकी है। इज़ारेदार पूंजीपतियों की सेवा करने वाली पार्टियां जैसे–जैसे चुनाव जीतकर एक–दूसरे का स्थान लेती हैं, वैसे–वैसे यह स्पष्ट होता जा रहा है कि राजनीतिक सत्ता बहुत ही कम हाथों में संकेंद्रित है। राष्ट्रीय सुरक्षा और "आतंकवाद पर जंग" के नाम पर, सभी जनवादी अधिकारों को पांव तले रौंद दिया जा रहा है।

शांति और सहयोग का वादा किया गया था परन्तु सारी दुनिया में लगातार जंग होते रहे हैं, सामुदायिक झगड़े होते रहे हैं और अप्रत्याशित हद तक गुप्त व खुलेआम राजकीय आतंकवाद फैला हुआ है।

नवीकरण तो दूर, पुरानी पूंजीवादी–साम्राज्यवादी व्यवस्था की हिफ़ाज़त की जा रही है, जिसकी वजह से चारों तरफ तबाही मची हुयी है।

मानव अधिकारों की रक्षा तो दूर, पूंजीवादी राज्य "इज़ारेदार पूंजीपतियों के अधिकारों" की रक्षा कर रहे हैं और अधिकतम लोगों को खुद अपनी देखभाल करने के लिए, अपने हाल पर छोड़ देते हैं।

हमारे देश में, 24 जुलाई, 1991 को तत्कालीन वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने अपने प्रथम बजट भाषण में यह ऐलान किया था कि हिन्दोस्तान के आगे बढ़ने के लिए यह आवश्यक है कि पूंजीपतियों को यथासंभव तेज़ गति से अपनी दौलत को बढ़ाने दिया जाए, और बाकी सभी को उसके अनुसार अपनी कमर कस लेनी चाहिए।

उन्होंने कहा था कि "दौलत पैदा करने के लिए हमें पूंजी के संचय को प्रोत्साहित करना चाहिए। इसका अवश्य ही यह मतलब होगा कि कई चीजों में हमें कमखर्ची करनी पड़ेगी। ...पर आखिर में, सारी दौलत समाज का उत्पाद है। जो दौलत पैदा करते हैं, जो दौलत के मालिक हैं, उन्हें न्यासधारक बतौर दौलत को समाज के हित में इस्तेमाल करना चाहिए, खास तौर पर दबे–कुचले और बेसहारे लोगों के लिए। कई वर्षों पहले, गांधी जी ने न्यासधारिता के दर्शनशास्त्र पर विस्तारपूर्वक बोला था। उसी दर्शनशास्त्र को हमें अपना मार्गदर्शक बनाना चाहिए"।

उसके बाद आयी सभी सरकारों ने कमखर्ची के नाम पर मजदूरों और किसानों की खरीदारी की ताक़त को घटाकर, कम से कम हाथों में पूंजी के संचय को प्रोत्साहित करने के लिए पूरा दम लगाया है। इज़ारेदार पूंजीपतियों ने तेज़ गति से अपनी दौलत बढ़ाई है और उनमें से अनेक दुनिया के सबसे अमीर लोगों में गिने जाते हैं। परन्तु उन "न्यासधारकों" ने अपनी दौलत को "समाज के हित में" या "दबे–कुचले और बेसहारे लोगों के लिए" नहीं इस्तेमाल किया है। उन्होंने बाकी जनता को दौलत से वंचित करके,

अपनी अमीरी को बढ़ाने के लिए अपनी दौलत का इस्तेमाल किया है।

मनमोहन सिंह और सरमायदारों के सभी अर्थशास्त्री इस सच्चाई को छिपाते हैं कि मजदूर, किसान और दूसरे मेहनतकश ही दौलत को पैदा करते हैं, पर वह दौलत पूंजी के मालिकों के हाथों में संकेंद्रित हो जाती है। वे इस सच्चाई को छिपाते हैं कि पूंजीपति वर्ग के हाथों में धन संचय की गति अधिक से अधिक तभी हो सकती है जब मानव श्रम का शोषण अधिक से अधिक तेज़ कर दिया जाता है और मजदूरों व दूसरे मेहनतकशों की गरीबी को और बढ़ा दिया जाता है।

"मुक्त बाज़ार सुधारों", उदारीकरण और निजीकरण के नुस्खों का दुनियाभर में पर्दाफाश हो चुका है। यह स्पष्ट हो गया है कि यह इज़ारेदार पूंजीपतियों द्वारा अधिक से अधिक शोषण और लूट का कार्यक्रम ही है। परन्तु हिन्दोस्तानी शासक वर्ग नए नामों और नारों के साथ उन्हीं घिसे–पिटे विचारों की फेरी लगा रहा है। बीते दिनों में, उन नुस्खों की नाकामयाबी के लिए कांग्रेस पार्टी और दूसरी पार्टियों को दोषी बताया जा रहा है, उन्हें भ्रष्ट करार दिया जा रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी को एक मसीहा के रूप में पेश किया जा रहा है, जो व्यवस्था की तथाकथित सफाई करेगा और पूंजीवाद को सबके हित में चलाएगा। मेहनतकश जनसमुदाय को दिन–रात सांप्रदायिक और जंग फरोश प्रचार का शिकार बनाया जा रहा है। तरह–तरह की भटकाववादी हरकतों

और झूठे प्रचार का इस्तेमाल किया जा रहा है, ताकि लोग न समझ सकें कि वास्तव में क्या हो रहा है और शासक वर्ग के खिलाफ़ एकजुट न हो जाएं।

साथियों,

25 वर्ष पहले, जब विश्व क्रांति की लहर ज्वार से भाटे में बदल गयी थी, तब मज़दूर वर्ग को दुनिया की राजनीति के केंद्र से हटाकर, किनारे पर कर दिया गया था। मध्यम श्रेणी बड़े सरमायदारों के पक्ष में हो गयी थी। आज कई घटनाओं से यह स्पष्ट संकेत मिल रहा है कि मज़दूर वर्ग फिर से केंद्र में वापस आने की तैयारी कर रहा है। यह संकेत भी मिल रहा है कि बड़े सरमायदारों और समाज का नवीकरण करने के उनके वादों पर मध्यम श्रेणी का भरोसा जल्दी ही खत्म होने जा रहा है।

अमरीकी साम्राज्यवाद की अपनी हुक्मशाही के तले एक–ध्रुवीय दुनिया स्थापित करने की कोशिश के खिलाफ़ विरोध संघर्ष बढ़ते जा रहे हैं। जिन देशों और लोगों को उससे खतरा है, वे उसका विरोध कर रहे हैं। अमरीका के मज़दूर वर्ग और लोग भी उसका विरोध कर रहे हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद की यह कोशिश, प्रतिस्पर्धी साम्राज्यवादी ताक़तों से भी बढ़ते हद तक टकरा रही है। अमरीका का शासक वर्ग खुद ही बहुत बुरी तरह बंटा हुआ है। ये सब वर्तमान विश्व व्यवस्था की कमजोरी और अस्थायीपन के संकेत हैं।

सभी पूंजीवादी लोकतंत्रों में, व्यापक जनसमुदाय में इस विषय पर बहुत असंतोष है कि उनके हाथ में राजनीतिक सत्ता नहीं है। सर्वव्यापक मताधिकार तो है, परन्तु फैसले लेने वाले निकायों में अधिकतम लोगों का कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। इज़ारेदार पूंजीपतियों द्वारा समर्थित पार्टियां ही चुनाव के लिए उम्मीदवारों का चयन करती हैं। जब लोग मतदान करते हैं तो वे सारी ताक़त अपने तथाकथित प्रतिनिधियों के हाथों में सौंप देते हैं और खुद अपनी हालतों के बेबस शिकार बन जाते हैं। जो चुनाव जीतते हैं, वे अपनी–अपनी पार्टियों के प्रति जवाबदेह होते हैं, न कि उन्हें वोट देकर जिताने वाली जनता के प्रति। जो सरकार बनती है, उसके कार्यक्रम को पूंजीपति वर्ग के सबसे अमीर और शक्तिशाली तबके पहले से ही तय करके रखते हैं। सत्ता में आने वाली पार्टी को पूंजीवादी अरबपतियों द्वारा निर्धारित कार्यक्रम को "जनादेश" बतौर प्रस्तुत करने और लागू करने की जिम्मेदारी दी जाती है।

राज्य के अधिकारी यह दावा करते हैं कि लोकतंत्र लोगों द्वारा शासन है, परन्तु हमारे देश की कठोर हक़ीक़त, इसका बिल्कुल उल्टा है। हक़ीक़त यह है कि पूंजीवादी लोकतंत्र चंद शोषकों की हुक्मशाही है। व्यापक जनसमुदाय अपने हाथों में राजनीतिक सत्ता की मांग कर रहा है और इस मांग को लेकर आन्दोलन आगे बढ़ रहा है।

हमारे देश में, एक तरफ यह दावा किया जाता है कि लोग हिन्दोस्तान के भविष्य को निर्धारित कर रहे हैं, और दूसरी तरफ, सच तो यह है कि लगभग 150 इज़ारेदार पूंजीवादी

घरानों की अगुवाई में मुट्ठीभर शोषक देश का एजेंडा तय कर रहे हैं। इन दोनों में बहुत बड़ा अंतर्विरोध है। एक तरफ चंद लोगों के हाथों में सत्ता का संकेद्रण और दूसरी तरफ हमारी जनता की लम्बे समय से चली आ रही मांग कि हम हिन्दोस्तान के लोगों को खुद, सामूहिक रूप से देश का मालिक बनना होगा, इन दोनों के बीच में टक्कर है।

हिन्दोस्तान में और सारी दुनिया में जीवन की हालतें यह मांग कर रही हैं कि अधिकारों, लोकतंत्र और सामाजिक प्रगति की आधुनिक परिभाषाओं के आधार पर, समाज का नव–निर्माण किया जाए। आज वक्त की मांग है कि एक ऐसी व्यवस्था स्थापित की जाए, जो इस बात को मान्यता दे कि समाज में पैदा होने के नाते हर इंसान के कुछ अलंघनीय अधिकार होते हैं। समाज का, अपने सभी सदस्यों के प्रति यह दायित्व है कि उनके अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करे। आज की हालतें यह मांग कर रही हैं कि लोगों के हाथों में संप्रभुता दिलाकर लोकतंत्र का नव–निर्माण किया जाए और पूंजीवादी लालच को पूरा करने के बजाय मानवीय ज़रूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से अर्थव्यवस्था को नयी दिशा दिलाई जाए।

साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादी सरमायदार जब नव–निर्माण की बात करते हैं, तो उनका मकसद होता है जनमत के साथ दांवपेंच करना और उस सच्चाई को छिपाना कि वास्तव में वे पुरानी व्यवस्था को बरकरार रखने पर तुले हुए हैं। उन्हें इस बात से सख्त विरोध है कि अधिकारों की आधुनिक परिभाषा दी जाए और सर्वोच्च ताक़त उनके हाथों से निकल जाए। सामाजिक उत्पादन और विनिमय के मुख्य

साधनों पर अपनी मालिकी और नियंत्रण को त्यागने से उन्हें सख्त विरोध है।

सिर्फ मज़दूर वर्ग को ही पुरानी व्यवस्था को खत्म करने और नए समाज का निर्माण करने में रुचि है और सिर्फ मज़दूर वर्ग में ही ऐसा नया समाज बनाने की क्षमता है, जो अपने सभी सदस्यों के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएगा। हर देश में कम्युनिस्ट पार्टियों का सबसे अहम और अत्यावश्यक काम है उस नए समाज के सिद्धांत और नज़रिये से मज़दूर वर्ग को लैस करना।

सभी गतिविधियों से यही संकेत मिल रहा है कि हम दुनिया के स्तर पर घमासान टक्कर की दिशा में बढ़ रहे हैं। विश्व क्रांति की लहर के भाटे की वर्तमान अवधि के चलते, हम देख रहे हैं कि साम्राज्यवादी व्यवस्था के सारे अंतर्विरोध और तेज़ हो रहे हैं। इससे हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं? सही निष्कर्ष यही है कि दुनिया की साम्राज्यवादी व्यवस्था की जंजीर अपनी सबसे कमजोर कड़ी पर फिर से टूटने वाली है। विश्व क्रांति की लहर भाटे से ज्वार में बदलने वाली है।

वर्तमान हालत हिन्दोस्तान के कम्युनिस्ट आन्दोलन से यह मांग कर रही है कि मौजूदे राज्य और संसदीय लोकतंत्र के बारे में तथा शासक वर्ग और पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था के बारे में सभी प्रचलित भ्रमों से पूरी तरह नाता तोड़ दिया जाए। हमारे जीवन के अनुभव ने साबित कर दिया है कि पूंजीवाद को सुधारना या उसे "मानवीय चेहरा" दिलाना संभव नहीं है। अगर कम्युनिस्ट पार्टी भी वर्तमान राज्य का

संचालन कर रही हो, तो भी इस राज्य के वर्ग चरित्र को बदला नहीं जा सकता। हमारे अनुभव ने यह भी साबित कर दिया है कि गांवों से शहरों को घेरकर वर्तमान राज्य का तख्तापलट नहीं किया जा सकता।

वर्तमान खतरनाक स्थिति से बाहर निकलने का एक ही रास्ता है। हिन्दोस्तान को और नयी–नयी मुसीबतों से बचाने का एक ही रास्ता है। किसानों और सभी उत्पीड़ित तबकों के साथ मज़दूर वर्ग का गठबंधन बनाकर, कम्युनिस्टों को मज़दूर वर्ग को राज्य सत्ता पर कब्ज़ा करने में अगुवाई देनी होगी। सिर्फ वही नयी राज्य सत्ता उन क्रांतिकारी परिवर्तनों को कामयाब कर सकती है जिनकी हमारे समाज को इतनी सख्त ज़रूरत है। मज़दूर, किसान और दूसरे उत्पीड़ित लोग अपने अधिकारों पर हो रहे हमलों के खिलाफ़, सड़कों पर उतरकर संघर्ष कर रहे हैं। राज्य द्व ारा आयोजित सांप्रदायिक हिंसा और आतंक के खिलाफ़, उदारीकरण, निजीकरण और बड़ी–बड़ी कंपनियों द्वारा भूमि अधिग्रहण के खिलाफ़, जन संघर्ष तेज़ हो रहे हैं। क्रांति के ज़रिये, एक नए राज्य और व्यवस्था का निर्माण करने के नज़रिये से, इन सभी संघर्षों को आगे बढ़ाना होगा।

हिन्दोस्तान की क्रांति का चरित्र क्या है? इसका मूल विषय वस्तु क्या है? इस क्रांति से आर्थिक आधार में और राजनीतिक ऊपरी ढांचे में कौन–कौन से भौतिक परिवर्तन होंगे? ये कुछ अहम सवाल हैं जिन पर विस्तार करना इस समय बहुत ज़रूरी है।

हिन्दोस्तान की क्रांति

साथियों,

सिर्फ एक सर्व–व्यापक क्रांति ही हमारे समाज से सभी शोषक, परजीवी, दमनकारी और भ्रष्ट चीजों को मिटा सकती है। हमें एक ऐसी क्रांति की ज़रूरत है जो जाति पर आधारित अत्याचार, हिन्दोस्तान के अन्दर बसे राष्ट्रों, राष्ट्रीयताओं और लोगों पर अत्याचार, सांप्रदायिक हिंसा, अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न और महिलाओं के साथ भेदभाव व उन पर अत्याचार को खत्म कर देगी। हमें एक ऐसी क्रांति की ज़रूरत है जो हिन्दोस्तान को विश्व साम्राज्यवादी व्यवस्था के चंगुल से रिहा करेगी और आत्म–निर्भरता तथा दूसरे राष्ट्रों व लोगों के साथ साम्राज्यवाद–विरोधी एकता बनाने के मार्ग पर संचालित करेगी। हमें एक ऐसी क्रांति की ज़रूरत है जो पूंजीवाद का तख्ता पलट करेगी और समाजवाद के निर्माण का रास्ता खोलेगी, एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करेगी जिसमें एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग का शोषण नहीं होगा और जो वर्गहीन कम्युनिस्ट समाज की ओर आगे बढ़ेगी।

इज़ारेदार पूंजीवादी घरानों की अगुवाई में पूंजीपति वर्ग के शासन को खत्म करना अत्यावश्यक है। राजनीतिक सत्ता को हिन्दोस्तान की दौलत के उत्पादकों, मजदूरों और किसानों, के हाथ में लाना होगा। ऐसा करने से ही हिन्दोतान की दिशा बदली जा सकती है और समाज को संकट से बाहर निकाला जा सकता है।

वर्तमान राज्य, जो सरमायदारों के अधिनायकत्व का तंत्र है और उपनिवेशवाद की विरासत है, को खत्म करके, उसकी जगह पर एक सम्पूर्णतया नए राज्य की रचना करनी पड़ेगी, जो एक सम्पूर्णतया नए संविधान पर आधारित होगा। जबकि अधिकारों की वर्तमान परिभाषा और व्यवहार के अनुसार, राज्य तरह–तरह के बहाने देकर अधिकारों को छीन सकता है, नए संविधान को इससे पूरी तरह नाता तोड़ना पड़ेगा। नया संविधान मानव अधिकारों की आधुनिक परिभाषा पर आधारित होगा, जिसके अनुसार मानव होने के नाते हर व्यक्ति के मानव अधिकार होते हैं, और राज्य का फर्ज़ है यह सुनिश्चित करना कि इन अधिकारों की रक्षा की जाए और किसी भी बहाने इनका हनन न हो। मानव अधिकारों में शामिल हैं काम करने और सुनिश्चित रोज़गार पाने का अधिकार, खाद्य, आवास, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, बिजली और उन सभी मूल ज़रूरतों का अधिकार, जो सम्मानजनक मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं।

सभी मजदूरों, किसानों, महिलाओं और नौजवानों की ज़रूरतों को पूरा करना और उनके जीवन स्तर में लगातार उन्नति लाना, यह सामाजिक उत्पादन की प्रेरक शक्ति बनेगी। अर्थव्यवस्था और आर्थिक योजना व नीति की दिशा **पूंजी–केन्द्रित**, यानी पूंजीपतियों के मुनाफ़ों को अधिकतम करने की दिशा से बदलकर, **मानव–केन्द्रित** बन जायेगी। सामाजिक उत्पादन की पूरी प्रक्रिया का उद्देश्य मानव आबादी की बढ़ती भौतिक और सांस्कृतिक ज़रूरतों को ज्यादा से ज्यादा हद तक पूरा करना होगा। मानव श्रम

से उत्पन्न सामाजिक बेशी मूल्य का मानवीय और भौतिक उत्पादक ताक़तों में निवेश किया जायेगा, ताकि बिना किसी रुकावट या संकट के, क्रमशः बढ़ते हद तक, सामाजिक उत्पादन और पुनरुत्पादन सुनिश्चित हो[53]।

समाज के सभी सदस्यों की सम्मानजनक मानवीय हालतें सुनिश्चित करने के लिए, नया राज्य बैंकिंग, बीमा, विदेश व्यापार, घरेलू थोक और बड़े स्तर के खुदरा व्यापार का फौरन राष्ट्रीकरण और सामाजीकरण करेगा। वह एक आधुनिक सर्वव्यापक सार्वजनिक वितरण व्यवस्था स्थापित करेगा, जिसमें घरेलू उपभोग की सभी ज़रूरी वस्तुएं प्राप्त होंगी, और जो सभी फसलों की सरकारी खरीदी की व्यवस्था से जुड़ी हुयी होगी। वह कृषि के लिए पर्याप्त मात्रा में और सही समय पर लागत तथा स्थाई व लाभदायक दाम पर फसलों की समय पर खरीदी को सुनिश्चित करेगा। वह एक सर्वव्यापक योजना के अनुसार सामाजिक उत्पादन को आयोजित करेगा, जिसका मकसद होगा पूरी आबादी की भौतिक और सांस्कृतिक ज़रूरतों को पूरा करना। वह समाज द्वारा उत्पन्न बेशी मूल्य का एक हिस्सा प्राकृतिक पर्यावरण की देख–रेख के लिए आबंटित करेगा। अगर कोई निजी व्यक्ति या समूह उस सर्वव्यापक आर्थिक योजना का हनन करेगा या उसे हानि पहुंचाएगा, तो नया राज्य उसकी सम्पत्ति छीन लेगा और उसे सामाजिक संपत्ति में बदल देगा।

नया राज्य हथियार खरीदने और 'सार्वजनिक कर्ज़े' पर बैंकों को व्यवसायी दर पर ब्याज भुगतान करने के लिए, जनता के

संसाधनों के खर्च को रोकने का फौरन कदम उठाएगा। वह पर्याप्त मात्रा में और मुनासिब दाम पर शिक्षा, स्वास्थ्य और सभी दूसरी सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं की सप्लाई को सुनिश्चित करने के लिए सार्वजनिक खर्च को बढ़ावा देगा। वह नयी टैक्स प्रणाली लागू करेगा, जिसके अनुसार, निजी मुनाफ़ा, ब्याज और किराए की आमदनी पर टैक्स लगाया जाएगा, जबकि लोगों द्वारा खरीदी जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं पर लगाये गए अप्रत्यक्ष टैक्स को क्रमशः घटा दिया जाएगा और अंत में पूरी तरह मिटा दिया जायेगा।

भूमि के प्रयोग और मालिकी से संबंधित सभी उपनिवेशवादी कानूनों को हटाकर, उनकी जगह पर एक नया कानून लागू किया जायेगा, जो कृषि भूमि की मालिकी उस पर खेती करने वालों को देगा और निजी पक्षों के बीच, भूमि की बिक्री या खरीदारी पर पूरी तरह रोक लगा देगा। भूमि का प्रयोग एक सामाजिक योजना के अनुसार किया जाएगा, जिसमें कृषि, उद्योग, परिवहन, व्यापार, आवास स्थानों और अन्य सामाजिक ज़रूरतों पर ध्यान दिया जायेगा।

छोटी–छोटी जोतों पर काम करने वाले किसानों को प्रोत्साहित किया जायेगा कि वे स्वेच्छा से, अपनी छोटी जोतों को मिलाकर, सामूहिक फार्म बनाएं। राज्य इन सामूहिक फार्मों को तकनीकी और अन्य मदद देगा ताकि वे बड़े भूमि भागों पर बहुत उत्पादक आधुनिक कृषि उद्यम बन सकें।

नया संविधान, यह सुनिश्चित करेगा कि ज़मीर के अधिकार का कोई हनन न हो सके। वह समाज को "हिन्दू

बहुसंख्या" और तरह–तरह के धार्मिक अल्पसंख्यकों में बांटकर हिन्दोस्तानी समाज की सांप्रदायिक परिभाषा देने की उपनिवेशवादी विरासत से पूरी तरह नाता तोड़ देगा। वह किसी भी धर्म को मानने, किसी भी प्रकार की पूजा करने या किसी भगवान या धर्म या पूजा–पाठ को न मानने के किसी भी व्यक्ति के अधिकार का अनुमोदन और रक्षा करेगा। किसी भी बहाने इस अधिकार के हनन को रोकना राज्य का फर्ज़ होगा।

नया संविधान सभी नागरिकों को अभिव्यक्ति की आज़ादी देगा। नया संविधान हर व्यक्ति को यह अधिकार देगा कि वह समाज को प्रभावित करने वाली किसी भी समस्या पर अपना विचार दे और उसे हल करने का तरीका प्रस्तावित करे। बिना किसी अपवाद के, इस अधिकार की हिफ़ाज़त करना राज्य का फर्ज़ होगा।

जब–जब लोगों के किसी भी भाग के खिलाफ़ सांप्रदायिक हिंसा या किसी अन्य प्रकार का आतंक आयोजित किया जायेगा, तो नया राज्य फौरन सुनिश्चित करेगा कि सच साबित हो और हिंसा व आतंक को आयोजित करने वाले गुनहगारों को दोषी ठहराया जाए तथा उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाये। नया राज्य सभी फासीवादी कानूनों को फौरन रद्द कर देगा और राजकीय आतंकवाद के तंत्रों को खत्म कर देगा।

जो भी धर्म, जाति, लिंग, राष्ट्रीयता या नस्ल के आधार पर देश के किसी भी नागरिक के अधिकारों का हनन करता

है, उसे कड़ी से कड़ी सज़ा दिलाना राज्य का फर्ज़ होना चाहिए। राज्य को जातिवादी अत्याचारों के पीड़ितों की मदद के लिए सब–तरफा कदम लेने होंगे, ताकि वे ऐतिहासिक तौर पर उन पर होते रहे अन्यायों पर काबू पा सकें। राज्य को यह सुनिश्चित करना होगा कि हर बच्चे को समान और उच्च स्तर की स्कूली शिक्षा प्राप्त हो। उसे जाति प्रथा से उभरने वाले सभी पिछड़े और दमनकारी विचारों, जैसे कि 'पवित्र–अपवित्र', 'ऊंचा काम' और 'नीच काम' के खिलाफ़ तथा समाज में महिलाओं को निचले स्तर के दर्ज़े पर रखने वाले सभी विचारों और अभ्यासों के खिलाफ़ क्रांतिकारी अभियानों को अगुवाई देनी होगी।

नए संविधान में इस बात को मान्यता दी जायेगी कि हिन्दोस्तान के हर नागरिक को चुनने और चुने जाने और सार्वजनिक मामलों में भाग लेने का बराबर अधिकार है, क्योंकि वह एक आधुनिक, लोकतांत्रिक समाज का नागरिक है। संविधान में यह मान्यता दी जायेगी कि हिन्दोस्तानी संघ के हर घटक को अपना भविष्य तय करने का अधिकार है, क्योंकि वह एक ऐतिहासिक तौर पर विकसित राष्ट्र, राष्ट्रीता या जनसमुदाय है। नए संविधान में इन लोकतांत्रिक अधिकारों की अलंघनीयता की गारंटी दी जायेगी।

नए संविधान को यह मान्यता देनी होगी कि हिन्दोस्तानी समाज में तमाम राष्ट्र, राष्ट्रीयतायें और जनसमुदाय हैं, जिनमें से हरेक के अपने–अपने आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अधिकार हैं। इनमें राष्ट्रों का, हिन्दोस्तानी संघ

से अलग होने का अधिकार भी शामिल है। नए संविधान को यह गारंटी देनी होगी कि उन अधिकारों की रक्षा की जायेगी और किसी भी बहाने उनका हनन नहीं किया जायेगा। तमाम लोगों की अलग–अलग भाषाओं को मान्यता देनी होगी और सरकारी काम–काज को उन भाषाओं में करना होगा। अंग्रेजी भाषा की प्रमुख भूमिका को खत्म करना होगा।

नया संविधान लोगों के हाथों में संप्रभुता दिलाएगा। इसे सुनिश्चित करने के लिये, मतदान करने वालों के अधिकारों और कर्तव्यों तथा चुने जाने वालों के अधिकारों और कर्तव्यों की नयी परिभाषा दी जायेगी। हर निर्वाचन क्षेत्र में चुनी गयी पक्ष–निरपेक्ष समितियों के ज़रिये, लोग सभी फैसले लेने वाले निकायों पर नियंत्रण करेंगे।

लोगों को मजदूर, किसान, महिला, नौजवान, किसी खास इलाके के निवासी, इत्यादि बतौर संगठित होने का अधिकार होगा। चुनावों के लिए उम्मीदवारों का नामांकन करने का अधिकार सिर्फ राजनीतिक पार्टियों को ही नहीं बल्कि सभी जन संगठनों को होगा। चुनाव से पहले, हर निर्वाचन क्षेत्र में मतदाताओं को अधिकार होगा कि नामांकित उम्मीदवारों में से चुनकर, चयनित उम्मीदवारों की अंतिम सूची तैयार करें।

किसी भी राजनीतिक पार्टी को यह इज़ाज़त नहीं दी जायेगी कि वह फैसले लेने की ताक़त पर अपनी इज़ारेदारी बना कर रखे और अधिकतम लोगों को उससे वंचित रखे। कानून के अनुसार, हर राजनीतिक पार्टी को यह सुनिश्चित करना

पड़ेगा कि संप्रभुता लोगों के हाथों में ही रहे। मज़दूर वर्ग की हिरावल पार्टी को वह नज़रिया देना होगा और वह संगठित अगुवा ताक़त बनना होगा, जिसके ज़रिये लोग सत्ता में आ सकेंगे और खुद अपना शासन कर सकेंगे।

अपने चयनित और निर्वाचित प्रतिनिधियों को पूरी ताक़त सौंप देने के बजाय, लोगों को अपनी ताक़त का कुछ हिस्सा ही उन्हें सौंपना चाहिए। लोगों को अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों से काम का हिसाब मांगने और उन्हें वापस बुलाने के अधिकार को अपने हाथों में रखना चाहिए। लोगों को कानून और नीतियां प्रस्तावित करने का अधिकार होना चाहिए। लोग अपने निर्वाचन क्षेत्र की समितियों के ज़रिये इन अधिकारों को लागू कर सकेंगे। संविधान को फिर से लिखने के अधिकार समेत बाकी सभी अधिकार लोगों के हाथ में होने चाहिए।

जबकि वर्तमान संसद में बाजारू और बेतुकी बातें होती हैं, तो उसकी जगह पर, एक निर्वाचित, फैसले लेने वाला निकाय स्थापित करना होगा, जिसे यह भी सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी निभानी पड़ेगी कि लिए गए फैसलों को लागू किया जा रहा है। निर्वाचित फैसले लेने वाले निकायों में "सत्तापक्ष" और "विपक्ष" के बीच बंटवारा खत्म हो जायेगा। सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों को व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, मतदाताओं के प्रति जवाबदेह होना होगा।

सरकारी प्रशासन को उस विशेष अधिकार वाले तबके के हाथ से हटाना होगा, जो जनता के ऊपर खड़ा होकर

उनका तिरस्कार करता है। सभी सरकारी सेवकों को अपनी–अपनी योग्यताओं के अनुसार, मजदूरों के जैसे वेतन मिलने चाहिये, और उन्हें जनता के सामने अपने काम का हिसाब देना चाहिए। वर्तमान स्थाई सेना की जगह पर, एक जन सेना का गठन करना होगा, जो नए हिन्दोस्तानी संघ की हिफ़ाज़त करने पर वचनबद्ध होगा। वर्तमान अनिर्वाचित न्यायपालिका की जगह पर, एक निर्वाचित न्यायपालिका की स्थापना करनी होगी।

जनता द्वारा अपनाए गए आधुनिक, लोकतांत्रिक संविधान पर आधारित, नया स्वेच्छापूर्ण हिन्दोस्तानी संघ दक्षिण एशिया और सारी दुनिया में शांति और साम्राज्यवाद–विरोधी एकता का कारक होगा। सभी प्रकार की दादागिरी, साम्राज्यवादी हस्तक्षेप और जंग का डटकर विरोध करते हुए, नया हिन्दोस्तानी संघ अलग–अलग देशों के बीच संबंधों के जनवादीकरण के लिए, दूसरी साम्राज्यवाद–विरोधी ताक़तों के सहयोग के साथ संघर्ष करेगा। वह दक्षिण एशिया के सभी लोगों और सरकारों के बीच एकता और सहयोग बनाने के लिए सक्रियता से काम करेगा, ताकि इस इलाके में शांति बनी रहे और इस इलाके को सभी प्रकार के बाहरी हस्तक्षेप, साम्राज्यवादी साजिशों और नाजायज़ युद्धों से सुरक्षित रखा जा सके।

इसी को हम हिन्दोस्तान का नव–निर्माण कहते हैं। यह उपनिवेशवादी अतीत की विरासत को हमेशा के लिए खत्म करने और हिन्दोस्तानी समाज की नयी नींव डालने का कार्यक्रम है, जिसे अपनाकर हिन्दोस्तान सभ्यता के महामार्ग,

आधुनिक कम्युनिज़्म के मार्ग पर आगे बढ़ सकेगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य है, सामंती अवशेषों और उपनिवेशवादी गुलामी की विरासत को मिटा देना और अर्थव्यवस्था के समाजवादी परिवर्तन को शुरू करना, ताकि पूंजीवाद को दफना दिया जा सके और सबकी खुशहाली सुनिश्चित की जा सके।

जिस नए राज्य की स्थापना करनी होगी, वह अपने वर्ग चरित्र में श्रमजीवी अधिनायकत्व का उपकरण होगा, श्रमिकों, यानी समाज की भौतिक दौलत को पैदा करने वालों के राज का यंत्र होगा। वह राज्य सामाजिक और सामूहिक संपत्ति की हिफ़ाज़त करेगा और व्यक्तियों व समुदायों के आपसी हितों में तथा उनके हितों और समाज के आम हितों के बीच सामंजस्य लाएगा। वह राज्य सत्ता से हटाये गए शोषकों और बाहरी दुश्मनों द्वारा पुरानी शोषण की व्यवस्था को वापस लाने की हर कोशिश को, बिना कोई समझौता किये, कुचल देगा।

निजी पूंजीवादी संपत्ति को समाजवादी सार्वजनिक संपत्ति में तब्दील करने और व्यक्तिगत किसानों की संपत्ति को स्वेच्छा से सामूहिक मालिकी वाले फार्मों में तब्दील करने की प्रक्रिया तब तक जारी रहेगी जब तक सामाजिक उत्पादन में निजी संपत्ति पूरी तरह से मिट नहीं जायेगी। इस प्रकार से एक वर्ग द्वारा दूसरों का शोषण करने का आर्थिक आधार खत्म हो जायेगा। प्रतिस्पर्धी निजी पूंजीवादी हितों द्वारा संचालित अर्थव्यवस्था में निहित अस्त–व्यस्तता और संकट को इस प्रकार खत्म किया जायेगा। यह क्रांति तब

तक जारी रहेगी जब तक सभी वर्ग विभाजन खत्म नहीं हो जायेंगे और आधुनिक कम्युनिस्ट समाज की स्थापना नहीं हो जायेगी, जिसमें कार्यकारी असूल होगा 'हरेक से उसकी क्षमता के अनुसार, हरेक को उसकी ज़रूरत के अनुसार'।

साथियों,

ऐसी क्रांति हमारे देश के मजदूरों, किसानों और अधिकतम शोषित व दबे–कुचले लोगों के हित में होगी।

हिन्दोस्तान का नव–निर्माण उन सभी के हित में होगा जो वर्तमान शोषण की व्यवस्था और दमनकारी राज्य के शिकार हैं। इन सभी वर्गों और तबकों में से, श्रमजीवी वर्ग ही वह वर्ग है जो स्वाभाविकतः समाजवाद और कम्युनिज़्म की और स्वतः स्फूर्त आकर्षित होता है।

हिन्दोस्तान का श्रमजीवी वर्ग बहु–राष्ट्रीय, बहु–भाषी, अधिक से अधिक पढ़ा–लिखा और बहुत जवान वर्ग है। उसमें पूंजीवाद के खिलाफ़ संघर्ष को अंत तक ले जाने की रुचि भी है और क्षमता भी। श्रमजीवी वर्ग को क्रांति का प्रमुख और अगुवा वर्ग होना पड़ेगा।

हिन्दोस्तान के किसानों का, उपनिवेशवाद–विरोधी, सामंतवाद–विरोधी और साम्राज्यवाद–विरोधी संघर्षों में भाग लेने का लम्बा इतिहास है। उन्हें संगठित सामूहिक कार्यक्रम करने का अनुभव है और भूमि पर खेती करने वाले होने के नाते, उनमें अपने अधिकारों के बारे में बहुत मजबूत भावनाएं हैं। ग्रामीण

हिन्दोस्तान में और आदिवासियों में, सांझी जायदाद और सांझे संसाधनों की सामूहिक जिम्मेदारी से संबंधित रिश्ते और सोच बहुत प्रचलित हैं। इसीलिये, किसान और आदिवासी क्रांति के विश्वसनीय मित्र हैं।

अपने उद्देश्य को हासिल करने के लिए, श्रमजीवी वर्ग को एक सांझे उद्देश्य वाली एकजुट राजनीतिक ताक़त बन जाना होगा। श्रमजीवी वर्ग के अगुवा भाग को हिरावल पार्टी में संगठित होना होगा। श्रमजीवी वर्ग के व्यापक भाग को एक क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चे में संगठित होना होगा, जो देश के सभी पीड़ितों और मेहनतकशों के साथ नजदीकी से जुड़ा हुआ होगा। हिरावल कम्युनिस्ट पार्टी को मज़दूर वर्ग और सभी उत्पीड़ित लोगों को अगुवाई देनी होगी, ताकि वे अपने फौरी संघर्षों को राज्य सत्ता पर कब्ज़ा करने और नए हिन्दोस्तानी समाज की नींव डालने के नज़रिये के साथ आगे बढ़ायें।

हिरावल कम्युनिस्ट पार्टी को जनसमुदाय को संगठित करने और राज्य सत्ता पर कब्ज़ा करने के क़ाबिल बनाने के साथ–साथ, विचारों के क्षेत्र में लगातार चर्चा करते रहना होगा और पूरे जोश के साथ सैद्धांतिक काम करते रहना होगा। उसे कम्युनिज़्म के लक्ष्य के प्रति अपनी वचनबद्धता पर अडिग रहना होगा। उसे न सिर्फ मार्क्सवाद–लेनिनवाद की हिफ़ाज़त करनी होगी, बल्कि वर्ग संघर्ष में मार्क्सवाद–लेनिनवाद को लागू करने के अनुभव की समीक्षा करके, मार्क्सवाद–लेनिनवाद को और समृद्ध बनाना होगा। हिरावल कम्युनिस्ट पार्टी को हिन्दोस्तान की क्रांति के सिद्धांत

के विकास और विस्तार में योगदान देना होगा। हिन्दोस्तान की क्रांति का सिद्धांत वह सिद्धांत है जो हिन्दोस्तान की हालतों से उभर कर आता है और अपने देश में कम्युनिज़्म के विकास के लिए उपयुक्त है। हिन्दोस्तान की क्रांति के सिद्धांत को विकसित करने के लिए हिरावल कम्युनिस्ट पार्टी को हमारे पूर्वजों से विरासत में प्राप्त सोच–विचारों की सामग्री का ध्यान से मूल्यांकन करना होगा और इसके साथ–साथ, अंतर्राष्ट्रीय श्रमजीवी वर्ग के अनुभव तथा सबसे उन्नत समकालीन मार्क्सवादी–लेनिनवादी सोच–विचार से भी सीखना होगा।

हिरावल कम्युनिस्ट पार्टी को लोकतांत्रिक केन्द्रीयवाद के आधार पर संगठित होना होगा। लोकतांत्रिक केन्द्रीयवाद सामूहिक फैसले लेने और व्यक्तिगत जिम्मेदारी निभाने का असूल है, जिसमें सभी सदस्यों पर एक सामान अनुशासन लागू होता है।

ऐसी पार्टी की अगुवाई में, श्रमजीवी वर्ग को अपने स्वतंत्र कार्यक्रम के इर्द–गिर्द सभी शोषितों और उत्पीड़ितों को लामबंध करना होगा। श्रमजीवी वर्ग को शासक सरमायदारों और उनके राज्य के खिलाफ़, किसानों और दूसरे उत्पीड़ित तबकों के साथ संघर्षशील एकता के संबंध बनाने होंगे।

क्रांति की आत्मगत हालतें तैयार करने का मतलब है क्रांतिकारी ताक़तों की जागरुकता और संगठन के स्तर को ऊंचा उठाना। इसका मतलब है मज़दूर वर्ग और उसके मित्रों को राजनीतिक तौर पर सचेत करना। इसका मतलब

है साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादी सरमायदारों के उस झूठे प्रचार का खंडन करना कि बाज़ार–उन्मुख अर्थव्यवस्था, बहुपार्टीवादी प्रतिनिधित्ववादी लोकतंत्र और पूंजी–केन्द्रित 'शासन सुधार' कार्यक्रम का 'कोई विकल्प नहीं है'। इसका मतलब है वर्तमान व्यवस्था के अन्दर "विकल्प" तलाशने के सभी भ्रमों के खिलाफ़ अनवरत संघर्ष करना। इसका मतलब है मज़दूर वर्ग और लोगों को असली विकल्प, हिन्दोस्तान के नव–निर्माण के कार्यक्रम, से लैस करना।

ऐसे वैकल्पिक कार्यक्रम के इर्द–गिर्द क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चे का निर्माण करने का मतलब कुछ पार्टियों या जनसंगठनों का गठबंधन बनाने से ज्यादा, और भी बहुत कुछ है। लोगों को सत्ता में लाने के लिए, लोगों के अपने हाथों में एक तंत्र, एक संगठन बनाने की ज़रूरत है। हिरावल पार्टी को मजदूर, किसान, महिला और नौजवान जनसमुदाय को यह भरोसा दिलाना होगा कि वे वास्तव में सामूहिक फैसले लेने वाले और समाज के मालिक बन सकते हैं। हिरावल पार्टी को समाज के निचले स्तर पर, जहां लोग काम करते हैं और रहते हैं, वहां सुनियोजित तरीके से, लोगों को सत्ता में लाने के लिए समितियों का गठन करना पड़ेगा। ये समितियां लोगों के अधिकारों के लिए संयुक्त संघर्ष के तंत्र तथा नयी राजनीतिक सत्ता के भावी तंत्र होंगी।

हमारी पार्टी का काम

साथियों,

बड़े सरमायदारों के समाज–विरोधी हमले के खिलाफ़ संघर्ष करने के साथ–साथ, हिन्दोस्तान के नव–निर्माण के क्रांतिकारी कार्यक्रम के साथ मज़दूर वर्ग और लोगों को लैस करना, यह वर्तमान की अवधि में हमारी पार्टी के काम का केंद्र बिन्दु रहा है।

चौथे महाअधिवेशन में, मज़दूर वर्ग और कम्युनिस्ट आन्दोलन के अन्दर खतरनाक लाइनों का पर्दाफाश करने और उन्हें हराने के महत्व पर ज़ोर दिया गया था। यह बार–बार कहा गया था कि सोशल–डेमोक्रेसी के साथ समझौता करना ही मज़दूर वर्ग और उसकी हिरावल पार्टी की एकता के लिए मुख्य खतरा है। यह दोहराया गया था कि कम्युनिस्टों को आंदोलन के अन्दर प्रचलित दोनों प्रमुख खतरनाक ध ाराओं को ठुकराना होगा – "समाजवाद के लिए संसदीय रास्ता" और "एक–एक इलाके में सत्ता पर कब्ज़ा करने" व "गांवों से शहरों को घेरने" की उम्मीद के साथ व्यक्तिगत आतंकवादी हरकतों पर निर्भर होना।

बढ़ते सांप्रदायिक और फासीवादी आतंक का मुकाबला करने के साथ–साथ, हमारी पार्टी ने हमेशा बड़े सरमायदारों और उनके राज्य को अपने संघर्ष का निशाना बनाया है। हमने "भाजपा के फासीवाद" का विरोध करने के नाम पर कांग्रेस पार्टी के साथ गठबंधन बनाने की हिमायत करने की गलती और विनाशकारी नतीजों का बार–बार खुलासा किया है। ऐसी धारणा वास्तविकता को तोड़–मरोड़ कर पेश करती है। राजकीय आतंकवाद, सांप्रदायिक हिंसा और सभी प्रकार के विरोध को अपराधी करार दिया जाना – इस प्रकार

के बढ़ते फासीवाद के लिए बड़े सरमायदारों और उनका साम्राज्यवादी कार्यक्रम जिम्मेदार है। भाजपा बड़े सरमायदारों की प्रमुख पार्टियों में से एक है, जबकि कांग्रेस पार्टी दूसरी है। इन दोनों पार्टियों ने अपने अभ्यास से दिखा दिया है कि वे मजदूरों और किसानों को आपस में बांटकर उन पर राज करने के लिए बड़े सरमायदारों के हथकंडे हैं। वे दोनों सांप्रदायिक राज्य के हथकंडे हैं और एक ही वर्ग के हितों की सेवा करती हैं। कुछ और पार्टियां भी हैं जो आने वाले दिनों में इज़ारेदार सरमायदारों की पसंदीदा पार्टी बनने के लिए आपस में होड़ लगा रही हैं।

हमने मज़दूर वर्ग के सभी कार्यकर्ताओं और कम्युनिस्ट आंदोलन की सभी पार्टियों को हर अवसर पर बार–बार यह समझाया है कि जन–विरोध के अन्दर जो भी विभिन्न धाराएं हैं, वे सब एक संघर्ष के ही हिस्से हैं। उदारीकरण और निजीकरण के कार्यक्रम का विरोध, मजदूरों और किसानों के अधिकारों की हिफ़ाज़त में संघर्ष, सांप्रदायिकता और राजकीय आतंकवाद के खिलाफ़ संघर्ष, ये सब एक संघर्ष के हिस्से हैं। एक तरफ श्रमजीवी वर्ग की अगुवाई में शोषित बहुसंख्या और दूसरी तरफ इज़ारेदार पूंजीवादी घरानों की अगुवाई में शोषक अल्पसंख्या, इन दोनों के बीच में संघर्ष है। कांग्रेस पार्टी और भाजपा दोनों ही शोषक अल्पसंख्या की सेवा करती हैं।

वर्तमान राज्य की सांप्रदायिक बुनियाद का पर्दाफाश करने के लिए हमारी पार्टी ने एक सुनियोजित प्रचार और शिक्षा अभियान चलाया है। 1858 से आज तक हिन्दोस्तानी राज्य

के उद्‌गम और विकास को स्पष्ट रूप से समझाते हुए, हमने यह साबित कर दिया है कि लोगों के अलग–अलग ध ार्मिक विचार कभी भी उनके आपसी झगड़ों के कारण नहीं रहे हैं। हमने यह स्थापित कर दिया है कि समस्या लोगों के अलग–अलग विचार नहीं बल्कि राज्य की सांप्रदायिक बुनियाद है। हमारे देश में सांप्रदायिक हिंसा की जड़ बर्तानवी उपनिवेशवादियों द्वारा सुनियोजित तरीके से लागू की गयी बांटो और राज करो की रणनीति में है। 1947 में राज्य सत्ता की सांप्रदायिक बुनियाद को बरकरार रखा गया, और यही आज हिन्दोस्तान में सांप्रदायिकता और सांप्रदायिक हिंसा की निरंतरता का मूल कारण है।

जब यह खतरनाक भ्रम फैलाया जाता है कि वर्तमान राज्य की "धर्मनिरपेक्ष नींव" है जिसे हमें तथाकथित तौर पर "सांप्रदायिक ताक़तों" से बचाना होगा, तो हमारी पार्टी के इस काम की वजह से, पार्टी के सभी सदस्य और समर्थक उस भ्रम का खंडन करने के लिये लैस हो गये हैं। मज़दूर वर्ग को राजनीतिक चेतना दिलाने और नौजवानों व छात्रों को राज्य के चरित्र के बारे में शिक्षा दिलाने में पार्टी के काम का अहम योगदान रहा है। हिन्दोस्तान की क्रांति के सिद्ध ांत का विस्तार करने में इसका योगदान रहा है।

हमारी पार्टी ने लगातार यह स्पष्ट किया है कि "राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय अखंडता" की रक्षा करने का नारा राष्ट्रीय दमन, मानव अधिकारों के हनन और बढ़ते राजकीय आतंकवाद को जायज़ ठहराने वाले एक प्रतिक्रियावादी नारे के अलावा कुछ और नहीं है। हमने बहादुरी के साथ इस

सच्चाई का अनुमोदन किया है और इसकी हिफ़ाज़त की है कि हिन्दोस्तानी समाज का बहुराष्ट्रीय चरित्र है, अतः हिन्दोस्तानी संघ के प्रत्येक घटक के राष्ट्रीय अधिकारों का आदर करके ही हिन्दोस्तानी लोगों की एकता को मजबूत किया जा सकता है। हमने यह स्पष्ट किया है कि हिन्दोस्तानी संघ की सरकारी नीति, जिसके अनुसार देश के अंदर चल रहे राष्ट्रीय आंदोलनों को "राष्ट्र–विरोधी" और "कानून व व्यवस्था की समस्या" घोषित करके उन्हें क्रूरता से दबाया जाता है, यही हिन्दोस्तानी लोगों की एकता को नष्ट कर रही है। यही हिन्दोस्तान को टुकड़े–टुकड़े करने के साम्राज्यवादी दांवपेंच के खतरे को बढ़ा रही है।

हमारी पार्टी ने ज़मीर के अधिकार की डटकर हिफ़ाज़त की है। हमने ज़मीर के अधिकार को एक अलंघनीय मानव अधिकार माना है, जिसकी रक्षा करना राज्य का फर्ज़ है और जिसके हनन का कोई औचित्य नहीं है। "एक पर हमला सब पर हमला!", इस नारे के आधार पर हम राजकीय आतंकवाद के सभी पीड़ितों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहे हैं। किसी के ज़मीर के अधिकार के हनन के किसी विचारधारात्मक औचित्य को हमने मानने से इंकार किया है। इससे हमें हर प्रकार के समुदायवाद का विरोध करने और राज्य के खिलाफ़ तथा अलंघनीय मानव अधिकारों व लोकतांत्रिक अधिकारों की हिफ़ाज़त में, अधिक से अधिक व्यापक राजनीतिक एकता बनाने के लिए काम करने की ताक़त मिली है।

2013 में दुनियाभर में कम्युनिस्ट और क्रांतिकारी हिन्दोस्तानियों ने हिन्दुस्तान ग़दर पार्टी के सौ साल पूरे होने के अवसर को मनाया। ऐतिहासिक स्रोतों का अध्ययन और विश्लेषण करके, हमारी पार्टी इस नतीजे पर पहुंची कि सभी हिन्दोस्तानी कम्युनिस्टों के लिये यह आवश्यक है कि वे हिन्दुस्तान ग़दर पार्टी की लाइन और कार्यक्रम को पूरी तरह समझें तथा उसका समर्थन करें। इसी लाइन और कार्यक्रम को हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन (जिसने बाद में खुद को हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन का नाम दिया था) ने और विकसित किया था।

हिंदुस्तान ग़दर पार्टी और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन ने बहुत स्पष्ट रूप से और बिना कोई समझौता किये, यह ऐलान किया था कि उनका लक्ष्य उपनिवेशवादी अत्याचारियों और लुटेरों द्वारा बनाये गये राज्य को जड़ से उखाड़ फेंकना ही था। उसकी जगह पर हिन्दोस्तान की विविध जनता के अधिकारों की रक्षा करने वाले एक नये राज्य की स्थापना करने के लक्ष्य के इर्द–गिर्द उन्होंने लोगों को लामबंध किया। 1947 में बड़े पूंजीपतियों और बड़े जमींदारों ने उनके लक्ष्य के साथ विश्वासघात किया था। उपनिवेशवाद–विरोधी संघर्ष के इस दशकों से चले आ रहे अपूर्ण जजबात को पूरा करने के लिये, आज कम्युनिस्टों को सभी मेहनतकश व उत्पीड़ित जनसमुदाय को अगुवाई देनी होगी। हिन्दोस्तान में बसे सभी लोगों के अधिकारों की हिफ़ाज़त करने वाले नए हिन्दोस्तानी राज्य की स्थापना ही वह लक्ष्य है जिसे आज पूरा करना होगा।

साथियों,

चौथे महाअधिवेशन के ठीक बाद, पार्टी की केन्द्रीय समिति ने लोकतांत्रिक केन्द्रीयवाद और सामूहिक फैसले लेने व व्यक्तिगत जिम्मेदारी निभाने के उसके असूल की हिफ़ाज़त में, पार्टी के अन्दर अनवरत संघर्ष चलाया।

लोकतांत्रिक केन्द्रीयवाद सिर्फ कुछ नियमों का पालन करने का मामला नहीं है। यह सरमायदारों पर जीत हासिल करने के लिए श्रमजीवी वर्ग के हाथों में एक अपराजेय हथियार है। जब कम्युनिस्ट फैसले लेने में हिस्सा लेकर, उन सामूहिक फैसलों को लागू करने के लिए एकजुट हो जाते हैं, तो हम एक दुर्जेय राजनीतिक ताक़त बन जाते हैं। सभी कामरेड एक आवाज़ में बोलते हैं और एक मिली–जुली ताक़त की तरह काम करते हैं।

सरमायदार कहते हैं कि लोकतांत्रिक केन्द्रीयवाद व्यक्ति के अधिकारों और पहल शक्ति को दबाता है। पर वास्तव में, लोकतांत्रिक केन्द्रीयवाद यह सुनिश्चित करता है कि सामूहिक फैसलों को लेने में अधिक से अधिक व्यक्तिगत पहल हो तथा उन फैसलों को लागू करने में अधिक से अधिक मिली–जुली ताक़त हो।

हमने पार्टी के कामरेडों के बीच, छोटी–छोटी बातों पर आपसी स्पर्धा के खिलाफ़ संघर्ष किया है। हमने सांझे लक्ष्य को हासिल करने के लिए सहयोग को प्राथमिकता दी है।

लिए गए फैसलों को लागू करने के काम को पेशेवर तरीके से करने के लिए हमने संघर्ष किया है।

चौथे महाअधिवेशन में मज़दूर वर्ग के बीच, खास तौर पर बड़े उद्योगों और आधुनिक सेवाओं के प्रमुख क्षेत्रों के मज़दूरों के बीच पार्टी के बुनियादी संगठनों को बनाने और मजबूत करने की ज़रूरत पर जोर दिया गया था। बीते 6 वर्षों में हमने पार्टी के अखबार को मजबूत करने के काम को प्राथमिकता दी है, यह मानते हुए कि पार्टी का अखबार वह पाइट है जिसके सहारे हिरावल पार्टी और उसके बुनियादी संगठनों की इमारत खड़ी की जाती है और मजबूत की जाती है।

पार्टी के अखबार की गुणवत्ता में उन्नति लाई गयी है तथा उसके वितरण को और विस्तृत किया गया है। केन्द्रीय समिति ने सुनिश्चित किया है कि उसके द्वारा जारी किये गए राजनीतिक बयानों और मज़दूर वर्ग व लोगों के लिए आह्वानों को नियमित तौर पर प्रकाशित किया जाए। इन बयानों और आह्वानों से पार्टी के पूरे राजनीतिक काम को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।

इलाका समितियों ने कई प्रमुख क्षेत्रों – रेलवे, एयरलाइन, सड़क परिवहन, स्कूल और कालेज शिक्षकों, अस्पतालों, बैंकिंग, ऑटोमोबाइल और आई.टी. उद्योगों में मजदूरों के बीच नियमित तौर पर राजनीतिक चर्चा और पार्टी के अखबार की बिक्री का काम विकसित किया है। इन क्षेत्रों के मजदूरों के संघर्षों पर पार्टी ने अधिक से अधिक ध्यान दिया

है। मज़दूर वर्ग की तत्कालीन समस्याओं के बारे में यूनियन कार्यकर्ताओं के साथ साक्षात्कारों को प्रकाशित किया गया है। बड़े उद्योगों और सेवाओं के मजदूरों के बीच पार्टी के बुनियादी संगठनों को बनाने और मजबूत करने के काम को आगे बढ़ाने के लिए हमने अच्छी हालतें तैयार की हैं।

पार्टी के अख़बार और दूसरे प्रकाशनों के ज़रिये, हमने श्रमजीवी वर्ग के क्रांतिकारी उद्देश्य और कार्यक्रम की हिफ़ाज़त में लगातार विचारधारात्मक संघर्ष किया है। हमने सरमायदारों के निरंतर झूठे और भटकाववादी प्रचार का मुकाबला किया है।

हाल के वर्षों में, एक बहुत बड़ी भटकाववादी हरकत देखने में आयी है। यह है "भ्रष्टाचार के विरोध" के झंडे तले नए नेताओं और नयी पार्टियों को बढ़ावा दिया जाना। यह भ्रम फैलाया जा रहा है कि इज़ारेदार पूंजीपतियों के प्रभुत्व में वर्तमान राज्य और पूंजीवादी व्यवस्था को साफ करके, तथाकथित भ्रष्टाचार मुक्त बनाया जा सकता है। भ्रष्टाचार के खिलाफ़ तथाकथित योद्धाओं द्वारा फैलाये गए भ्रमों का खंडन करने के लिए, हमारी पार्टी ने भ्रष्टाचार, पूंजीवाद और राज्य के बीच संबंध का गंभीर और वैज्ञानिक विश्लेषण किया है।

तथ्यों से स्पष्ट होने वाली बातों के विश्लेषण के आधार पर, हम इस नतीजे पर पहुंचे कि भ्रष्टाचार की समस्या उतनी ही पुरानी है जितना कि वर्गों में बंटा हुआ समाज है। पूंजीवाद की इज़ारेदारी के वर्तमान पड़ाव पर, भ्रष्टाचार बेहद बढ़ गया

है। अलग–अलग देशों में भ्रष्टाचार के अलग–अलग रूपों का विश्लेषण करके, हम इस नतीजे पर पहुंचे कि भ्रष्टाचार हिन्दोस्तान में बहुत फैला हुआ है और उपनिवेशवाद की विरासत के कारण, भ्रष्टाचार राज्य के निम्नतम स्तर तक फैला हुआ है। हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए मेहनतकश जनसमुदाय को सत्ता में लाना अति आवश्यक है, ताकि पूंजीवाद का तख़्ता पलट किया जाए और वर्तमान राज्य समेत, पूरी उपनिवेशवादी विरासत को खत्म किया जाए।

फैक्टरियों और काम की जगहों में, औद्योगिक बस्तियों और शहरों में मज़दूर एकता समितियां बनाने में हमारी पार्टी के कामरेडों ने सक्रिय और अगुवा भूमिका निभायी है। इन समितियों में हमने पार्टी या ट्रेड यूनियन संबंधों की परवाह किये बिना, सभी कम्युनिस्टों और ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम किया है। ये समितियां वर्ग संघर्ष के तंत्र बतौर उभर कर आयी हैं, जिनमें व्यापक मज़दूर जनसमुदाय पूंजीपतियों के हमलों के खिलाफ़ एकजुट हो रहा है। बड़े सरमायदारों और उनके नियंत्रण में राज्य के हर कदम का लगातार पर्दाफाश करते हुए और आतंकवाद, भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी व दूसरी समस्याओं के स्रोत के बारे में सरकार के झूठे प्रचार का खंडन करते हुए, हमने मज़दूर वर्ग की राजनीतिक एकता में योगदान दिया है।

मज़दूर वर्ग आन्दोलन पर सरमायदारों के सुधारवादी विचारों और संसदीय भ्रमों का प्रभाव क्रांति के रास्ते में एक मुख्य रुकावट है। इस रुकावट को विचारधारात्मक

और विवादात्मक संघर्ष के ज़रिये दूर किया जा सकता है। हमने इस या उस समुदाय से पक्षपात किये बिना, इस संघर्ष को लगातार किया है। कम्युनिस्ट आंदोलन के अंदर कुछ तत्वों की प्रवृत्ति है साइड में खड़े रहना और यह आलोचना करते रहना कि व्यापक और बढ़ता हुआ मज़दूर वर्ग आंदोलन कितना सुधारवादी है। हमने उस प्रवृत्ति के खिलाफ़ संघर्ष किया है। मज़दूर वर्ग के वर्तमान नेतृत्व की कमियों को इस बात का औचित्य नहीं बनाया जा सकता है कि कम्युनिस्ट वर्ग संघर्ष से अलग रहें और साइड में खड़े उसकी आलोचना करते रहें।

किसानों और खेत मज़दूरों समेत, भूमि जोतने वालों के अधिकारों की हिफ़ाज़त में संघर्ष करने के दौरान, हमने कई ग्रामीण जिलों में मजदूर–किसान समितियों के निर्माण के काम में योगदान दिया है। इन समितियों में हम दूसरी पार्टियों के कम्युनिस्टों और किसान नेताओं के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। अपने अधिकारों के लिये सभी मेहनतकश लोगों की राजनीतिक एकता की हिफ़ाज़त करने के साथ–साथ, हमने पूंजीवाद और वर्तमान राज्य की तथाकथित किसान–परस्त नीतियों के बारे में फैलाये गए सभी भ्रमों के खिलाफ़ लगातार संघर्ष किया है। हमने किसानों को लगातार यह समझाया है कि उनकी मुक्ति का रास्ता मजदूर–किसान गठबंधन बनाने में और नव–निर्माण के क्रांतिकारी कार्यक्रम को अपनाने में है।

मेहनतकशों के काम करने और रहने के इलाकों में हमने लोक राज समितियों को बनाने और मजबूत करने पर लगातार काम किया है। कई इलाकों में जन समितियां बनी

हैं। ये समितियां लोगों को एकजुट कर रही हैं तथा लोगों को सत्ता में लाने के नज़रिये और लक्ष्य के साथ, बुनियादी अधिकारों के लिये जन आंदोलनों को अगुवाई दे रही हैं।

जबकि मौजूदा राजनीतिक प्रक्रिया का उद्देश्य है, समाज पर पूंजीपति वर्ग की हुकुमशाही को थोपना, इससे यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि कम्युनिस्टों को कभी भी चुनाव अभियान में भाग नहीं लेना चाहिये। कम्युनिस्टों का मुख्य और लगातार काम है मज़दूरों, किसानों, महिलाओं और नौजवानों की राजनीतिक चेतना बढ़ाना, उन्हें सरमायदारों के ख़तरनाक एजेंडा के बारे में जागरुक करना और उन्हें मज़दूर वर्ग के वैकल्पिक एजेंडा के इर्द–गिर्द एकजुट करना। इस काम में कामयाबी नहीं हासिल होगी अगर कम्युनिस्ट चुनाव क्षेत्र से बिल्कुल अलग रहेंगे।

हमने चुनावों को सरमायदारों के खिलाफ़ वर्ग संघर्ष के एक क्षेत्र बतौर इस्तेमाल किया है। हमने चुनाव अभियानों में भाग लिया है, वर्तमान व्यवस्था का पर्दाफाश करने के लिये और यह स्पष्ट करने के लिये कि वर्तमान व्यवस्था एक शोषक अल्पसंख्यक वर्ग का अधिनायकत्व है। हमने यह तर्क पेश किया है कि लोगों के हाथ में फैसला लेने का अधिकार होना अत्यावश्यक है। हमने इस एजेंडा में रुचि रखने वाले अन्य बहुत सारे संगठनों के साथ राजनीतिक एकता बनाने का प्रयास किया है।

जब हम चुनाव अभियान में भाग लेते हैं तो हमारी पार्टी लोगों को साफ–साफ यह कहती है कि हमारा राजनीतिक

उद्देश्य सरमायदारी लोकतंत्र के मौजूदा राज्य का प्रबंधन करना नहीं है। हमारा उद्देश्य इसकी जगह पर श्रमजीवी वर्ग के लोकतंत्र का एक नया राज्य स्थापित करना है। वह वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था और प्रक्रिया से ज्यादा उन्नत राजनीतिक व्यवस्था और प्रक्रिया होगी, जो यह सुनिश्चित करेगी कि लोग ही सर्वोच्च फैसले लेने वाले होंगे। वह सुनिश्चित करेगी कि कार्यकारिणी निर्वाचित विधायिकी के अधीन होगी तथा विधायिकी मतदाताओं के अधीन होगी।

ऐतिहासिक अनुभव हमें यह दिखाता है कि कोई भी कम्युनिस्ट पार्टी, जब मौजूदा राजनीतिक प्रक्रिया के साथ घुल–मिल जाती है और इसकी दूसरी पार्टियों के साथ, सरकार चलाने के लिये स्पर्धा करने लग जाती है, तो वह मज़दूर वर्ग के हिरावल होने के अपने वर्ग चरित्र को खोने लगती है। जो पार्टियां मौजूदा राज्य के अंदर सरकार चलाने में भाग लेती हैं वे अनिवार्यतः इस मौजूदा व्यवस्था के अंदर ही अंदर समाधान ढूंढने के भ्रम को फैलाती हैं। इस तरह वे मज़दूर वर्ग और लोगों को राजनीति से दूर रखती हैं, जैसे कि पूंजीवादी पार्टियां करती हैं।

हमारी पार्टी ने "समाजवाद के लिये संसदीय पथ" तथा व्यक्तिगत आतंकवाद, इन दोनों का लगातार पर्दाफाश और विरोध किया है क्योंकि ये दोनों रास्ते मज़दूर वर्ग और लोगों को राजनीति से दूर रखते हैं।

सारांश में, हम पूरे भरोसे के साथ यह कह सकते हैं कि हमारी पार्टी मुख्य तौर पर, शासक पूंजीपति वर्ग और उसके सभी संस्थानों की भटकाववादी हरकतों से बचकर, चौथे महाअधिवेशन द्वारा निर्धारित कार्यों पर ध्यान देने और उन्हें पूरा करने में कामयाब रही है।

काम की योजना

साथियों,

आज देश में एक हेकड़बाज शासक वर्ग हमारे ऊपर बड़े अमानवीय तरीके से हमला कर रहा है। बड़े सरमायदारों ने भाजपा को मज़दूरों और किसानों के रोज़गारों और अधिकारों पर हमलों को बढ़ाने, सांप्रदायिक बंटवारों को और तीखा करने तथा सभी प्रकार के विरोध को राष्ट्र–विरोधी करार कर उन्हें अपराधी ठहराने की जिम्मेदारी सौंपी है। बड़े सरमायदार नरेन्द्र मोदी की बाज़ारू बातें करने और लोगों के मन बहलाने वाले भाषण देने की योग्यता का इस्तेमाल करके, यह भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं कि तेज़ गति से पूंजीवादी संवर्धन और उदारीकरण व निजीकरण के ज़रिये भूमंडलीकरण से सभी को खुशहाली मिलेगी, कि हमारी अर्थव्यवस्था का सैन्यीकरण करने के लिए अमरीकी साम्राज्यवाद के साथ मिलकर काम करने से हिन्दोस्तान एक बहुत बड़ी शक्ति बन जायेगी।

वर्तमान परिस्थिति हम कम्युनिस्टों से यह मांग कर रही है कि हम बड़े सरमायदारों के कार्यक्रम के खिलाफ़ मज़दूर

वर्ग, किसानों और दूसरे उत्पीड़ित तबकों के एकजुट जन–विरोध को मजबूत करने के लिये उन्हें संगठित करें। अपने अधिकारों पर सब तरफा पूंजीवादी हमलों का सामना करते हुए, मजदूरों, किसानों और दूसरे तबकों द्वारा अपनाये गए संयुक्त संघर्ष के नए संगठनात्मक तौर–तरीकों को विकसित करने तथा उनका पोषण करने पर हमें बहुत ध्यान देना होगा। हमें यह सुनिश्चित करने के लिये काम करना होगा कि एक नई व्यवस्था और राज्य की रचना करने के नज़रिये से संघर्ष को आगे बढ़ाया जाये। भाजपा की जगह पर कांग्रेस पार्टी या किसी अन्य तथाकथित धर्मनिरपेक्ष मोर्चे को सत्ता पर बैठाने के कार्यक्रम के अनुसार काम करने वालों द्वारा हमारे संघर्ष को गुमराह करने की सभी कोशिशों का हमें विरोध करना होगा और उन्हें हराना होगा।

हमारी पार्टी को हिन्दोस्तानी क्रांति के सिद्धांत को विकसित करने के निरंतर काम को और मजबूत करते रहना होगा, ताकि यह सिद्धांत इस समय हिन्दोस्तानी कम्युनिस्टों के क्रांतिकारी अभ्यास को मार्गदर्शन दे सके। हमें कम्युनिस्ट आन्दोलन के अन्दर सरमायदारों और उनसे समझौता करने वालों द्वारा फैलाये गए सभी भ्रमों के खिलाफ़ विचारध ाारात्मक और विवादात्मक संघर्ष करते रहना होगा। वर्तमान राज्य की सांप्रदायिक बुनियाद और इज़ारेदार घरानों की अगुवाई में पूंजीपति वर्ग के खतरनाक साम्राज्यवादी इरादों की आलोचना और पर्दाफाश को हमें और मजबूत व तीखा करना होगा। राज्य को पुनर्गठित करने तथा अर्थव्यवस्था और विदेश नीति को नयी दिशा दिलाने की सख्त ज़रूरत पर जोर देते रहना होगा।

पार्टी के अखबार को मजबूत करना और फैक्टरियों, काम की जगहों, शिक्षा संस्थानों और उन सभी स्थानों जहां लोग संघर्ष कर रहे हैं, में पार्टी के बुनियादी संगठनों को बनाना और मजबूत करना तथा इसके लिये पार्टी के अखबार को पाइट बतौर इस्तेमाल करना – यही इस काम में सफलता की कुंजी है।

हमें पार्टी के अख़बार के स्वरूप तथा मूल तत्व, दोनों में उन्नति लाने के लिए, उसके काम को और अधिक पेशेवर तरीके से करना होगा। उसके उत्पादन और वितरण में पार्टी के सभी सदस्यों की भागीदारी को बढ़ाने के लिये संगठनात्मक कदम लेना होगा। पार्टी के अख़बार के पाठकों की संख्या को बढ़ाने के लिए, हमें ऊंचे लक्ष्य तय करने होंगे और उन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए नए–नए तरीके निकालने पड़ेंगे। हमें मज़दूर वर्ग और नौजवान छात्रों समेत उसके सभी मित्रों को लक्ष्य बनाकर, नाना प्रकार के तरीकों और माध्यमों से कम्युनिस्ट प्रचार का विस्तार करने के कदम लेने होंगे। नौजवान कम्युनिस्ट योद्धाओं की संख्या में वृद्धि हमारी पार्टी की एक विशेषता रही है और इसे जारी रखना होगा।

बड़े उद्योगों और सेवाओं में काम करने वाले मज़दूरों के बीच, पार्टी के बुनियादी संगठनों को बनाने में हमने कुछ शुरुआती सफलताएं प्राप्त की हैं। हमें इस काम को निरंतर आगे बढ़ाना होगा। पार्टी के बुनियादी संगठनों को मज़दूर एकता समितियों, मज़दूर–किसान समितियों तथा लोक राज समितियों को अगुवाई देनी होगी।

मज़दूर वर्ग के संयुक्त क्रांतिकारी विरोध का गठन करने के लिये, मज़दूरों की एकता समितियों का निर्माण करना तथा उन्हें मजबूत करना एक निर्णायक पहलू है। हमें उदारीकरण और निजीकरण के कार्यक्रम के खिलाफ़ मज़दूरों के बढ़ते एकजुट संघर्ष में सक्रियता से भाग लेते हुये, मज़दूर वर्ग के कार्यक्रम को प्रभावित करने की कोशिशों को जारी रखना होगा। हमें बार–बार, धैर्य से यह समझाते रहना पड़ेगा कि देश के सभी श्रमिकों के साथ गठबंधन बनाकर, मज़दूर वर्ग के लिये राज्य सत्ता पर कब्ज़ा करना अति आवश्यक है। मज़दूर वर्ग के हितों को बढ़ावा देने के साधन बतौर संसदीय लोकतंत्र के बारे में फैलाये गये सभी भ्रमों के खिलाफ़, कांग्रेस पार्टी के "कम बुरी" होने और वर्तमान राज्य की "धर्मनिरपेक्ष" बुनियादों के बारे में सभी भ्रमों के खिलाफ़ कठोर विचारधारात्मक संघर्ष करते रहना होगा।

ग्रामीण इलाकों में मजदूर–किसान समितियों का गठन करना और उन्हें मजबूत करना इस समय पार्टी के काम का एक अहम् भाग है। हमें किसानों को यह समझाते रहना होगा कि उनका दुश्मन बड़े सरमायदार और वर्तमान हिन्दोस्तानी राज्य ही है, कि इज़ारेदार पूंजीपतियों के वर्चस्व में पूंजीवादी स्पर्धा के चलते, अधिकतम किसानों को तबाही का सामना करना पड़ेगा, कि उनकी मुक्ति का रास्ता समाजवादी सामूहिकीकरण के रास्ते पर चलकर, मजदूर–किसान गठबंधन को बनाने व मजबूत करने और हिन्दोस्तान के नव–निर्माण के लिए संघर्ष करने में है।

रिहायशी इलाकों, काम के स्थानों और कालेज परिसरों में, शहरों और ग्रामीण जिलों में, लोगों को सत्ता में लाने वाली समितियों का निर्माण करना और उन्हें मजबूत करना, मेहनतकश जनसमुदाय और छात्रों व नौजवानों को राजनीतिक जागरुकता दिलाने के लिये निर्णायक है। ऐसी समितियां व्यापक जनसमुदाय को अपने अधिकारों और जायज़ दावों को लेकर संघर्ष करने के लिये संगठित करती हैं तथा उन्हें सामूहिक तौर पर फैसले लेने में प्रशिक्षण देती हैं। ऐसी समितियां मज़दूर वर्ग को व्यापक क्रांतिकारी मोर्चा बनाने का प्रशिक्षण देती हैं। ऐसी समितियां राज्य सत्ता पर कब्ज़ा करने के सांझे संघर्ष को मजबूत करने के हित में, क्रांतिकारी मोर्चे के अंदर शामिल विभिन्न वर्गों और तबकों के हितों के बीच सामंजस्य लाने का काम करती हैं।

व्यापक राजनीतिक एकता बनाने के इन तीनों मोर्चों – मज़दूर वर्ग की एकता, मज़दूरों और किसानों की एकता तथा राज्य सत्ता पर कब्ज़ा करने के लिए व्यापक जनसमुदाय की एकता, इन सबका, कम्युनिस्टों की अगुवाई तले क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चे का निर्माण करने तथा उसे मजबूत करने के काम में अपना–अपना महत्व है।

कम्युनिस्टों की एकता को पुनः स्थापित करने के लिए उन सभी विचारों के खिलाफ़ कठोर, गैर–समझौताकारी संघर्ष करते रहना होगा, जो श्रमजीवी वर्ग और क्रांति के उद्देश्य के लिए खतरनाक हैं। हमें दूसरी पार्टियों के कम्युनिस्टों के साथ चर्चा चलानी होगी, ठीक उसी प्रकार जैसे कि हम अपनी पार्टी के सदस्यों के बीच चलाते हैं। हमें उनके साथ

खुले रूप से और सभी विचारों को स्पष्ट करते हुए चर्चा करनी चाहिये, जैसा कि कम्युनिस्टों को शोभा देता है। हमें आन्दोलन में प्रचलित विचारों और कार्यों की गलत लाइनों की सिर्फ निंदा ही नहीं करनी चाहिए। हमें समझाना चाहिए कि ये मज़दूर वर्ग के उद्धार के लक्ष्य के लिए क्यों गलत और खतरनाक हैं। हमें इस संघर्ष को करते हुए पूरा भरोसा रखना चाहिये कि वे सभी जो क्रांति और कम्युनिज़्म चाहते हैं, वे अंत में, हिन्दोस्तानी मज़दूर वर्ग को अगुवाई देने वाली एक हिरावल पार्टी में एकजुट हो जायेंगे।

आने वाले वर्षों के लिये हमारी यह कार्ययोजना उसी कार्ययोजना की निरंतरता और अग्रिम प्रगति है, जिसे हम अब तक लागू करते आये हैं। यह मज़दूर वर्ग आंदोलन की प्रगति, हमारी पार्टी की ताक़त और क्षमता की प्रगति तथा विश्व क्रांति की लहर के भाटे से ज्वार में बदलने की हालतों की बढ़ती परिपक्वता के साथ कदम रखते हुये, हमारे काम को और ऊंचे स्तर तक ले जाने की कार्ययोजना है।

हमें एक विस्तृत नज़रिये के साथ काम करना होगा। हमें अपने लिये कठिन से कठिन लक्ष्य निर्धारित करने होंगे और अधिक से अधिक लोगों को अपनी राजनीति के इर्द–गिर्द लामबंध करके, उन्हें हासिल करने के लिये अपनी पूरी पहल शक्ति लगानी होगी। पहले की तरह, आगे भी, सभी पार्टी संगठनों के अंदर लोकतांत्रिक केन्द्रीयवादी कामकाज के तरीकों को मजबूत करना – यही हमारी सफलता की कुंजी होगी।

साथियों,

2017 का वर्ष 1857 के महान ग़दर का 160वां वर्ष है। 1857 के ग़दर ने उस प्रबल और अथक मांग उठाई थी कि हमें, हिन्दोस्तान के लोगों को, उसका सामूहिक मालिक बनना होगा।

2017 रूसी क्रांति की शताब्दी का वर्ष है। दुनिया में हुई उस ऐतिहासिक घटना का गंभीरता से अध्ययन करने और उससे उचित सबक सीखने की सख्त ज़रूरत है। रूस में श्रमजीवी क्रांति की जीत के लिए निर्णायक कारक श्रमजीवी वर्ग की हिरावल पार्टी, बोल्शेविक पार्टी की अगुवाई में मजदूरों, किसानों और सैनिकों की सोवियतों का निर्माण करना तथा उन्हें मजबूत करना था।

वर्तमान विश्व स्थिति बहुत खतरनाक है। साथ ही साथ, साम्राज्यवादी व्यवस्था के सभी प्रमुख अंतर्विरोध तीखे हो रहे हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि विश्व क्रांति की लहर भाटे से ज्वार में बदलने वाली है।

आइये, हम पार्टी का निर्माण करें और उसे मजबूत करें। हिन्दोस्तान के नव–निर्माण के क्रांतिकारी कार्यक्रम के इर्द–गिर्द सभी उत्पीड़ितों को लामबंध करके, राजनीतिक तौर पर एकजुट मज़दूर वर्ग को अगुवाई देते हुए, हिन्दोस्तानी कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता को पुनः स्थापित करें! आइये, आने वाले क्रांतिकारी उभार को अगुवाई देने के लिए

संगठित हों और हमारे देश में क्रांति की जीत को सुनिश्चित करें!

मज़दूर किसान की है यह मांग, हिन्दोस्तान का नव-निर्माण!

कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी लाल सलाम!

इंक़लाब ज़िंदाबाद!

सन्दर्भ

1. World Trade Statistical Review, World Trade Organization, 2016
विश्व व्यापर सांख्यिकीय समीक्षा, विश्व व्यापार संगठन, 2016

2. Susanne Kraatz and Denitza Dessimirova, "Unemployment and Poverty. Greece and Other (Post-) Programme Countries," Employment and Social Affairs, Policy Department A. Economy and Scientific Policy, European Parliament, 2016
सुसान क्रात्ज और देनित्जा देसिमिरोवा, "बेरोज़गारी और गरीबी, यूनान और दूसरे कार्यक्रम (पश्चात) देश", बेरोज़गारी और सामाजिक मामले, नीति विभाग ए, अर्थव्यवस्था और वैज्ञानिक नीति, यूरोपीय संसद, 2016

3. Keith Breene, World Economic Forum, 16 February, 2016
कीथ ब्रीन, विश्व आर्थिक मंच, 16 फरवरी, 2016

4. Shawn Donnan, Chris Giles, and Gabriel Wildeau, "IMF Issues Warning on Global Growth as China Exports Plunge (2016)," Financial Times, March 8, 2016
शॉन डोनन, क्रिस गाइल्स और गेब्रिएल विलड्यू, "चीन के निर्यातों के गिरने के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने वैश्विक संवर्धन पर चेतावनी जारी की (2016)", फाइनेंसियल टाइम्स, 8 मार्च, 2016

5. "Commodity Special Feature from World Economic Outlook," International Monetary Fund (IMF), 2016
"कमोडिटी स्पेशल फीचर फ्रॉम वर्ल्ड इकनोमिक फोरम", अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, 2016

6. "Impact of the Global Slowdown on India's Exports and Employment," United Nations Conference on Trade and Development (UNCTAD), 2013
"वैश्विक मंदी का हिन्दोस्तान के निर्यातों और बेरोज़गारी पर असर", यूनाइटेड नेशंस कांफ्रेंस ऑन ट्रेड एंड डेवलपमेंट (यू.एन.सी.टी.ए.डी.), 2013

7. Harsha Jethmalani, "Why Did Private Sector GDP Growth Fall to 5.7 per cent in the June Quarter?" Livemint, September 13, 2016
हर्षा जेठमलानी, "निजी क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद जून की तिमाही में 5.7 प्रतिशत तक क्यों गिरा?" लाइवमिन्ट, 13 सितम्बर, 2016

8. Manojit Saha, "Bank Deposit Growth Slowed to a Five-decade Low in FY16," The Hindu, April 17, 2016.
मनोजित साहा, "वित्त वर्ष 2016 में बैंकों में जमा किये गए धन की वृद्धि की गति पांच दशकों में सबसे कम क्यों हो गयी", द हिन्दू, 17 अप्रैल, 2016

9. "India's Merchandise Exports Fall for 17th Straight Month," The Times of India, May 13, 2016
"हिन्दोस्तान से वस्तुओं का निर्यात लगातार 17 महीनों से गिरता जा रहा है", द टाइम्स ऑफ इंडिया, 13 मई, 2016

10. "April-August Industrial Growth Worst+ in A Decade (2016)," Livemint, October 12, 2016
"अप्रैल–अगस्त का औद्योगिक संवर्धन एक दशक में सबसे कम (2016)", लाइवमिंट, 12 अक्तूबर, 2016

11. Richard Dobbs et al., "Poorer Than Their Parents? Flat or Falling Incomes in Advanced Economies," McKinsey Global Institute, 2016
रिचर्ड दोब्ब्स आदि, "अपने मां–बाप से ज्यादा गरीब? अगुवा अर्थव्यवस्थाओं में आमदनी स्थगित या गिरती हुयी", मक्किनसे ग्लोबल इंस्टिट्यूट, 2016

12. Christopher Tkaczyk, Stacy Jones, and Grace Donnelly, "Everything You Need to Know About the Global 500 In 6 Charts," Fortune, July 2016

क्रिस्टोफर कैक्जिक, स्टेसी जोंस और ग्रेस डोनेल्ली, "वैश्विक 500 के बारे में सब कुछ जो आपको जानना चाहिए 6 तालिकाओं में", फार्च्यून, जुलाई 2016

13. John Bellamy Foster, Robert W. McChesney, and R. Jamil Jonna, "Monopoly and Competition in Twenty-first+ Century Capitalism," Monthly Review 62, no. 11, April 2011
जॉन बेल्लामी फोस्टर, रोबर्ट डब्ल्यू. मक्चेंसी और आर. जामिल जोन्ना, "21वीं सदी के पूंजीवाद में इज़ारेदारी और स्पर्धा", मासिक समीक्षा 62, नंबर 11, अप्रैल 2011

14. Media Release, "Holcim and Lafarge Complete Merger and Create LafargeHolcim, A New Leader in the Building Materials Industry," LafargeHolcim, July 2015
मीडिया रिलीज़, "होलसिम और लाफार्ज का विलयन पूर्ण और लाफार्ज होलसिम की स्थापना, निर्माण सामग्रियों के उद्योग में एक नया नेता", लाफार्ज होलसिम, जुलाई 2015

15. Peter Edwards, "HeidelbergCement Acquires Italcementi. Global, Regional and National Changes," Global Cement Magazine, September 10, 2015
पीटर एडवर्ड्स, "हाईडलबर्ग सीमेंट ने इतालसिमेंटी का अधिग्रहण किया, वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय परिवर्तन", ग्लोबल सीमेंट मैगज़ीन, 10 सितम्बर, 2015

16. Meagan Parrish, "How the Dow-DuPont Merger Will Impact the Chemicals Industry", ChemInfo, March 29, 2016
मेगान पैरिश, "डाव–डू पोंट विलयन का रसायन उद्योग पर क्या असर पड़ेगा?", केमिन्फो, 29 मार्च, 2016

17. Michael Snyder "Too Big To Fail is Now Bigger than Ever", Activists Post, September 21, 2013

माइकल स्नाइडर, "फेल होने के लिए ज्यादा बड़ा अब पहले से कहीं ज्यादा बड़ा", एक्टिविस्ट्स पोस्ट, 21 सितम्बर, 2013

18. Jordan Weissmann, "How Wall Street Devoured Corporate America," The Atlantic, March 5, 2013
जॉर्डन वाइसमेन, "वाल स्ट्रीट ने कैसे कॉर्पोरेट अमरीका को खा लिया", द अटलांटिक, 5 मार्च, 2013

19. "China Has A Dominant Share of World Manufacturing," Manufacturers Alliance for Productivity and Innovation (MAPI), June 1, 2014
"विश्व के विनिर्माण में चीन का अधिकतम हिस्सा", मेनूफ़ेकचरर्स अलायन्स फॉर प्रोडक्टिविटी एंड इनोवेशन (एम.ए.पी.आई.), 1 जून, 2014

20. The Top Ten Steel Producing Countries in the World, World Atlas & Graphic Maps, April 2016
"दुनिया के दस सबसे अधिक इस्पात उत्पादक देश", विश्व एटलस और ग्राफ़िक मानचित्र, अप्रैल 2016

21. Richard Dobbs, Susan Lund, Jonathan Woetzel, and Mina Mutafchieva, "Debt and (not much) deleveraging", Report, Mckinsey Global Institute, February, 2015;
Ami Sedghi, "Global Debt Has Grown By $57 trillion in Seven Years Following the Financial Crisis," The Guardian, February 5, 2015
रिचर्ड डोब्स, सुसान लुंड, जोनाथन वेत्जेल और मीना मुताफ्चीवा, "ब्याज और ज्यादा लाभ नहीं", रिपोर्ट, मक्किन्से ग्लोबल इंस्टिट्यूट, फरवरी 2015; जॉन कारने, "बैंकों को बचाने की कीमत", सी.एन.बी.सी., 14 दिसम्बर, 2011; अमी सेदघी, "वित्त संकट के बाद सात वर्षों में विश्व का कर्ज़ा 57 ख़रब डॉलर से बढ़ गया है", द गार्डियन, 5 फरवरी, 2015

22. John Carney, "The size of the Bank Bailout: $29 Trillion" CNBC, December 2011

जॉन कारने, "बैंकों को बचाने की कीमत 29 खरब डॉलर", सी.एन.बी.सी., 14 दिसम्बर, 2011

23. Phillip Inman & Helena Smith, "Greek economy to shrink 25% by 2014", The Guardian, Sep 18, 2012
फिलिप इनमान और हेलेना स्मिथ, "यूनान की अर्थव्यवस्था 2014 तक 25 प्रतिशत घट जायेगी", द गार्डियन, 18 सितम्बर, 2012

24. Katie Allen and Larry Elliott, "Bank of England Cuts Interest Rates to 0.25 per cent and Expands QE," The Guardian, August 4, 2016
केटी एलेन और लैरी एलियट, "बैंक ऑफ इंग्लैंड ने ब्याज दर को 0.25 प्रतिशत तक घटाया और क्यू.ई. को बढ़ाया", द गार्डियन, 4 अगस्त, 2016

25. Japan Macro Advisors, Ministry of Health, Labour and Welfare. Published monthly by the MHLW;
"Now Is the Time to Step Up Reforms", Country Focus Japan's Economy, IMF, July 31, 2017
जापान मैक्रो एडवाइसर्स, स्वास्थ्य, श्रम और कल्याण मंत्रालय, एम.एच.एल. डब्ल्यू. द्वारा मासिक प्रकाशन;

शॉन डोनान और काना इनागाकी, "आई.एम.एफ. ने जापान को तेज़ी से सुधारों को लागू करने की चेतावनी दी", फाइनेंसियल टाइम्स, जुलाई 2015

26. Tim Worst+all, "China's Only 15 per cent of the Global Economy but Contributes 25–30% of Global Growth", Forbes, October 30, 2016;
"Share of exports in gross domestic product (GDP) from 2006 to 2016", The Statistics Portal
टिम वोर्स्टाल, "विश्व अर्थव्यवस्था में चीन का मात्र 15 प्रतिशत भाग है परन्तु वैश्विक संवर्धन में उसका योगदान 25–30 प्रतिशत है", फोर्ब्स, 30 अक्तूबर, 2016; "2006 से 2016 तक सकल घरेलू उत्पाद में निर्यातों का हिस्सा", द स्टेटिस्टिक्स पोर्टल

27. Ortiz, Burke, Berrada, Cortes, "World Protests, 2006-2013", Working Paper, FES, September 2013
ओरटीज़, बुर्के, बेराडा, कोर्ट्स, "विश्व में विरोध प्रदर्शन, 2006–2013", वर्किंग पेपर, एफ.ई.एस., सितंबर 2013

28 Sachin Mampatta, "Less bang for the buck", Mint, September 24, 2015
सचिन ममपत्ता, "रुपये का कम असर", मिंट, 24 सितंबर, 2015

29. Hudson Lockett, "China. Strikes and Protest Numbers Jump 20 per cent", Financial Times, July 14, 2016
हडसन लोकेट, "चीन में हड़तालों और विरोध प्रदर्शनों की संख्या 20 प्रतिशत बढ़ी", फाइनैंसियल टाइम्स, 14 जुलाई, 2016

30. Abeer Kapoor, "Agrarian Riots and Rural Distress. Is India's Countryside Burning?" The Wire, October 19, 2016
आबीर कपूर, "कृषि दंगे और ग्रामीण दुर्दशा : क्या हिन्दोस्तान के गांवों में आग लगी हुई है?" द वायर, 19 अक्तूबर, 2016

31. Aqazit Abate, "The New Land Grab in Africa - An Alarming Scramble for the Continent Is On", All Africa;
Ayodele F. Odusola, "Land Grab in Africa. A Review Of Emerging Issues and Implications for Policy Options", International Policy Centre for Inclusive Growth, United Nations Development Programme, April 2014
अकाज़ित अबाटे, "अफ्रीका में भूमि की लूट का नया दौर – महाद्वीप को हड़पने के लिये भयानक लड़ाई–भिड़ाई", ऑल अफ्रीका; अयोडेले एफ. ओडुसोला, "अफ्रीका में भूमि अधिग्रहण : नीतिगत विकल्पों के लिये उभरते हुये मुद्दों और उनके प्रभावों की समीक्षा", इंटरनेशनल पालिसी सेंटर फॉर इंकल्यूसिव ग्रोथ, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, अप्रैल 2014

32. "70% of Germans Oppose TTIP" RT, May 6, 2016

"70 प्रतिशत जरमन लोग टी.टी.आई.पी. का विरोध करते हैं", आर.टी., 6 मई, 2016

33. "China now home to four of five largest world banks", Asia Today International, August 4, 2015
"आज दुनिया के पांच सबसे बड़े बैंकों में से चार चीन में हैं", एशिया टुडे इंटरनेशनल, 4 अगस्त, 2015

34. Stockholm International Peace Research Institute (SIPRI), Year Book, 2016
स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टिट्यूट (सिप्री), इयर बुक, 2016

35. "US Military Spending vs. The World," National Priorities Project, April 2016
"अमरीका का सैनिक खर्च बनाम दुनिया", नेशनल प्रायोरिटीज़ प्रोजेक्ट, अप्रैल 2016

36. F. William Engdahl, "The CIA's Afghan Crusade. Opium Wars, bin Laden, and Mujahideen," in "The Lost Hegemon. Whom the Gods Would Destroy", Mine Books, 2016
विलियम एंगडाल, "सी.आई.ए. का अफगानी जिहाद : अफीम युद्ध, बिन लादेन और मुजाहिदीन", "खोया हुआ वर्चस्व : भगवान किसे नष्ट करना चाहेंगे", माइन बुक्स, 2016

37. F. William Engdahl, "Full Spectrum Dominance. Totalitarian Democracy in the New World Order", Third Millennium Press, 2009, 130–220
विलियम एंगडाल, "नई विश्व व्यवस्था में संपूर्ण वर्चस्व और सर्वसत्तात्मक लोकतंत्र", थर्ड मिलेनियम प्रेस, 2009, 130–220

38. Thierry Meyssan, "NED, The Legal Window of the CIA," Voltaire Network, August 16, 2016

थीएरी मेसान, "एन.इ.डी., सी.आई.ए. की वैधता वाली खिड़की", वोल्टेयर नेटवर्क, 16 अगस्त, 2016

39. Brandon Turbeville, "George Soros, NATO, US Color Revolution Machine Behind Unrest in Macedonia," Activist Post, May 21, 2015
ब्रेंडन टरबेविल, "जोर्ज सोरोस, नाटो, मैसिडोनिया में अशांति के पीछे अमरीका की बहुरंगी क्रांति मशीन", एक्टिविस्ट पोस्ट, 21 मई, 2015

40. Eva Golinger, "Colored Revolutions. A New Form of Regime Change, Made in the USA," Global Research, March 5, 2014
ईवा गोलिंगर, "बहुरंगी क्रांतियां : शासन परिवर्तन का एक नया रूप, अमरीका में निर्मित", ग्लोबल रिसर्च, 5 मार्च, 2014

41. Christopher L. Brennan, "Fall of the Arab Spring. From Revolution to Destruction," Global Research, February 2, 2016
क्रिस्टोफर एल. ब्रेनान, "अरब बसंत का पतन : क्रांति से विनाश तक", ग्लोबल रिसर्च, 2 फरवरी, 2016

42. Prableen Bajpai, "The World's Top 10 Economies", CFA (ICFAI), 2016
प्रभलीन बाजपई, "दुनिया की दस सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थायें", सी.एफ.ए. (आई.सी.एफ.ए.आई.), 2016

43. "100 Richest Indians", "Listing of 500 India's Largest Corporations", Forbes, April 2016
"100 सबसे अधिक अमीर हिन्दोस्तानी", "हिन्दोस्तान की 500 सबसे बड़ी कंपनियों की सूची", फोर्ब्स, अप्रैल 2016

44. Ministry of Agriculture, Government of India, "Highlights of Agriculture Census", Press Information Bureau, 2010-2011
कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, "कृषि जनगणना की सुर्खियां", प्रेस इंफॉरमेंशन ब्यूरो, 2010–2011

45. Harun. R. Khan, "Speech Delivered", Bombay Chamber of Commerce and Industry, March 2, 2012
हरूण आर. खान, "प्रस्तुत किया गया भाषण", बॉम्बे चेम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री, 2 मार्च, 2012

46. India Brand Equity Foundation, "Automobile Industry in India", Update, July, 2017
इंडिया ब्रैंड एक्विटी फाउंडेशन, "हिन्दोस्तान में ऑटोमोबील उद्योग", अपडेट, जुलाई, 2017

46. "Top Ten Largest Oil Refineries in the World", Hydrocarbons Technology, September 30, 2013
"दुनिया में दस सबसे बड़ी तेल शोधक कंपनियां", हाइड्रोकार्बस टेक्नॉलजी, 30 सितम्बर, 2013

48. Planning Commission, "Sector-wise contribution of GDP in India", Ministry of Statistics and Programme Implementation, March 2016
योजना आयोग, "हिन्दोस्तान में सकल घरेलू उत्पाद में अलग–अलग क्षेत्रों का योगदान", सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वन मंत्रालय, मार्च 2016

49. "Loss in Exports Lead to Job Losses", Assocham Study, September 18, 2016
"निर्यातों की क्षति की वजह से नौकरियों की क्षति", एसोचैम अध्ययन, 18 सितम्बर, 2016

50. Vivek Deshpande, "Agri-market reforms. The direct selling challenge", July 21, 2016
विवेक देशपांडे, "कृषि बाज़ार सुधार : प्रत्यक्ष बिक्री की चुनौती", 21 जुलाई, 2016

51. Victor Mallet, Financial Times, February 24, 2015
विक्टर मैलेट, फाइनेंसियल टाइम्स, 24 फरवरी, 2015

52. Abhishek Waghmare, "Global crude oil prices fall, but not fuel prices in India", February 2016.
अभिशेख वाघमारे, "विश्व में कच्चा तेल की कीमतें गिरीं परन्तु हिन्दोस्तान में ईंधन की कीमतें नहीं गिरीं", फरवरी, 2016

53. Social reproduction refers to the repeated production of the means of consumption, raw materials, machinery and tools that get used up and get replaced again and again. When viewed as a connected whole, every social process of production is at the same time a process of reproduction, as explained by Karl Marx in Capital, Volume I, Chapter XXIII
सामाजिक पुनरुत्पादन का मतलब है उपभोग के साधनों, कच्चे पदार्थों, मशीनरी और यंत्रों का बार–बार किया गया उत्पादन। इनका क्षय होता रहता है, इसलिये इनका बार–बार नये सिरे से उत्पादन करना पड़ता है। जब हम इसे अपनी जुड़ी हुई संपूर्णता में देखते हैं तो हम यह समझते हैं कि उत्पादन की हर सामाजिक प्रक्रिया, साथ–साथ पुनरुत्पादन की प्रक्रिया भी है, जैसा कि कार्ल मार्क्स ने पूंजी, ग्रंथ 1, अध्याय 13 में समझाया है।

अन्य प्रकाशन

ग़दरियों की पुकार, इंक़लाब (2017)
हिन्दोस्तान ग़दर पार्टी की कथा और हिन्दोस्तान के बदलाव के संघर्ष के लिये वर्तमान में इसका महत्व
हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध

नोटबंदी के असली इरादे और झूठे दावे (2017)
इस पुस्तिका में तथ्यों और गतिविधियों के विश्लेषण के ज़रिये पर्दाफाश किया गया है कि नोटबंदी के असली इरादे क्या हैं
हिन्दी, पंजाबी, तमिल व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध

यह चुनाव एक फरेब है! (2015)
हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के महासचिव, कामरेड लाल सिंह का मज़दूर एकता लहर के संपादक, कामरेड चन्द्रभान के साथ साक्षात्कार
हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध

घोषणा पत्र (2014)
हिन्दोस्तानी गणराज्य का नवनिर्माण करने और अर्थव्यस्था को नई दिशा दिलाने के कार्यक्रम के इर्द–गिर्द
हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध

भ्रष्टाचार, पूंजीवाद और हिन्दोस्तानी राज्य (2014)
हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के महासचिव, कामरेड लाल सिंह का, मज़दूर एकता लहर के संपादक, कामरेड चन्द्रभान के साथ साक्षात्कार
हिन्दी, पंजाबी, तमिल व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध

ग़दर जारी है... – हिन्दोस्तान ग़दर पार्टी का इतिहास (2013)
हिन्दोस्तान ग़दर पार्टी की अमरीका में स्थापना की शताब्दी के अवसर पर पार्टी की प्रस्तुति
हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध

कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के चौथे महाअधिवेशन के दस्तावेज़ (2011)
हिन्दी, पंजाबी, व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध

कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के तीसरे महाअधिवेशन के दस्तावेज़ (2005)
मजदूरों और किसानों की हुकूमत और स्वेच्छा पर आधारित हिन्दोस्तानी संघ की ओर
हिन्दी, पंजाबी, व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध

हम हैं इसके मालिक, हम हैं हिन्दोस्तान, मज़दूर, किसान, औरत और जवान (1998)
अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के लिए, लोगों को राजनीतिक सत्ता दिलाने के लिए और हिन्दोस्तान के लोकतांत्रिक नवीकरण के लिए तात्कालिक कार्यक्रम
हिन्दी, पंजाबी, मराठी, तमिल व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध

हिन्दोस्तान किस दिशा में? (1995)
हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के महासचिव कामरेड लाल सिंह द्वारा पार्टी की केन्द्रीय समिति की ओर से 23–24 दिसम्बर, 1995 को नई दिल्ली में हुए पार्टी के तीसरे सलाहकार सम्मेलन में पेश की गयी रिपोर्ट
हिन्दी, पंजाबी, तमिल व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध

किस प्रकार की पार्टी? (1993)
हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी की दूसरी राष्ट्रीय सलाहकार गोष्ठी, जो 29–30 दिसम्बर 1993 को की गयी थी, में अपनाया गया दस्तावेज़
हिन्दी, पंजाबी, मराठी, तामिल व अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध